

18-01-2002

## स्नेह की शक्ति द्वारा समर्थ बनो, सर्व आत्माओं को सुख-शान्ति की अंचली दो

आज समर्थ बाप अपने स्मृति स्वरूप, समर्थ स्वरूप बच्चों से मिलने के लिए आये हैं। आज विशेष चारों ओर के बच्चों में स्नेह की लहर लहरा रही है। विशेष ब्रह्मा बाप के स्नेह की यादों में समाये हुए हैं। यह स्नेह हर बच्चे के इस जीवन का वरदान है। परमात्म स्नेह ने ही आप सबको नई जीवन दी है। हर एक बच्चे को स्नेह की शक्ति ने ही बाप का बनाया। यह स्नेह की शक्ति सब सहज कर देती है। जब स्नेह में समा जाते हो तो कोई भी परिस्थिति सहज अनुभव करते हो। बापदादा भी कहते हैं कि सदा स्नेह के सागर में समाये रहो। स्नेह छत्रछाया है, जिस छत्रछाया के अन्दर कोई माया की परछाई भी नहीं पड़ सकती। सहज मायाजीत बन जाते हो। जो निरन्तर स्नेह में रहता है उसको किसी भी बात की मेहनत नहीं करनी पड़ती है। स्नेह सहज बाप समान बना देता है। स्नेह के पीछे कुछ भी समर्पित करना सहज होता है।

तो आज भी अमृतवेले से हर एक बच्चे ने स्नेह की माला बाप को डाली और बाप ने भी स्नेही बच्चों को स्नेह की माला डाली। जैसे इस विशेष स्मृति दिवस में अर्थात् स्नेह के दिन में स्नेह में समाये रहे ऐसे ही सदा समाये रहो, तो मेहनत का पुरुषार्थ करना नहीं पड़ेगा। एक है स्नेह के सागर में समाना और दूसरा है स्नेह के सागर में थोड़े समय के लिए डुबकी लगाना। तो कई बच्चे समाये हुए नहीं रहते हैं, जल्दी से बाहर निकल आते हैं। इसलिए सहज मुश्किल हो जाता है। तो समाना आता है? समाने में ही मजा है। ब्रह्मा बाप ने सदा बाप का स्नेह दिल में समाया, इसका यादगार कलकत्ता में दिखाया है।

अब बापदादा सभी बच्चों से यही चाहते हैं कि बाप के प्यार का सबूत समान बनने का दिखाओ। सदा संकल्प में समर्थ हो, अब व्यर्थ के समाप्ति समारोह मनाओ क्योंकि व्यर्थ समर्थ बनने नहीं देंगे और जब तक आप

निमित्त बने हुए बच्चे सदा समर्थ नहीं बने हैं तो विश्व की आत्माओं को समर्थी कैसे दिलायेंगे! सर्व आत्मायें शक्तियों से बिल्कुल खाली हो, शक्तियों की भिखारी बन चुकी हैं। ऐसे भिखारी आत्माओं को हे समर्थ आत्मायें, इस भिखारीपन से मुक्त करो। आत्मायें आप समर्थ आत्माओं को पुकार रही हैं - हे मुक्तिदाता के बच्चे मास्टर मुक्तिदाता, हमें मुक्ति दो। क्या यह आवाज आपके कानों में नहीं पड़ता? सुनने नहीं आता? अब तक अपने को ही मुक्त करने में बिजी हैं क्या? विश्व की आत्माओं को बेहद स्वरूप से मास्टर मुक्तिदाता बनने से स्वयं की छोटी-छोटी बातों से स्वतः ही मुक्त हो जायेंगे। अब समय है कि आत्माओं की पुकार सुनो। पुकार सुनने आती है या नहीं आती है? परेशान आत्माओं को सुख-शान्ति की अंचली दो। यही है ब्रह्मा बाप को फ़ालो करना।

आज विशेष ब्रह्मा बाप को याद ज़्यादा किया ना! ब्रह्मा बाप ने भी सभी बच्चों को स्मृति और समर्थी स्वरूप से याद किया। कई बच्चों ने ब्रह्मा बाप से रूहरूहान करते मीठा-मीठा उलहना भी दिया कि आप इतना जल्दी क्यों चले गये? और दूसरा उलहना दिया कि हम सब बच्चों से छुट्टी लेकर क्यों नहीं गये? तो ब्रह्मा बाप ने बोला कि मैंने भी शिव बाप से पूछा कि हमें अचानक क्यों बुला लिया? तो बाप ने बोला - अगर आपको कहते कि छुट्टी लेके आओ तो क्या आप बच्चों को छोड़ सकते थे, या बच्चे आपको छोड़ सकते थे? आप अर्जुन का तो यही यादगार है कि अन्त में नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप ही रहे हैं। तो ब्रह्मा बाप मुस्कराये और बोले कि यह तो कमाल थी जो बच्चों ने भी नहीं समझा कि जा रहे हैं और ब्रह्मा ने भी नहीं समझा जा रहा हूँ। सामने होते भी दोनों तरफ चुप रहे क्योंकि समय प्रमाण सन शोज़ फादर का पार्ट ड्रामा की नूंध थी, इसको कहते हैं वाह ड्रामा वाह! सेवा का परिवर्तन नूंधा हुआ था। ब्रह्मा बाप को बच्चों का बैकबोन बनना था। तो अव्यक्त रूप में फास्ट सेवा का पार्ट बजाना ही था।

विशेष आज डबल विदेशियों ने बहुत मीठे-मीठे उलहने दिये हैं। डबल

फारेनर्स ने उलहने दिये ? डबल फारेनर्स ने ब्रह्मा बाप को बोला सिर्फ दो तीन साल आप रुक जाते तो हम देख तो लेते । तो ब्रह्मा बाप ने हंसी में बोला, हंसी की - तो ड्रामा से बात करो, ड्रामा ने ऐसा क्यों किया ? लेकिन यह लास्ट सो फास्ट का एकजैम्पुल बनना ही था - चाहे भारत में, चाहे विदेश में । इसलिए अभी लास्ट सो फास्ट का प्रत्यक्ष सबूत दिखाओ । जैसे आज समर्थ दिवस मनाया, ऐसे ही अब हर दिन समर्थ दिवस हो । किसी भी प्रकार की हलचल न हो । जो ब्रह्मा बाप ने आज के दिन तीन शब्दों में शिक्षा दी, **(निराकारी, निर्विकारी और निरंहकारी)** इन तीन शब्दों के शिक्षा स्वरूप बनो । मनसा में निराकारी, वाचा में निरंहकारी, कर्मणा में निर्विकारी । सेकण्ड में साकार स्वरूप में आओ, सेकण्ड में निराकारी स्वरूप में स्थित हो जाओ । यह अभ्यास सारे दिन में बार-बार करो । ऐसे नहीं सिर्फ याद में बैठने के टाइम निराकारी स्टेज में स्थित रहो लेकिन बीच-बीच में समय निकाल इस देहभान से न्यारे निराकारी आत्मा स्वरूप में स्थित होने का अभ्यास करो । कोई भी कार्य करो, कार्य करते भी यह अभ्यास करो कि मैं निराकार आत्मा इस साकार कर्मेन्द्रियों के आधार से कर्म करा रही हूँ । निराकारी स्थिति करावनहार स्थिति है । कर्मेन्द्रियां करनहार हैं, आत्मा करावनहार है । तो निराकारी आत्म स्थिति से निराकारी बाप स्वतः ही याद आता है । जैसे बाप करावनहार है ऐसे मैं आत्मा भी करावनहार हूँ । इसलिए कर्म के बन्धन में बंधेंगे नहीं, न्यारे रहेंगे क्योंकि कर्म के बन्धन में फंसने से ही समस्यायें आती हैं । सारे दिन में चेक करो - करावनहार आत्मा बन कर्म करा रही हूँ ? अच्छा ! अभी मुक्ति दिलाने की मशीनरी तीव्र करो ।

अच्छा - इस बारी जो इस कल्प में इस बार आये हैं, वह हाथ उठाओ । तो नये-नये आने वाले बच्चों को बापदादा विशेष याद-प्यार दे रहे हैं कि समय पर बाप को पहचान बाप से वर्से के अधिकारी बन गये हैं । सदा अपने इस भाग्य को याद रखना कि हमने बाप को पहचान लिया ।

अच्छा - डबल फारेनर्स हाथ उठाओ । बहुत अच्छा । डबल फारेनर्स को बापदादा कहते हैं कि ब्रह्मा के संकल्प की पैदाइस हैं । एक हैं डायरेक्ट मुख द्वारा वंशावली और दूसरे हैं संकल्प द्वारा वंशावली । तो संकल्प शक्ति बड़ी

महान होती है। जैसे संकल्प शक्ति फास्ट है, ऐसे ही आपकी रचना डबल फारेनर्स फास्ट पुरुषार्थ और फास्ट प्रालब्ध अनुभव करने वाले हैं इसलिए सारे ब्राह्मण परिवार में डबल फारेनर्स डबल सिकीलधे हो। भारत के भाई-बहनों आपको देख करके खुश होते हैं, वाह डबल फारेनर्स वाह! डबल फारेनर्स को खुशी होती है ना? कितनी खुशी है? बहुत है? कोई ऐसी चीज़ ही नहीं है जिससे तुलना कर सकें। डबल फारेन में भी सुन रहे हैं, देख भी रहे हैं। अच्छा है, यह साइंस के साधन आपको बेहद की सेवा करने में बहुत साथ देंगे और सहज सेवा करायेंगे। आपकी स्थापना के कनेक्शन से ही यह साइंस की भी तीव्रगति हुई है।

अच्छा - सभी पाण्डव समर्थ हैं ना? कमजोर तो नहीं, सब समर्थ हैं? और शक्तियां, समान बाप? शक्ति सेना हो। शक्तियों की शक्ति मायाजीत बनाने वाली है। अच्छा।

आज विशेष शृंगार करने वाले भी आये हैं (कलकत्ता के भाई-बहनों फूल लेकर आये हैं, सब जगह फूलों से बहुत अच्छा शृंगार किया है) यह भी स्नेह की निशानी है। अच्छा है अपना स्नेह का सबूत दिया। अच्छा। टीचर्स हाथ उठाओ। हर ग्रुप में टीचर्स बहुत आती हैं। टीचर्स को चांस अच्छा मिल जाता है। सेवा का प्रत्यक्ष फल मिल जाता है। अच्छा है अभी अपने फीचर्स द्वारा सभी को फ्यूचर का साक्षात्कार कराओ। सुना, क्या करना है? अच्छा।

**मधुबन वाले हाथ उठाओ** – बहुत अच्छा। मधुबन वालों को चांस बहुत मिलते हैं। इसीलिए बापदादा कहते हैं मधुबन वाले हैं रूहानी चांसलर्स। चांसलर हो ना? सेवा करनी पड़ेगी। फिर भी सबको मधुबन निवासी राज़ी तो कर लेते हैं ना! इसीलिए बापदादा मधुबन वालों को कभी भूलते नहीं हैं। मधुबन निवासियों को खास याद करते हैं। मधुबन वालों को क्यों याद करते हैं? क्योंकि मधुबन वाले बाप के प्यार में मैजारिटी पास हैं। मैजारिटी, बाप से प्यार अटूट है। कम नहीं हैं मधुबन वाले, बहुत अच्छे हैं।

**इन्दौर ज़ोन के सेवाधारी आये हैं** - इन्दौर ज़ोन वाले हाथ उठाओ। बहुत

हैं, अच्छा है। सेवा करना अर्थात् समीप आने का फल खाना। सेवा का चांस लेना अर्थात् पुण्य जमा करना। दुआयें जमा करना। तो सभी सेवाधारियों ने अपना पुण्य का खाता जमा किया। यह दुआयें वा पुण्य एकस्ट्रा लिफ्ट का काम करती हैं।

अच्छा - देश वा विदेश जो दूर बैठे भी समीप हैं, सभी बच्चों को बापदादा स्नेह के दिवस के रिटर्न में पदमगुणा स्नेह का याद-प्यार दे रहे हैं। बापदादा देखते हैं कि कहाँ क्या बजता है, कहाँ क्या टाइम होता है लेकिन जागती ज्योति अथक बन सुन रहे हैं और खुश हो रहे हैं। बापदादा बच्चों की खुशी देख रहे हैं। बोलो, सभी खुशी में नाच रहे हो ना ? सभी कांध हिला रहे हैं, हाँ बाबा। जनक बच्ची भी बहुत मीठा-मीठा मुस्करा रही है। वैसे तो सब बाप को याद हैं लेकिन कितनों का नाम लें। अनेक बच्चे हैं इसलिए बापदादा कहते हैं हर एक बच्चा अपने नाम से पर्सनल याद-प्यार स्वीकार कर रहे हैं और करते रहना। अच्छा - अभी एक सेकण्ड में निराकारी स्थिति में स्थित हो जाओ। (बापदादा ने ड्रिल कराई)

**लिविंग वैल्यूज की ट्रेनिंग चल रही है:-** अच्छा सेवा का साधन है। लिविंग वैल्यू कराते-कराते अपनी लवली लिविंग का अभ्यास बढ़ाते रहना।

अच्छा - बापदादा आज एक बात गुलज़ार बच्ची को कह रहे थे, विशेष मुबारक दे रहे थे कि ब्रह्मा तन की सेवा जैसा इस रथ ने भी ३३ वर्ष पूरे किये। यह भी ड्रामा में पार्ट है। बाप की मदद और बच्ची की हिम्मत, दोनों मिलकर पार्ट बजाते हैं।

अच्छा - सर्व सदा स्नेह के सागर में समाये हुए, सदा लव में लीन रहने वाले, सदा करावनहार आत्मा स्वरूप में स्थित रहने वाले, सदा तीन शब्दों के “शिव-मंत्र” को प्रत्यक्ष जीवन में लाने वाले, सदा बाप के समान मास्टर मुक्तिदाता बन विश्व की आत्माओं को मुक्ति दिलाने वाले ऐसे सर्व श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

**दादी जी से**

आज के दिन बाप ने बच्चों को विशेष विश्व के सामने प्रत्यक्ष किया। बाप करावनहार बने और बच्चों को करनहार बनाया। अच्छा है, यह स्नेह की लहर सभी को समा देती है। अच्छा - शरीर को चलाने की विधि आ गई है ना! चलाते-चलाते बाप समान अव्यक्त बन जायेंगी। सहज पुरुषार्थ है - दुआयें। सारे दिन में कोई भी नाराज़ नहीं हो, दुआयें मिलें - यह है फर्स्ट क्लास पुरुषार्थ। सहज भी है, फर्स्ट भी है। ठीक है ना! शरीर कैसे भी हो लेकिन आत्मा तो शक्तिशाली है ना! तो जो आप सभी बच्चों ने १७ वर्ष तपस्या की, वह तपस्या का बल सेवा करा रहा है। अभी तो आपके बहुत साथी बन गये हैं। अच्छे-अच्छे सेवा के साथी हैं। बस आपको देखकर खुश होते हैं, यही बहुत है। ठीक है।

**(वरिष्ठ बड़े भाइयों से)** - ड्रामानुसार जो सेवा के प्लैन बनते हैं, वह अच्छे बन रहे हैं और हर एक सदा संगठन में स्नेह वा दुआयें लेने के लिए बालक सो मालिक का पाठ पक्का कर एक दो को आगे बढ़ाते हुए, एक दो के विचारों को भी सम्मान देते हुए आगे बढ़ते हैं तो सफलता ही सफलता है। सफलता तो होनी ही है। लेकिन अभी जो निमित्त आत्मायें हैं उन्हीं को विशेष स्नेह के सम्बन्ध में लाना; यह सबके पुरुषार्थ को तीव्र बनाना है। स्नेह, निःस्वार्थ स्नेह, जहाँ निःस्वार्थ स्नेह है वह सम्मान देंगे भी और लेंगे भी। वर्तमान समय स्नेह की माला में सबको पिरोना, यही विशेष आत्माओं का कार्य है और इससे ही, स्नेह संस्कारों को परिवर्तन भी करा सकता है। ज्ञान हर एक के पास है लेकिन स्नेह कैसे भी संस्कार वाले को समीप ला सकता है। सिर्फ स्नेह के दो शब्द सदा के लिए उनके जीवन का सहारा बन सकता है। निःस्वार्थ स्नेह जल्द से जल्द माला तैयार कर देगा। ब्रह्मा बाप ने क्या किया? स्नेह से अपना बनाया। तो आज इसकी आवश्यकता है। है ना ऐसे!

(सोनीपत के लिए मीटिंग हो रही है, वहाँ अनुभूति कराने के लिए साधनों का उपयोग कैसे करें) वह तो प्लैन बना रहे हैं, हर एक के संकल्प, विचारों को जो विशेष मैजारिटी स्वीकार करें, वह बनाओ। अनुभूति तब

करा सकेंगे जब अनुभूति स्वरूप बनेंगे। अच्छा।



03-02-2002

## लक्ष्य और लक्षण को समान बनाओ, सर्व खज़ानों में सम्पन्न बनो

आज सर्व खज़ानों के मालिक अपने खज़ानों से सम्पन्न बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चा सर्व खज़ानों से सम्पन्न है। जो सम्पन्न होता है उनकी निशानी सदा प्राप्ति स्वरूप, तृप्त आत्मा दिखाई देगी। सदा खुश नज़र आयेगी क्योंकि भरपूर है। तो हर एक अपने से पूछे कि हमारे पास कितने खजाने जमा हैं? यह अविनाशी खजाने अब भी प्राप्त हैं और भविष्य में अनेक जन्म साथ रहेंगे। यह खजाने खत्म नहीं होने वाले हैं। सबसे पहला खज़ाना है - ज्ञान का खज़ाना, जिस ज्ञान के खजाने से इस समय भी आप सभी मुक्ति और जीवनमुक्ति का अनुभव कर रहे हो। जीवन में रहते, पुरानी दुनिया में रहते, तमोगुणी वायुमण्डल में रहते ज्ञान के खजाने के आधार से इन सब वायुमण्डल, वायुब्रेशन से न्यारे मुक्त हो, कमल पुष्प समान न्यारे मुक्त आत्मायें दुःख से, चिंताओं से, अशान्ति से मुक्त हो। जीवन में रहते बुराइयों के बन्धनों से मुक्त हो। व्यर्थ संकल्पों के तूफान से मुक्त हो। हैं मुक्त? सभी हाथ हिला रहे हैं।

तो मुक्ति और जीवनमुक्ति इस ज्ञान के खजाने का फल है, प्राप्ति है। चाहे व्यर्थ संकल्प आने की कोशिश करते हैं, निगेटिव भी आते हैं लेकिन ज्ञान अर्थात् समझ है कि व्यर्थ संकल्प वा निगेटिव का काम है आना और आप ज्ञानी तू आत्माओं का काम है इनसे मुक्त, न्यारे और बाप के प्यारे रहना। तो चेक करो - ज्ञान का खज़ाना प्राप्त है? भरपूर है? सम्पन्न है या कम है? अगर कम है तो उसको जमा करो, खाली नहीं रहना।

ऐसे ही योग का खज़ाना - जिससे सर्व शक्तियों की प्राप्ति होती है। तो अपने को देखो योग के खजाने द्वारा सर्व शक्तियां जमा हैं? सर्व? एक भी शक्ति अगर कम होगी तो समय पर धोखा दे देगी। आप सबका टाइल -



मास्टर सर्वशक्तिवान है, शक्तिवान नहीं, सर्वशक्तिवान। तो सर्व शक्तियों का खज़ाना योगबल द्वारा जमा है? भरपूर है, प्राप्ति स्वरूप है वा कमी है? क्यों? अभी अपनी कमी को भर सकते हो। अभी चांस है। फिर सम्पन्न करने का समय समाप्त हो जायेगा तो कमी रह जायेगी। चेक करो - एक-एक शक्ति को सामने लाओ और सारे दिन की दिनचर्या में चेक करो - अगर परसेन्टेज़ भी कम है तो फुल पास नहीं कहेंगे क्योंकि आप सबका लक्ष्य है, किसी भी बच्चे से पूछते हैं कि फुल पास होना है या हाफ पास? तो सभी कहते हैं कि हम तो सूर्यवंशी बनेंगे, चन्द्रवंशी नहीं बनेंगे। चन्द्रवंशी बनेंगे? बापदादा बहुत अच्छा तख्त देंगे, बनेंगे चन्द्रवंशी? इण्डिया वाले सूर्यवंशी बन जाएं, फारेन वाले चन्द्रवंशी बन जाएं, बनेंगे? नहीं बनेंगे? सूर्यवंशी बनना है? बनना ही है। यह तो बापदादा चिटचैट कर रहे हैं। जब सूर्यवंशी बनना ही है, दृढ़ निश्चय है, बाप से और स्वयं से प्रतिज्ञा कर ली है तो अब से किसी भी शक्ति की परसेन्टेज़ कम नहीं हो। अगर कहेंगे सरकमस्टांश अनुसार, समस्याओं अनुसार परसेन्टेज़ कम रह गई तो ०४ कला बन जायेंगे। इसलिए आजकल बापदादा चारों ओर के सभी बच्चों का पोतामेल, रजिस्टर चेक कर रहा है। बापदादा के पास भी हर एक का रजिस्टर है क्योंकि समय के अनुसार पहले ही बापदादा बच्चों को सुना रहे हैं कि समय की रफ्तार अनुसार अभी कब नहीं कहो, अब। कब हो जायेगा, कर लेंगे...होना तो है ही.. यह नहीं सोचो। होना तो है नहीं, अभी-अभी करना ही है। समय की रफ्तार तीव्र हो रही है इसलिए जो लक्ष्य रखा है बाप समान बनने का, फुल पास होने का, ०६ कला सम्पन्न बनने का, तो बापदादा भी यही चाहते हैं कि लक्ष्य और प्रैक्टिकल में लक्षण समान हों। जब लक्ष्य और लक्षण दोनों समान होंगे तब ही बाप समान सहज बन जायेंगे। तो चेक करो - हो जायेगा, बन ही जायेंगे...यह अलबेलापन है। जो करना है, जो बनना है, जो लक्ष्य है, वह अभी से ही करना है, बनना है। कभी शब्द नहीं लगाओ, अभी-अभी।

तो ज्ञान का खज़ाना, योग का खज़ाना और भी धारणाओं का खज़ाना है। जिससे (धारणाओं से) गुणों का खज़ाना जमा हो जाता है। गुणों में भी जैसे सर्व शक्तियां हैं, ऐसे ही सर्वगुण हैं, सिर्फ गुण नहीं हैं, सर्वगुण हैं। तो सर्व गुण हैं या सोचते हो एक दो गुण कम हुआ, तो क्या हुआ, चलेगा? नहीं चलेगा। तो सर्व गुणों का खज़ाना जमा है? कौन से गुण की कमी है उसको चेक करके भरपूर हो जाओ।

चौथी बात है - सेवा। सेवा द्वारा सभी को अनुभव है, जब भी मनसा सेवा या वाणी द्वारा वा कर्म द्वारा भी सेवा करते हो तो उसकी प्राप्ति आत्मिक खुशी मिलती है। तो चेक करो सेवा द्वारा खुशी की अनुभूति कहाँ तक की है? अगर सेवा की और खुशी नहीं हुई, तो वह सेवा यथार्थ सेवा नहीं है। सेवा में कोई न कोई कमी है, इसलिए खुशी नहीं मिलती। सेवा का अर्थ है आत्मा अपने को खुशानुमः, खिला हुआ रूहानी गुलाब, खुशी के झूले में झूलने वाला अनुभव करेगी। तो चेक करो - सारा दिन सेवा की लेकिन सारे दिन की सेवा की तुलना में इतनी खुशी हुई या सोच-विचार ही चलते रहे, यह नहीं ये, यह नहीं ये...? और आपकी खुशी का प्रभाव एक तो सेवा स्थान पर, दूसरा सेवा साथियों पर, तीसरा जिन आत्माओं की सेवा की उन आत्माओं पर पड़े, वायुमण्डल भी खुश हो जाए। यह है सेवा का खज़ाना खुशी।

और बात - चार सबजेक्ट तो आ ही गईं। और है सम्बन्ध-सम्पर्क, वह भी बहुत ज़रूरी है, क्यों? कई बच्चे समझते हैं बापदादा से तो सम्बन्ध है ही। परिवार में हुआ नहीं हुआ, क्या बात है, (क्या हर्जा है) बीज से तो है ही। लेकिन आपको विश्व का राज्य करना है ना! तो राज्य में सम्बन्ध में आना ही होगा। इसलिए सम्बन्ध-सम्पर्क में आना ही है लेकिन सम्बन्ध-सम्पर्क में यथार्थ खज़ाना मिलता है दुआयें। बिना सम्बन्ध-सम्पर्क के आपके पास दुआओं का खज़ाना जमा नहीं होगा। माँ बाप की दुआयें तो हैं, लेकिन सम्बन्ध-सम्पर्क में भी दुआयें लेनी हैं। अगर दुआयें नहीं मिलती, फीलिंग

नहीं आती तो समझो सम्बन्ध-सम्पर्क में कोई कमी है। यथार्थ रीत अगर सम्बन्ध-सम्पर्क है तो दुआओं की अनुभूति होनी चाहिए। और दुआओं की अनुभूति क्या होगी? अनुभवी तो हो ना! अगर सेवा से दुआयें मिलती हैं तो दुआयें मिलने का अनुभव यही होगा जो स्वयं भी सम्बन्ध में आते, कार्य करते डबल लाइट (हल्का) होगा, बोझ नहीं महसूस करेगा और जिनकी सेवा की, सम्बन्ध-सम्पर्क में आये वह भी डबल लाइट फील करेगा। अनुभव करेगा कि यह सम्बन्ध में सदा हल्का अर्थात् इज़ी है, भारी नहीं रहेगा। सम्बन्ध में आऊं, नहीं आऊं... लेकिन दुआयें मिलने के कारण दोनों तरफ नियम प्रमाण, ऐसा इज़ी भी नहीं - जैसे कहावत है, ज्यादा मीठे पर चींटियाँ बहुत आती हैं। तो इतना इज़ी भी नहीं, लेकिन डबल लाइट रहेगा। तो बापदादा कहते हैं - अपने खजाने चेक करो। समय दे रहे हैं। अभी समाप्ति का बोर्ड नहीं लगा है। इसलिए चेक करो और बढ़ते चलो।

बापदादा का बच्चों से प्यार है ना! तो बापदादा समझते हैं कोई भी बच्चा पीछे नहीं रह जाए। हर एक बच्चा आगे से आगे जाए। चलते-चलते देह-अभिमान आ जाता है। स्वमान और देह-अभिमान। देह-अभिमान का कारण है स्वमान में कमी हो जाती है। तो देह-अभिमान को मिटाने का बहुत सहज साधन है - देह-अभिमान आने का एक ही अक्षर है, एक ही शब्द है, वह जानते भी हो। देह-अभिमान का एक शब्द कौन-सा है? (मैं) अच्छा तो कितना बारी मैं-मैं कहते हो? सारे दिन में कितने बारी “मैं” बोलते हो, कभी नोट किया है? अच्छा एक दिन नोट करना। बार-बार मैं शब्द तो आता ही है। लेकिन मैं कौन? पहला पाठ है, मैं कौन? जब देह-अभिमान में मैं कहते हो, लेकिन वास्तव में मैं हूँ कौन? आत्मा या देह? आत्मा ने देह धारण की, या देह ने आत्मा धारण की? क्या हुआ? आत्मा ने देह धारण की। ठीक है ना? तो आत्मा ने देह धारण की, तो मैं कौन? आत्मा ना! तो सहज साधन है, जब भी मैं शब्द बोलो, तो यह याद करो कि मैं कौन-सी आत्मा हूँ? आत्मा निराकार है, देह साकार है। निराकार आत्मा ने साकार देह धारण की,

तो जितना बारी भी मैं-मैं शब्द बोलते हो, उतना समय यह याद करो कि मैं निराकार आत्मा साकार में प्रवेश किया है। जब निराकार स्थिति याद होगी तो निरहकारी स्वतः हो जायेंगे। देह-भान खत्म हो जायेगा। वही पहला पाठ मैं कौन? यह स्मृति में रख करके मैं कौन-सी आत्मा हूँ, आत्मा याद आने से निराकारी स्थिति पक्की हो जायेगी। जहाँ निराकारी स्थिति होगी वहाँ निरहकारी, निर्विकारी हो ही जायेंगे। तो कल से नोट करना - जब मैं शब्द कहते हो तो क्या याद आता है? और जितना बारी मैं शब्द यूज करो उतना बारी निराकारी, निरहकारी, निर्विकारी स्वतः हो जायेंगे। अच्छा -

आज यूथ ग्रुप आया है। यूथ बहुत हैं। बापदादा यूथ ग्रुप को वरदान देते हैं कि सदा आबाद रहना। एक भी खज़ाना बरबाद नहीं करना, आबाद रहना, आबाद करना। लौकिक गुरु लोग आशीर्वाद देते हैं आयुश्चान भव और बापदादा कहते हैं शरीर की आयु तो जितनी है उतनी रहेगी इसीलिए शरीर की आयु के हिसाब से आयुश्चान भव का वरदान नहीं देते हैं लेकिन इस ब्राह्मण जीवन में सदा आयुश्चान भव। क्यों? ब्राह्मण सो देवता बनेंगे। तो आयुश्चान तो होंगे ना! यूथ की एक विशेषता होती है। आप यूथ अपनी विशेषता को जानते हो? क्या विशेषता होती है, जानते हो? क्या विशेषता है आपमें? (जो चाहे वह कर सकते हैं) अच्छा - कर सकते हो? अच्छी बात है, दुनिया के हिसाब से कहते हैं, यूथ जिद्दी बहुत होते हैं, जो सोचेंगे वह करके दिखायेंगे। वह लोग उल्टा कहते हैं लेकिन यहाँ ब्राह्मण यूथ जिद्दी नहीं हैं लेकिन अपनी प्रतिज्ञा पर पक्के रहने वाले हैं। हटने वाले नहीं हैं। ऐसे हो यूथ? हाथ उठाना तो बहुत सहज है। बापदादा खुश है हाथ उठाना, यह भी हिम्मत है ना। लेकिन रोज़ अमृतवेले बाप से की हुई प्रतिज्ञा कि हम इस ब्राह्मण जीवन की प्राप्ति से, सेवा से कभी भी संकल्प में भी हटेंगे नहीं। इस हिम्मत को, प्रतिज्ञा को रोज़ दोहराओ और बार-बार चेक करो कि हिम्मत जो रखी, संकल्प किया वह प्रैक्टिकल में हो रहा है?

गवर्मेन्ट तो कहती है, बस दो चार लाख बन जाएं तो भी ठीक है।

बापदादा कहते हैं - यह ब्राह्मण यूथ एक-एक लाख के समान हैं। इतने मजबूत हैं। हैं? देखो, ऐसे नहीं घर जाकर फिर लिख दो बाबा माया आ गई, संस्कार आ गया, समस्या आ गई। समस्याओं के समाधान स्वरूप बनो। समस्यायें तो आयेंगी लेकिन अपने से पूछो मैं कौन? समाधान स्वरूप हूँ या समस्या से हार खाने वाला हूँ? आप सबका टाइटल क्या है - विजयी रत्न या हार खाने वाले रत्न? विजयी रत्न हैं। ब्राह्मण जन्म होते ही बापदादा ने हर ब्राह्मण के मस्तक में विजय का तिलक अमर लगा दिया। तो अमरभव के वरदानी हो। अभी यह अपने से वायदा करो, ऐसे तो वायदा कहलायेंगे तो सब कर लेंगे लेकिन अपने मन में अपने से वायदा करो - कभी भी संस्कार के वश नहीं होंगे जो बाप के संस्कार वह मुझ ब्राह्मण आत्मा के संस्कार। जो द्वापर, कलियुग के संस्कार हैं वह मेरे संस्कार नहीं क्योंकि बाप के संस्कार नहीं हैं। यह तमोगुणी संस्कार ब्राह्मणों के संस्कार हैं? नहीं है ना! तो आप कौन हो? ब्राह्मण हो ना!

बापदादा को भी यूथ गुप पर नाज़ है। देखो, दादियों को भी यूथ पर नाज़ है। दादी को प्यार है ना यूथ से। एकस्ट्रा प्यार है। कुमार हैं सुकुमार। कुमार नहीं, सुकुमार हैं। एक-एक कुमार विश्व के कुमारों का परिवर्तन कर दिखाने वाले। अच्छा, कुमारों को काम दें? हिम्मत है? करना पड़ेगा। कुमारियां करेंगी?

तो काम दे रहे हैं ध्यान से सुनना। तो जो अगली सीज़न होगी, अगली सीज़न में कुमारों का ऐसे ही स्पेशल प्रोग्राम रखेंगे लेकिन.... लेकिन भी है। ज्यादा काम नहीं देते हैं एक-एक कुमार  $ND-ND$  कुमारों का, छोटा-सा हाथ का कंगन तैयार करके लाना। हाथ में कंगन पड़ता है ना। ब्रह्मा बाप को सदैव हाथ में फूलों का कंगन डालते हैं। तो एक-एक कुमार, कच्चे-कच्चे नहीं लाना, पक्के-पक्के लाना। तो मधुबन में तो आयें फिर घर जायें तो बदल जाएं! नहीं। ऐसे पक्के बनाकर लाना जो बापदादा देख-देख कहे वाह कुमार वाह! ऐसे तैयार हैं? करेंगे, ऐसे? थोड़ा सोचो। ऐसे ही हाथ नहीं उठा लो। करना पड़ेगा। बनाना पड़ेगा। डबल फारेनर्स भी करेंगे? डबल फारेनर्स में कुमार हाथ उठाओ। तो आप भी  $ND$  लायेंगे ना? फारेनर्स भी लायेंगे,

इण्डिया वाले भी लायेंगे। फिर जो फर्स्टक्लास क्वालिटी लायेंगे उसको इनाम देंगे। इनाम बढ़िया देंगे, घटिया नहीं देंगे। प्यार है ना कुमारों से। अगर गवर्मेन्ट को ज्यादा में ज्यादा कुमार पॉजिटिव कर्म करने वाले मिल जाएं तो गवर्मेन्ट कितना खुश होगी। अगर आप ००-०० कुमार लायेंगे तो सारा हाल कुमारों से भरेंगे फिर गवर्मेन्ट को बुलायेंगे, देखो यह कुमार। लेकिन लाने पड़ेंगे, बनाने पड़ेंगे। अगर अपनी स्थिति, लक्ष्य और लक्षण को समान रखेंगे तो सेवा में सफलता होगी या नहीं होगी - यह संकल्प भी नहीं उठ सकता। हुई पड़ी है। सिर्फ आपको निमित्त बनना पड़ेगा। यह प्रतिज्ञा सदा रिवाइज करते रहना। कमाल तो करनी ही है। अच्छा।

डबल विदेशी भी आये हैं। बापदादा कहते हैं कि डबल विदेशियों ने बापदादा का एक टाइटल प्रैक्टिकल में प्रत्यक्ष किया है, वह कौन-सा? (विश्व-कल्याणकारी) पहले जब स्थापना हुई तो भारत कल्याणकारी बने लेकिन जब से डबल फारेनर्स ब्राह्मण आत्मायें बने तो बाप का विश्व-कल्याणकारी टाइटल प्रैक्टिकल में प्रत्यक्ष हुआ। इसलिए बापदादा को डबल फारेनर्स के ऊपर भी विशेष नाज़ है। बापदादा ने देखा है कि डबल फारेनर्स को एक सेवा की धुन लगी हुई है, कोई भी कोना रह नहीं जाए।

(मुरली के बीच अचानक बापदादा के सामने दो कुमार स्टेज पर आ गये, जिन्हें हटाया गया)

अच्छा। अभी खेल में खेल देखा। अभी बापदादा कहते हैं साक्षी होकर खेल देखा, इन्जाय किया, अभी एक सेकण्ड में एकदम देह से न्यारे पावरफुल आत्मिक रूप में स्थित हो सकते हो? फुलस्टाप।

**(बापदादा ने बहुत पावरफुल ड्रिल कराई)**

अच्छा - यही अभ्यास हर समय बीच-बीच में करना चाहिए। अभी-अभी कार्य में आये, अभी-अभी कार्य से न्यारे, साकारी सो निराकारी स्थिति में स्थित हो जाएं। ऐसे ही यह भी एक अनुभव देखा, कोई समस्या भी आती है तो ऐसे ही एक सेकण्ड में साक्षी दृष्टा बन, समस्या को एक साइडसीन

समझ, तूफान को एक तोहफा समझ उसको पार करो। अभ्यास है ना? आगे चलकर तो ऐसे अभ्यास की बहुत आवश्यकता पड़ेगी। फुलस्टाप। क्वेश्चन मार्क नहीं, यह क्यों हुआ, यह कैसे हुआ? हो गया। फुलस्टाप और अपने फुल शक्तिशाली स्टेज पर स्थित हो जाओ। समस्या नीचे रह जायेगी, आप ऊंची स्टेज से समस्या को साइडसीन देखते रहेंगे। अच्छा।

जो दूर से दूर बैठे देख रहे हैं, चाहे भारत में चाहे फारेन में सुन भी रहे हैं, देख भी रहे हैं, उन सभी दूर बैठे दिल के समीप बच्चों को बापदादा पहले याद-प्यार दे रहे हैं क्योंकि बापदादा जानते हैं कोई का क्या टाइम होता है, कोई का क्या टाइम होता है, फिर भी रात को दिन बनाके, दिन को रात बनाकर बैठ रहे हैं। यह है बच्चों और बाप का प्यार और बीच में बापदादा विज्ञानी बच्चों को भी मुबारक देते हैं कि आप बच्चों के लिए यह साइंस के साधन निकाले हैं। इसीलिए उन बच्चों को भी बापदादा मुबारक दे रहे हैं। आपके लिए ही यह साधन १००० वर्ष के अन्दर-अन्दर निकले हैं। तो कमाल है ना साइंस वालों की, थैंक्स है ना! अच्छा।

चारों ओर के सर्व खज़ानों से सम्पन्न आत्माओं को, सदा हर समय प्राप्तियों से भरपूर, मुस्कराते हुए हर्षित रहने वाली आत्माओं को, सदा बाप से की हुई प्रतिज्ञा को जीवन में प्रत्यक्ष करने वाले ज्ञानी तू आत्मायें, योगी तू आत्मायें बच्चों को, सदा लक्ष्य और लक्षण को समान करने वाले बाप समान आत्माओं को, सदा हर समय सर्व खज़ानों का स्टॉक और स्टॉप लगाने वाले तीव्र पुरुषार्थी श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार, दिलाराम का दिल से याद-प्यार और नमस्ते।

**ईस्टर्न, तामिलनाडु के सेवाधारी आये हैं** – अच्छा जो सेवाधारी आये हैं वह हाथ उठाओ। बंगाल, बिहार, नेपाल, आसाम, उड़ीसा, तामिलनाडु....तामिलनाडु की (रोज़ी बहन) आ गई है (रोज़ी बहन की तबियत काफी समय से ठीक नहीं थी) देखो नया जीवन मिल गया है। मुबारक हो नये जीवन की। एक हाथ की ताली बजाओ।

तो सभी ने जो भी पाण्डव वा शक्तियां आई हैं, सेवा के निमित्त बनी हैं, उनको सेवा का प्रत्यक्ष फल खुशी तो मिल ही गई है। बापदादा कहते हैं यह बच्चों की होशियारी है, सहज पुरुषार्थ में दुआयें लेने के लिए पुण्य का खाता जमा करने का यह चांस बहुत अच्छा ले लेते हैं और जो जितना अथक सेवा करते हैं, उस अथक सेवाधारी का मनसा, वाचा, कर्मणा तीनों खाते में जमा होता है। इसलिए जमा करने की सभी सेवाधारियों को मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा। सभी पहुँच जाते हैं।

### दादी जी, दादी जानकी से

एक टर्न मिस किया। सेवा की तो मिस नहीं किया। बापदादा आप दोनों के जिम्मेवारी के ताज में सदा ही अमूल्य रत्न लगाते रहते हैं। जितना-जितना जिम्मेवारियां साकार रूप में बढ़ती जाती हैं, उतनी आप डबल लाइट बन पार्ट बजाती हो। बापदादा को विशेष खुशी है कि शक्तियों ने विजय का झण्डा अच्छा बुलन्द किया है। बाप तो गुप्त रहे, लेकिन बच्चों ने प्रत्यक्ष रूप में झण्डा लहराया है। (दादी जानकी कह रही हैं बाबा एक आश है, शान्तिधाम जाने के पहले सब भारत में इकट्ठे हों) हो जायेगा, वह भी कहाँ जायेंगे, होना ही है। अच्छा।

### डा.अब्दुल कलाम, डा.पिल्लई, डा.सेत्वामूर्ति भारत के साइंटिस्टों से

बापदादा आप सबका भाग्य देख हर्षित हो रहे हैं। आप आत्माओं द्वारा भी विशेष सेवा होनी है। कौन-सी सेवा करेंगे? (३D परसेन्ट लोग गरीब हैं, उसको दूर करने का संकल्प आ रहा है) हो जायेगी। आपका जो संकल्प है वह अभी समय आने वाला ही है, यह गरीबी रहनी ही नहीं है। जैसे भारत सबसे साहूकार था, वैसे ही अभी बनना ही है। तो आपका यह संकल्प पूरा होना है। अच्छा संकल्प है। कोई आत्मा सम्पर्क में आये तो आप सिर्फ मैसेन्जर बन यही मैसेज दो कि साइलेन्स और साइंस दोनों का बैलेन्स कैसे



रहे, यह परमात्मा की ब्लैसिंग दिला देंगे। अभी यही मैसेज देना है। बापदादा को खुशी है, तो आप चाहते हो कि बच्चों में उन्नति हो, बच्चे योग्य बनें, उसका प्लैन भी यहाँ बना रहे हैं। एज्युकेशन डिपार्टमेंट में धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे हैं तो आप भी सहयोगी बन जायेंगे और यह सब बच्चे सहयोगी रहेंगे तो एक दिन आयेगा जो आप कहेंगे वाह भारत वाह! भारत की आध्यात्मिक नॉलेज सभी को सुख-शान्ति का वरदान देगी। (साइंस और साइलेन्स का बैलेन्स भारत को स्वर्णिम बनायेगा) फालो ब्रह्मा बाबा। आपमें एक विशेषता है, उस विशेषता को काम में ले सकते हो, आपकी विशेषता नेचुरल यह है कि जो काम करते हो, वह पूरा करते हो, अधूरा नहीं छोड़ते। इसीलिए इस विशेषता से आपका संकल्प पूरा हो जायेगा। यह दोनों साथी भी बहुत अच्छे हैं। त्रिमूर्ति हो गये ना! तो जहाँ त्रिमूर्ति है वहाँ शिव बाबा है ही है। (यह भी कुमार हैं) ब्रह्मचारी भी है, ब्रह्माचारी भी है। (भ्राता सेल्वामूर्ति जी से) अच्छा है, यह हेल्थ का कर रहे हैं। हेल्थ में भी देखो सभी का दुःख दूर होता है ना! तो सबका दुःख दूर करना, यह भी कितना अच्छा कार्य है। इसीलिए हेल्थ वालों को नेक्स्ट गॉड कहा जाता है। इसलिए अच्छा है। हेल्थ के साथ, ज्ञान की वेल्थ भी मिल जायेगी आत्माओं को। अच्छी - निमित्त आत्मायें हो।

(डा. पिल्लई को पदम श्री का टाइटल मिला है और डा. अब्दुल कलाम जी को भारत रत्न का मिला है)

बाप तो पदमा, पदमा, पदमापति का टाइटल देते हैं। इनको भारत रत्न का टाइटल मिला है इसलिए भारत से प्यार है। अच्छा - अभी माइक बनेंगे। रूहानी माइक बनकर सेवा करेंगे।

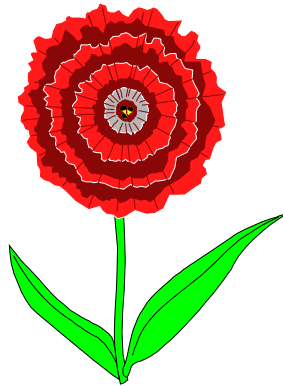
**आशा बहन से** – अच्छा चल रहा है ना। सभी की दुआयें हैं। दुआयें ऐसी चीज़ हैं जो हर कार्य सहज कर देती हैं। अच्छा है।

**रोज़ी बहन से** – कितना अच्छा पार्ट आपका ड्रामा में है। यह भी हिसाब पूरा हुआ। जो हिसाब रहा हुआ था, वह पूरा किया। खुशी-खुशी से पूरा किया। यह हिसाब तो होता ही है सेवा के लिए। जो सेवाधारी हैं ना वह कहाँ

भी जायेंगे सेवा के बिना तो रह नहीं सकते और वह सेवा का फल दुआयें मिलती हैं। अच्छा है। (साथ में डा. भी आये हैं) बहुत अच्छा किया। ब्राह्मण आत्माओं की सेवा करने से दुआयें हैं। खुशी-खुशी से सेवा की, इसलिए सेवा का जमा हो गया।

**मद्रास की टीचर्स से** – यह सेवा सम्भाल रही हैं। अच्छा है, सेवा का चांस मिलना यह भी भाग्य की निशानी है तो सब भाग्यवान हो।

**विदेश की बड़ी बहनों से** – बापदादा को विशेष खुशी होती है कि हर एक अपना-अपना अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। हर एक अपना-अपना पार्ट बजाते स्वयं को भी आगे बढ़ा रहे हैं और सेवा को भी आगे बढ़ा रहे हैं। ड्रामानुसार निमित्त बने। अभी आगे भी प्लैन बनायेंगे ना! क्या करना है। कोई नवीनता करेंगे ना! अच्छा। बापदादा खुश है।



24-02-2002

## बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए अपनी व दूसरों की वृत्ति को पॉजिटिव बनाओ

आज विश्व कल्याणी बापदादा अपने चारों ओर के बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। हर एक बच्चे के मन के उमंग देख भी रहे हैं और सुन भी रहे हैं। सभी के मन में लक्ष्य एक ही है कि जल्दी से जल्दी बाप समान बनें। लक्ष्य को देख, हिम्मत को देख, श्रेष्ठ संकल्प को देख बापदादा खुश हैं। साथ-साथ यह भी देख रहे हैं कि लक्ष्य सबका बहुत ऊँचे ते ऊंचा है लेकिन प्रत्यक्ष रूप में लक्षण नम्बरवार हैं। लक्ष्य और लक्षण समान होना अर्थात् बाप समान बनना। जो सेवा की स्टेज पर निमित्त बच्चे हैं, वह सदा एक ही संकल्प में रहते कि बाप को प्रत्यक्ष कैसे करें, कब होगा! ऐसे संकल्प चलता है ना? बाप फिर बच्चों से पूछते हैं, कि बच्चे आप सभी सम्पन्न, सम्पूर्ण स्वरूप में स्वयं कब प्रत्यक्ष होंगे? बाप का क्वेश्चन है बच्चों प्रति कि वह डेट भी फिक्स की है? कि वह डेट फिक्स नहीं होनी है?

डबल फारेनर्स कहते हैं कोई भी प्रोग्राम की डेट एक साल पहले फिक्स किया जाता है, ऐसे कहते हैं ना! तो बाप कहते हैं स्वयं को प्रत्यक्ष करने की डेट फिक्स की है? मीटिंग्स तो बहुत की हैं ना! करते ही रहते हैं। आज फलानी मीटिंग है, कल फलानी। अभी भी कितने मीटिंग वाले आये हैं, तीन मीटिंग वाले आज भी बैठे हैं। यह तो बहुत अच्छा, लेकिन इस मीटिंग की डेट कौन-सी है? जो सोचें वही बोल हो, वही कर्म हो। संकल्प, बोल और कर्म तीनों श्रेष्ठ लक्ष्य प्रमाण हो। बापदादा देखते हैं कि यह सर्व विश्व कल्याण के निमित्त बने हुए बच्चे, सर्व आत्माओं के कल्याणकारी प्रत्यक्ष रूप में स्टेज पर कब आयेंगे? हर एक गुप्त पुरुषार्थ में हैं, लगन में हैं, यह भी बापदादा देखते हैं। लेकिन इस विशेष संकल्प की लगन में मगन कब होंगे? लगन तो

है लेकिन निरन्तर इस संकल्प को सम्पन्न करने में मगन रहना अर्थात् निरन्तर इसी संकल्प को पूर्ण करने के प्रैक्टिकल स्वरूप में हो। अभी संकल्प और प्रत्यक्ष कर्म में अन्तर है। होना तो है ही और करना भी बच्चों को ही है। बाप तो बैकबोन है ही।

तो बापदादा देख रहे थे कि सबसे तीव्रगति की सेवा है - “वृत्ति द्वारा वायब्रेशन फैलाना”। वृत्ति बहुत तीव्र राकेट से भी तेज है। वृत्ति द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन कर सकते हो। जहाँ चाहो, जितनी आत्माओं के प्रति चाहो वृत्ति द्वारा यहाँ बैठे-बैठे पहुँच सकते हो। वृत्ति द्वारा दृष्टि और सृष्टि परिवर्तन कर सकते हो। लेकिन एक बात वृत्ति द्वारा सेवा करने में रुकावट डाल रही है, वृत्ति द्वारा वायब्रेशन फैलता है। आपके जड़ चित्र अब तक, लास्ट जन्म तक वायब्रेशन द्वारा सेवा कर रहे हैं ना! देखा है ना! मन्दिर देखे हैं ना! डबल फारेनर्स ने मन्दिर देखे हैं? नहीं देखे हों तो देख लेना क्योंकि आपके ही मन्दिर हैं ना! कुमारियां आपके मन्दिर हैं या इन्डिया वालों के मन्दिर हैं? सभी के मन्दिर हैं, अच्छा। मुबारक हो। मन्दिर की मूर्तियां प्रत्यक्ष रूप में वायब्रेशन द्वारा सेवा कर रहे हैं अर्थात् आप आत्मायें मन्दिर की मूर्तियां सेवा कर रही हैं। कितने भक्त वायब्रेशन द्वारा अपनी सर्व इच्छायें पूर्ण कर रहे हैं। तो हे चैतन्य मूर्तियां, अब अपने शुभ भावना की वृत्ति, शुभ कामनाओं की वृत्ति से वायुमण्डल में वायब्रेशन फैलाओ। लेकिन, लेकिन कहना अच्छा नहीं लगता लेकिन कहना पड़ता है। पाण्डव लेकिन शब्द अच्छा लगता है? नहीं अच्छा लगता। लेकिन, लेकिन है या खत्म हो गया? इसके लिए सबसे सहज विधि है पहले हर एक अपने अन्दर चेक करो - एक सेकण्ड में चेक कर सकते हो। अभी-अभी करो। सेकण्ड देवें क्या? कि बोलने में सेकण्ड मिल गया। अभी अपने अन्दर चेक करो - मेरी वृत्ति में किसी आत्मा के प्रति भी कोई निगेटिव वायब्रेशन है? अगर विश्व का वायुमण्डल परिवर्तन करना है, लेकिन अपने मन में किसी एक आत्मा के प्रति भी अगर व्यर्थ वायब्रेशन वा सच्चा वायब्रेशन भी निगेटिव है तो वह

विश्व परिवर्तन कर नहीं सकेगा। बाधा पड़ता रहेगा, समय लग जायेगा। वायुमण्डल में पावर नहीं आयेगी। कई बच्चे कहते हैं वह है ही ऐसा ना! है ही ना! तो वायब्रेशन तो होगा ना! बाप को भी ज्ञान देते हैं, बाबा आपको पता नहीं है, वह आत्मा है ही ऐसी। लेकिन बाप पूछते हैं कि वह खराब है, रांग है, होना नहीं चाहिए लेकिन खराब को अपने वृत्ति में रखो, क्या यह बाप की छुट्टी है? जो समझते हैं यह बाप की छुट्टी नहीं है, वह एक हाथ उठाना। टी.वी. में दिखाओ। (दादी को) आप देख रही हो ना! अच्छा। याद रखना हाथ उठाया था। डबल फारेनर्स ने हाथ उठाया! बापदादा की टी.वी. में तो आ ही रहा है। जब तक हर ब्राह्मण आत्मा के स्वयं की वृत्ति में कैसी भी आत्मा के प्रति वायब्रेशन निगेटिव है तो विश्व कल्याण प्रति वृत्ति से वायुमण्डल में वायब्रेशन फैला नहीं सकेंगे। यह पक्का समझ लो। कितनी भी सेवा कर लो, रोज़ आठ-आठ भाषण कर लो, योग शिविर करा लो, कई प्रकार के कोर्स करा लो लेकिन किसी के प्रति भी अपनी वृत्ति में कोई पुराना निगेटिव वायब्रेशन नहीं रखो। अच्छा वह खराब है, बहुत गलतियां करता है, बहुतों को दुःख देता है, तो क्या आप उसके दुःख देने में जिम्मेवार बनने के बजाए, उसको परिवर्तन करने में मददगार नहीं बन सकते! दुःख में मदद नहीं करना है, उसको परिवर्तन करने में आप मददगार बनो। अगर कोई ऐसी भी आत्मा है जो आप समझते हैं, बदलना नहीं है। चलो, आपकी जजमेंट में वह बदलने वाली नहीं है, लेकिन नम्बरवार तो हैं ना! तो आप क्यों सोचते हो यह तो बदलने वाली है ही नहीं। आप क्यों जजमेंट देते हो, वह तो बाप जज है ना। आप सब एक दो के जज बन गये हो। बाप भी तो देख रहा है, यह ऐसे हैं, यह ऐसे हैं, यह ऐसे हैं....। ब्रह्मा बाप को प्रत्यक्ष में देखा कैसी भी बार-बार गलती करने वाली आत्मा रही लेकिन बापदादा (विशेष साकार रूप में ब्रह्मा बाप) ने सर्व बच्चों प्रति याद-प्यार देते, सर्व बच्चों को मीठे-मीठे कहा। दो चार कडुवे और बाकी मीठे...क्या ऐसे कहा? फिर भी ऐसी आत्माओं के प्रति भी सदा रहमदिल बने। क्षमा के सागर बने। लेकिन अच्छा आपने

अपनी वृत्ति में किसी के प्रति भी अगर निगेटिव भाव रखा, तो इससे आपको क्या फायदा है? अगर आपको इसमें फायदा है, फिर तो भले रखो, छुट्टी है। अगर फायदा नहीं है, परेशानी होती है..., वह बात सामने आयेगी। बापदादा देखते हैं, उस समय उसको आइना दिखाना चाहिए। तो जिस बात में अपना कोई फायदा नहीं है, नॉलेजफुल बनना अलग चीज़ है, नॉलेज है - यह रांग है, यह राइट है। नॉलेजफुल बनना रांग नहीं है, लेकिन वृत्ति में धारण करना यह रांग है क्योंकि अपने में ही मूड आफ, व्यर्थ संकल्प, याद की पावर कम, नुकसान होता है। जब प्रकृति को भी आप पावन बनाने वाले हो तो यह तो आत्मायें हैं। वृत्ति, वायब्रेशन और वायुमण्डल तीनों का सम्बन्ध है। वृत्ति से वायब्रेशन होते हैं, वायब्रेशन से वायुमण्डल बनता है। लेकिन मूल है वृत्ति। अगर आप समझते हो कि जल्दी-जल्दी बाप की प्रत्यक्षता हो तो तीव्रगति का प्रयत्न है सब अपनी वृत्ति को अपने लिए, दूसरों के लिए पॉजिटिव धारण करो। नॉलेजफुल भले बनो लेकिन अपने मन में निगेटिव धारण नहीं करो। निगेटिव का अर्थ है किचड़ा। अभी-अभी वृत्ति पावरफुल करो, वायब्रेशन पावरफुल बनाओ, वायुमण्डल पावरफुल बनाओ क्योंकि सभी ने अनुभव कर लिया है, वाणी से परिवर्तन, शिक्षा से परिवर्तन बहुत धीमी गति से होता है, होता है लेकिन बहुत धीमी गति से। अगर आप फास्ट गति चाहते हो तो नॉलेजफुल बन, क्षमा स्वरूप बन, रहमदिल बन, शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करो। देखो, प्रत्यक्ष देखा है आप सबने, मधुबन में जो भी आते हैं, सबसे ज्यादा प्रभाव किस बात का पड़ता है? वायुमण्डल का। यहाँ भी चाहे सभी नम्बरवार हैं लेकिन ब्रह्मा बाप की कर्मभूमि है, बापदादा की वरदान भूमि है, वह वायुमण्डल परिवर्तन कर देता है। अनुभव है ना! तो वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल बनाना, यह है तीव्रगति का दिल का छाप। वायुमण्डल दिल में छप जाता है। सुनी हुई बातें भूल सकती हैं लेकिन वायुमण्डल का दिल पर छाप लग जाता है, वह भूल नहीं सकता। ऐसे है? तो बापदादा सुनते रहते हैं, प्रत्यक्षता कब होगी, आपस में रूहुरूहान तो अच्छी करते हो। अच्छा है। बोलो, पाण्डव अभी क्या करेंगे? वायुमण्डल पावरफुल बनाना। चाहे सेवाकेन्द्र हैं, चाहे जो भी स्थान हैं,

प्रवृत्ति में हो तो भी वायुमण्डल पावरफुल। चारों ओर का वायुमण्डल अगर सम्पूर्ण निर्विघ्न, रहमदिल, शुभ भावना, शुभ कामना वाला बन जायेगा तो प्रत्यक्षता में कोई देरी नहीं।

अभी बापदादा ने जो डेट दी, वह बापदादा को याद है। हिसाब तो पूछेंगे ना! हर एक ने अपना एकाउन्ट तो रखा है ना! तो एकाउन्ट में बापदादा यही चेक करेंगे - वृत्ति में, दृष्टि में, बोल में रहमदिल, शुभ भावना और शुभ कामना वाली आत्मा कितने परसेन्ट में रही? अभी भी १०० दिन तो होंगे ना! ज्यादा हैं। अच्छा, जिसने नहीं भी किया हो तो १०० दिन भी कर लेना, तो भी पास कर लेंगे। बीती को बिन्दी लगाना और रहम के सिन्धु बन जाना। क्षमा के सिन्धु बन जाना।

### (बापदादा ने ड्रिल कराई)

सुना सभी ने! अच्छा। तीन मीटिंग वाले जो आये हैं, स्पार्क वाले एक हाथ उठाओ। अच्छा। बहुत अच्छा। अभी इसी विषय पर रिसर्च करो, वायुमण्डल कैसे प्रैक्टिकल में श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बना सकते हैं! रिसर्च कर रहे हो ना! ऐसा वायुमण्डल बनाने के लिए क्या-क्या बुद्धि में रखना है, क्या-क्या कर्म में करना है, सम्बन्ध-सम्पर्क में करना है। अच्छा है अपने आपको बिजी रखते हो, अच्छी बात है। लेकिन बापदादा यह प्रैक्टिकल अनुभव देखने चाहते हैं कि कैसे प्रैक्टिकल किया और उसका परिणाम क्या निकला? अगर बीच में कुछ भी रुकावट आई तो क्या आई? यह अनुभव प्रैक्टिकल करके देखो, सिर्फ प्वाइंट्स नहीं निकालना, यह करना है, यह करना है। नहीं। करो। अनुभव करके एकजैम्पुल बनकर दिखाओ और वह एकजैम्पुल औरों को भी सहयोग देगा। ठीक है ना! यह (रमेश भाई) निमित्त है ना! अच्छा है। अभी भी १०० दिन पड़ा है, अभी लास्ट नहीं हुआ है। अभी बहुत गया, लेकिन थोड़ा रहा है तो स्पार्क वाले ऐसा प्रैक्टिकल करके देखो और औरों को दिखाओ। ठीक है? कर सकेंगे? हो सकेगा? अच्छा, ठीक है, बहुत अच्छा। अच्छा।

**दूसरी मीटिंग है ट्रांसपोर्ट की** – ट्रांसपोर्ट वाले तो सबको सुख देंगे। ट्रांसपोर्ट वाले हाथ उठाओ। अच्छा। बहनें, बहनों के बिना तो गति नहीं है। तो ट्रांसपोर्ट वाले क्या करेंगे? सिर्फ यात्रा करायेंगे? ट्रांसपोर्ट वाले ऐसे आपस में प्रोग्राम बनाओ जो किसी भी आत्मा को कम से कम समय में दुःख की दुनिया से पार करके थोड़े समय के लिए भी शान्ति की यात्रा करा सको। चलो, परमधाम तक तो पहुँचना मुश्किल है लेकिन दुःख के दुनिया की शान्ति की यात्रा तो कर सकते हैं। वह प्लैन तो बहुत बनाओ, चारों प्रकार की यात्राओं वालों को बापदादा का सन्देश तो पहुँचा रहे हो, पहुँचायेंगे ही; क्योंकि कोई भी वर्ग रह नहीं जाये ना। यह अच्छा है जो वर्गों की इन्वेन्शन निकाली है, यह अच्छी है, उलहना नहीं मिलेगा। कोई भी वर्ग रह नहीं जायेगा, हर एक अपने वर्ग को आगे बढ़ाने का उमंग तो रखते हैं ना! यह बहुत अच्छा है। लेकिन अभी जो भी वर्ग बने हैं, कितने समय से वर्ग चल रहे हैं, डेढ़ दो साल हो गये या ज्यादा हो गये? (१०-११ साल) वर्गों की सेवा को १०-११ साल हो गये, अच्छा। बहुत टाइम हो गया है। वर्ग वालों के लिए बापदादा का एक संकल्प है। बापदादा ने १-२ बार कहा है लेकिन हुआ नहीं है कि हर वर्ग ने जो भी जितने समय में भी सेवा की है, उस एक-एक वर्ग के विशेष सर्विसएबुल चाहे सहयोगी हैं, चाहे हाफ योगी हैं, कभी-कभी आते हैं, रेग्युलर नहीं है, ऐसे कोई हर वर्ग वाले कम से कम ३ तो सब वर्ग के सामने आने चाहिए। मधुबन में वह सभी देखें कि वर्ग वालों ने, चाहे १०-११ हों लेकिन ३ तो लाओ पक्के, अच्छे सहयोगी, सेवा के निमित्त बनने वाले ३-३ तो निकल सकते हैं या नहीं! निकल सकते हैं तो लाओ। (कब लायें?) वह दादियों के ऊपर हैं। (बापदादा के प्रोग्राम में लायें?) वह फिर ऐसे बापदादा से मिलने के लायक हों, ३ तो निकल ही सकते हैं। ज्यादा नहीं कहते, ३ बस। तो यह दादियां पास करेंगी।

**तीसरी मीटिंग - इन्जीनियर्स की है**, बहुत अच्छा। इन्जीनियर्स का तो काम ही है प्लैन बनाना। तो तीव्र पुरुषार्थ का कोई प्लैन बनाया कि सिर्फ



सेवा का बनाया ? इन्जीनियर्स को हर मास तीव्र पुरुषार्थ का कोई नया-नया प्लैन बनाना चाहिए। राय देनी चाहिए फिर फाइनल तो दादियां करेंगी। दादियां आपके साथी हैं, लेकिन इन्जीनियर्स और साइंस, विज्ञान वालों को ऐसा कोई प्लैन बनाना चाहिए जो जल्दी-जल्दी नई दुनिया आ जाए। बस यही मीटिंग करते रहेंगे, प्लैन बनाते रहेंगे, कब तक ? कोई तीव्रगति के प्लैन बनाओ क्योंकि लक्ष्य तो आपके वर्ग का यही है कि ऐसे प्लैन बनें जो अपना राज्य जल्दी से जल्दी आये। तो ऐसा भी प्लैन बनाओ और सेवा में भी थोड़े समय में ज्यादा सफलता प्रत्यक्ष दिखाई दे, ऐसे प्लैन बनाओ। ऐसे प्लैन बनायेंगे ना! लास्ट टर्न में सब रिपोर्ट सुनेंगे कि हर एक वर्ग ने सफलता को तीव्र बनाने का क्या प्लैन बनाया! सिर्फ बनाना नहीं है, ०२३ दिन उसका अभ्यास करना है, प्रैक्टिकल में लाना है। ठीक है ना। अभी प्रैक्टिकल होना है ना! एक दो में सभी कहते हैं, बापदादा तो सबकी रूह्रूहान सुनते रहते हैं। सभी कहते हैं प्रत्यक्ष हो, प्रत्यक्ष हो। लेकिन पहले प्रत्यक्ष आप तो हो जाओ। बाप भी आप द्वारा प्रत्यक्ष होगा ना! अच्छा।

अभी कुमारियों की सेरीमनी है। बहुत अच्छा लग रहा है। उठ जाओ। गुलदस्ता हिलाओ। बैठ जाओ। सभी ने देख लिया। कुमारियों के ऊपर तो बापदादा को सबसे ज्यादा नाज़ है। कुमारियां और डबल फारेनर्स कुमारियां ००० निकलें, यह बापदादा को बहुत अच्छा लग रहा है। पदम-पदम-पदम गुणा मुबारक है, कुमारियों को। अच्छा। कुमारियों से बापदादा का वैसे पर्सनल विशेष प्यार है। क्यों? कारण? कारण बापदादा समझते हैं कि विदेश में रहते कुमारी सुकुमारी बन गई, बच गई, कितनी बातों से बच गई। तो कुमारियों का बचना, बापदादा को बहुत अच्छा लगता है और देखो कुमारियों से विशेष प्यार है इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि कुमारी को पहले-पहले सबसे जल्दी दहेज मिलता है सेन्टर। इसमें देखो कितनी टीचर्स हैं सेन्टर्स सम्भालने वाली, इसमें जो कुमारियां सेन्टर सम्भालने वाली हैं, वह उठो। आपको तो वर, घर, दहेज सब मिल गया। तो विशेषता है ना कुमारियों

की! बापदादा को खुशी होती है, एक-एक कुमारी को क्लास में अपना परिचय देना है, मैं कौन! और पक्की स्टैम्प लग जायेगी ना! तो बापदादा को कुमारियों का संगठन बहुत प्यारा है। एक-एक कुमारी कितने परिवारों का कल्याण करेगी। इन्डिया में कहते हैं कुमारी वह जो ७० कुल का कल्याण करे। बापदादा कहते हैं कुमारी, ब्रह्माकुमारी वह जो आत्माओं के ७० जन्मों का कल्याण करे। बहुत अच्छा किया। इनकी टीचर्स कौन हैं? कुमारियों की टीचर कौन? डबल फारेनेर्स जो भी हैं, उन्हों ने सेवा कराई। बहुत अच्छा किया और बापदादा ने रिज़ल्ट देखी है, अच्छे उमंग-उत्साह से किया है और कराने वालों ने भी कराया है। इसीलिए पास हो, मुबारक हो। अच्छा।

डबल फारेनेर्स में जो विशेष पाण्डव सेन्टर सम्भालने के निमित्त हैं, वह उठो। पाण्डवों को भी बहुत-बहुत मुबारक हो। ऐसे नहीं कि बापदादा को पाण्डव प्यारे नहीं हैं, पाण्डव तो पाण्डवपति के साथी हैं। यह तो यादगार भी बताता है। पाण्डवों का यादगार सदा ही पाण्डवपति बापदादा के साथ रहा है। लेकिन बापदादा को खुशी है कि बहुत अच्छे एकजैम्पुल बन, सेवाधारी बन सेवा कर रहे हैं और सदा करते रहेंगे। इसलिए बाप दिलाराम दिल से धन्यवाद दे रहे हैं। अच्छा। डबल फारेनेर्स की कमाल यह है कि जॉब भी करते, सेन्टर भी सम्भालते, डबल कार्य करते हैं। चाहे बहिनें हैं चाहे भाई हैं। जैसा नाम है डबल फारेनेर्स वैसे काम भी डबल है। इसलिए बापदादा सभी डबल फारेनेर्स को बहुत-बहुत-बहुत-बहुत याद दे रहे हैं। सुना।

**गुजरात के सेवाधारी** – कहावत है जो समीप है वह सदा याद रहते हैं। तो सबसे समीप मुख्य स्थान गुजरात का है। अच्छा गुजरात वाले उठो। बहुत सेवाधारी हैं। गुजरात की विशेषता है - जब भी बुलाओ तो पहुँच जाते हैं। ऐसे है ना! जब भी सेवा के लिए बुलाओ आ जाते हैं। नजदीक का फायदा है। नजदीक का फायदा यह भी है कि सब मुरलियों में पहुँच जाते हैं। अच्छा।

गुजरात सेवा में तो अच्छा सदा ही रहा है और सदा ही रहने वाले हैं।

संख्या भी ज़्यादा है। बापदादा ने सुना कि अभी तक गुजरात में एक लाख नहीं बनाये हैं, तो यह थोड़ा सा रहा हुआ है। ६ लाख में से जो भी बड़े-बड़े ज़ोन हैं वह एक-एक लाख बनावें तो ६ लाख हो जाएं। डबल फारेनर्स भी कितने हैं, ३३० हज़ार तक हैं? कितने हैं? (२० हज़ार) अभी ३३० तक तो आओ। चलो इन्डिया को लाख तो फारेन वालों को ३३० तो लाना चाहिए। (विदेश में भी गुजराती बहुत हैं) लेकिन हैं तो फारेनर्स ना! यह ज़रूर है कि फारेन में भी जहाँ-जहाँ गुजराती हैं या इन्डियन हैं वहाँ-वहाँ भण्डारी और भण्डारा भरपूर है। अभी-अभी बापदादा खुशखबरी डबल फारेनर्स की भी सुनते हैं कि डबल फारेनर्स को भी रहा हुआ वर्सा मिलता रहता है। तो डबल फारेनर्स को यह भी एक भविष्य बनाने का चांस अच्छा मिल रहा है। अच्छा है। समाचार तो बापदादा सब सुनते हैं। अच्छा है, हर एक की भारतवासी की, चाहे डबल फारेनर्स की विशेषतायें तो बहुत हैं लेकिन कहाँ तक सुनायें। इसलिए हर एक स्थान की कोई न कोई विशेषता है, ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ कोई विशेषता नहीं हो। विशेष आत्मायें हो और विशेषता है।

आज फारेन में सुन वा देख रहे हैं या नहीं? (देख रहे हैं) अच्छा है। आपके यज्ञ की स्थापना के बाद ही साइंस ने वृद्धि को प्राप्त किया है तो उसका फायदा तो कुछ लेंगे ना! लेकिन विधिपूर्वक फायदा लेना है। तो जो साइंस के साधनों द्वारा देख रहे हैं, सुन रहे हैं उन सभी बच्चों को सबसे पहले बापदादा सदा याद करते हैं। जितना-जितना याद का बल शक्तिशाली होगा उतना ऐसे ही महसूस करेंगे या कर रहे हैं जैसे बापदादा हमसे ही बात कर रहे हैं। लेकिन फिर भी मधुबन-मधुबन है।

अच्छा - अभी-अभी अपनी वृत्ति को एकाग्र कर सकते हो? कहाँ भी वृत्ति हलचल में नहीं आये। अचल, एकाग्र, शक्तिशाली रहे। (बापदादा ने झिल कराई) अच्छा -

चारों ओर के सर्व सर्विसएबुल बच्चों को, सदा अपने श्रेष्ठ वायब्रेशन द्वारा सेवा करने वाले तीव्रगति का पुरुषार्थ करने वाले बच्चों को सदा क्षमा

के मास्टर सागर, सदा शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा बहुत कमजोर आत्माओं को भी शक्तिशाली बनाने वाले ऐसे मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चों को बापदादा का बहुत-बहुत याद-प्यार और नमस्ते।

## दादी जी, दादी जानकी जी से

आप बताओ सबसे ज्यादा खुश कौन होता है? बाप खुश होते हैं या आप खुश होती हैं? (एक दो से ज्यादा) अच्छा है, बापदादा जब आप निमित्त आत्माओं की सेवा को देखते हैं तो सेवा पर बलिहार जाते हैं। सम्भालने की विधि अच्छी है। बापदादा आप दोनों का सारे विश्व के आगे स्नेह, सहयोग और एक दो में सहानुभूति देख हर्षित होते हैं। (गुलजार दादी भी है, त्रिमूर्ति हैं) वह तो निमित्त हो गईं। आपको देख करके, एक दो में कहा और माना। यह मानना ही माननीय बनाता है। हाँ जी, हाँ जी करके हजूर को भी अपना बना लेते हैं। (बाबा ने कूट-कूट कर भर दिया है) १७ वर्ष की पालना में सब कूट-कूट कर डाल दिया है। (अभी भी छोड़ता नहीं है) आप छोड़ सकती हो तो बाप क्यों छोड़ेगा! बहुत अच्छा। यह साथी भी आपके अच्छे हैं। सबका साथ है तभी आगे बढ़ रहे हैं। एक छोटी का भी साथ नहीं हो तो हलचल हो जाए। सबका चाहिए ना! चाहे पाण्डव, चाहे शक्तियाँ, एक-एक का सहयोग, सफलता को प्राप्त करा रहा है। आप यह नहीं समझना हम तो सिर्फ देखने वाले हैं, नहीं। करने वाले हैं। सर्व के सहयोग से बेहद का कार्य चल रहा है। ब्रह्मा बाप ने फाउण्डेशन क्या डाला? सहयोग का फाउण्डेशन डाला, क्या अकेला बापदादा कर नहीं सकता क्या? लेकिन फाउण्डेशन सहयोग का डाला। तो सहयोग से ही संसार बदल रहा है। अच्छा। सबका सहयोग है, एक-एक रतन विशेष है।

अच्छा - ओम् शान्ति।

11-03-2002

## विशेषतायें परमात्म-देन हैं - इन्हें विश्व सेवा में अर्पण करो

आज ग्रेट-ग्रेट ग्रैंड फादर ब्रह्मा बाप और शिव बाप अपने विश्व के चारों ओर के श्रेष्ठ भाग्यवान ब्राह्मण कुल को बहुत-बहुत अरब-खरब बार दिव्य अलौकिक जन्म की मुबारक दे रहे हैं। साथ-साथ अति स्नेह के, दिल के प्यार के रूहानी पुष्पों से जन्म की बधाई दे रहे हैं। हर एक ब्राह्मण आत्मा की विशेषता देख-देख हर्षित हो रहे हैं। दिल ही दिल में गीत गा रहे हैं - वाह बच्चे वाह! आज के दिन अमृतवेले से सभी के दिल में यही खुशी की लहरें दिखाई दे रही हैं - वाह बाप का और हमारा अलौकिक जन्म! बाप भी सभी बच्चों की अमृतवेले से बधाइयों की मालायें देख-देख खुश हो रहे हैं। यह बर्थ डे सारे कल्प में इस संगमयुग में ही मनाते हैं। सतयुग में भी ऐसा अलौकिक जन्म दिन नहीं मनायेंगे। वहाँ भी ऐसा विचित्र जन्म दिन नहीं होगा, जो बाप और बच्चों का एक ही साथ जन्म हो। अब तक सुना है क्या कि बाप और बच्चे का जन्म एक दिन हुआ? लेकिन आज का दिन आप बच्चों का और बापदादा का जन्म एक दिन मना रहे हो। तो वाह-वाह! के गीत गा रहे हो ना!

आज बापदादा अमृतवेले एक माला बना रहे थे। कौन-सी माला? NDPS की फाइनल माला नहीं बना रहे थे जो आप सोचो हमारा नाम था, हमारा नाम था... लेकिन आज आदि से, स्थापना के समय से अब विनाश के समीप समय तक कौन-से, कौन-से बच्चे अमर भव के वरदानी रहे हैं! उन्हीं की माला बना रहे थे। यह भी ड्रामा अनुसार उन आत्माओं को ऊँचे-ते-ऊँचे भगवन के साथ सर्व चरित्र देखने, सुनने का श्रेष्ठ पार्ट है लेकिन वह कितने थोड़े हैं! आप सबका भी पार्ट है, क्यों? बापदादा ब्राह्मण वंशावली बना रहे हैं। इसलिए विश्व के हिसाब से जो भी ब्राह्मण आत्मायें हैं वह बहुत-

बहुत-बहुत भाग्यवान हैं, क्यों? कोटों में कोई की लाइन में और कोई में भी कोई, एक तरफ विश्व की कोटों आत्मायें, दूसरे तरफ आप हर एक ब्राह्मण एक हो। तो जन्म दिन पर बापदादा हर एक बच्चे को, कोई-कोई को नहीं सभी बच्चों की जन्मपत्री देख हर एक के विशेषताओं की मालायें गले में डाल रहे थे। आप सभी चाहे नये हैं, चाहे आदि के हैं, चाहे मध्य के हैं लेकिन विशेष हैं और विशेष रहेंगे ही। सारा कल्प विशेष रहेंगे। सारा कल्प विश्व की सर्व आत्माओं की आप श्रेष्ठ आत्माओं के ऊपर महानता की नज़र रहती है। तो आप हर एक अपनी विशेषताओं को जानते हो? अगर हाँ तो एक हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। उस विशेषताओं को क्या करते हो? जानते हो बहुत अच्छा, मानते हो बहुत अच्छा लेकिन उन विशेषताओं को क्या करते हो? (सेवा में लगाते हैं) और रीति से यूज़ तो नहीं करते ना? यह विशेषतायें परमात्म-देन हैं। परमात्म-देन सदा विश्व सेवा में अर्पण करनी है। विशेषतायें अगर निगेटिव रूप में यूज़ किया तो अभिमान का रूप बन जाता है क्योंकि ज्ञान में आने के बाद, ब्राह्मण जीवन में आने के बाद बाप द्वारा विशेषतायें बहुत प्राप्त होती हैं क्योंकि बाप का बनने से विशेषताओं के खजाने के अधिकारी बन जाते हो। एक दो विशेषतायें नहीं हैं, बहुत विशेषतायें हैं। जो यादगार में भी आपकी विशेषताओं का वर्णन है - ०६ कला सम्पन्न, तो सिर्फ ०६ नहीं हैं, ०६ माना सम्पूर्ण। सर्व गुण सम्पन्न। सम्पूर्ण निर्विकारिता का डिटेल है। कहने में आता है सम्पूर्ण निर्विकारी लेकिन सम्पूर्ण में कई डिटेल हैं। तो विशेषतायें तो बाप द्वारा हर ब्राह्मण को वर्से में प्राप्त होती ही हैं। लेकिन उन विशेषताओं को धारण करना और फिर सेवा में लगाना। मेरी यह विशेषता है, नहीं, परमात्म-देन है। परमात्म-देन समझने से विशेषता में परमात्म शक्तियाँ भर जाती हैं। मेरी कहने से अभिमान और अपमान दोनों का सामना करना पड़ता है। किसी भी प्रकार का अभिमान, चाहे ज्ञान का, चाहे योग का, चाहे सेवा का, चाहे बुद्धि का, चाहे कोई गुण का, जिसमें भी अभिमान होगा उसकी निशानी है - उसको अपमान बहुत जल्दी फील होगा।

तो विशेष आत्मायें हो अर्थात् परमात्म-देन के अधिकारी हो।

तो आज आप सभी बापदादा का बर्थ डे मनाने आये हो ना! और बापदादा आप सबका बर्थ डे मनाने आये हैं। आप तो सिर्फ बापदादा का बर्थ डे मनायेंगे लेकिन बापदादा सारे ब्राह्मण कुल का बर्थ डे मनाने आये हैं। चाहे देश में दूर बैठे हैं, चाहे विदेश के कोने में दूर में बैठे हैं लेकिन जो भी ब्राह्मण आत्मा, ब्राह्मण कुल की बन गई, उन सबका बर्थ डे बापदादा भी मना रहे हैं, आप भी मना रहे हैं। सबका मना रहे हो या सिर्फ यहाँ बैठने वालों का मना रहे हो? सभी याद हैं ना! सभी देख रहे हैं कि हमारा भी मना रहे हैं या नहीं? तो सबका मना रहे हैं। सबको मुबारक, मुबारक, मुबारक हो। मनाना अर्थात् उमंग-उत्साह में आना। तो दिल में उत्साह है ना, वाह! हमारा अलौकिक जन्म दिन!

तो आज अमृतवेले से जन्म दिन का उत्साह-उमंग सभी में बहुत-बहुत रहा ना! बापदादा ने कार्ड भी देखे, आप इन आंखों से देखते हो, बापदादा तो सूक्ष्म में ही आपसे पहले ही देख लेते हैं। लेकिन बापदादा ने देखा सभी अपने दिल का उमंग दिखाने के लिए कितना उमंग-उत्साह रखते हैं। आजकल तो ई-मेल बहुत सस्ता है ना! तो ई-मेल भी सभी बहुत करते हैं। बापदादा के पास सब पहुँचता है। चाहे ई-मेल हो, चाहे कार्ड हो, चाहे पत्र हो, चाहे दिल के संकल्प हों। अमृतवेले से वतन में अगर चारों ओर के कार्ड, पत्र, ई-मेल, संकल्प सब इकट्ठे करो तो देख-देखकर बड़ा मजा आयेगा। यह एग्जीविशन विचित्र होती है। तो बर्थ डे पर भविष्य के लिए संकल्प किया जाता है। जैसे बर्थ का नम्बर आगे बढ़ता है, ६७९ से ६६ पर गया ना! तो जैसे वर्ष आगे बढ़ता है ऐसे ही पुरुषार्थ में वा अपने अमूल्य जीवन में, मन में अर्थात् संकल्प में, बुद्धि के निर्णय शक्ति में, वाणी में, सेकण्ड में सफलता मूर्त बनाने की शक्ति में, सम्बन्ध-सम्पर्क में हर समय सम्पर्क-सम्बन्ध वाले को कोई-न-कोई प्राप्ति की अनुभूति हो, ऐसा अपने भविष्य वर्ष के लिए दृढ़ संकल्प का व्रत लिया? क्योंकि विशेष शिव जयन्ती के दिन दो लक्ष्य

ब्राह्मण आत्माओं के रहते हैं - एक स्वयं से प्रतिज्ञा का और दूसरा बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहराने का, यह दो विशेष लक्ष्य इस दिन हर एक के अन्दर रहता है। तो बापदादा ने आप सबकी की हुई प्रतिज्ञाओं का (जो बीते हुए समय में की हैं) पोतामेल देखा। हर साल हर एक ने विधिपूर्वक संकल्प से, वाणी से प्रतिज्ञा की है। बहुत अच्छा किया है। लेकिन अभी आज के बाद अर्थात् जन्म दिन मनाने के बाद एक शब्द को विशेष अण्डरलाइन करना। कामन शब्द है, नया नहीं है। वह शब्द है -निरन्तर दृढ़ता। कभी दृढ़ता और कभी दृढ़ता में भी अलबेलापन, नहीं। अगर निरन्तर दृढ़ता है तो उसकी निशानी है - निरन्तर हर संकल्प, बोल, कर्म द्वारा स्व में, सेवा में और सम्बन्ध में 100 परसेन्ट सफलता। जब तक इन सभी बातों में ब्राह्मणों में सदा सफलता कम है तब तक प्रत्यक्षता ड्रामा अनुसार रुकी हुई है। सफलता प्रत्यक्षता का आधार है। हर बोल सफलता पूर्वक हो, हर संकल्प सफलतापूर्वक हो। इसलिए आजकल के यादगार में भी गुरु कहलाने वालों को सत वचन महाराज कहा जाता है। चाहे झूठ भी बोल रहे हों लेकिन भक्त कहते हैं सत वचन। तो यह आपके वचन का गायन है। महाराज, महान तो आप ही बनते हो ना! इसीलिए सत वचन महाराज माना महान आत्मायें। ऐसे कभी नहीं सोचो कि मेरा भाव नहीं था लेकिन बोल दिया, निकल गया, बिना भाव के, भावना के बोल नहीं निकलते हैं, यह तो चलाने की बात है। कभी कहते हैं निकल गया, क्यों निकल गया? क्यों, कन्ट्रोलिंग पावर नहीं है क्या जो निकल गया? हो गया, तो राजा नहीं हैं? कोई-कोई कर्मेन्द्रियों के वशीभूत हो गये ना - जो निकल गया, हो गया!

तो इस वर्ष में मुबारक के साथ निरन्तर हर बात में दृढ़ता को अण्डरलाइन करना। आज बर्थ डे है इसलिए बापदादा आज नहीं सुनाते हैं लेकिन सभी के चार्ट से बापदादा ने एक बात नोट की, लेकिन लास्ट बारी में सुनायेंगे। आज तो मनाना है, सुनाना नहीं है। 108 दिन के बाद सुनायेंगे। (बापदादा सुनाये तो 108 दिन में सब ठीक हो जायेंगे) अच्छा पहले कहो 108 दिन में करेक्शन हो जायेगी फिर तो सुनाना ठीक है। अगर 108 दिन में परिवर्तन हो जाए तो बापदादा तो पता नहीं क्या कर देंगे! तो सुनायें क्या? तो 108 दिन में



परिवर्तन हो जायेगा? संकल्प करेंगे? अच्छा, पाण्डव करेंगे सुनायें? सुनना तो सहज है, करेंगे? करना पड़ेगा। (बापदादा ने पीछे वालों से, माताओं से, टीचर्स से, डबल फारेनर्स सबसे पूछा, सभी ने हाथ हिलाया) हाथ तो सब बहुत अच्छा उठा लेते हैं।

**डबल फारेनर्स के तीन ग्रुप हैं ना?**

**(अन्तर्मुखी, मस्ताना, शक्ति ग्रुप)**

अच्छा, अन्तर्मुखी ग्रुप हाथ उठाओ। अन्तर्मुखी में थोड़े हैं। दूसरा ग्रुप है मस्ताना, अच्छा मस्ताना ग्रुप वाले खड़े हो जाओ। सदा मस्त रहने वाले ना! मस्ताना का अर्थ क्या हुआ? सदा मस्त रहने वाले ना! तीसरा ग्रुप - शक्ति। शक्ति ग्रुप शक्तिशाली है ना! नाम तो बहुत अच्छे रखे हैं। देखो शुरू-शुरू में जब भट्टी थी तो आपके गुप्स के नाम क्या थे? (डिवाइन युनिटी, मनोहर पार्टी, सुप्रीम पार्टी) नाम तो सुन्दर हैं ना? तो यह भी ग्रुप अच्छे बने हैं। नाम याद रहेगा तो नाम के साथ कर्तव्य भी याद रहेगा। अच्छा डबल फारेनर्स कुमार उठो। अच्छा, यह कुमारों का ग्रुप है। अच्छा किया है, बापदादा ने डबल फारेनर्स के रिफ्रेशमेंट का समाचार बहुत अच्छा सुना है। बापदादा दिल से मुबारक भी दे रहे हैं लेकिन सभी गुप्स को जो आज अण्डरलाइन किया है, वह याद भी दिला रहे हैं।

डबल फारेन की टीचर्स बहुत हैं। टीचर बनना बहुत-बहुत श्रेष्ठ भाग्य की निशानी है क्योंकि बापदादा टीचर्स को गुरु-भाई के रूप में देखते हैं, इतना समान रूप में देखते हैं क्योंकि बाप के आसन पर बैठते हैं, टीचर्स को यह हक मिलता है। जैसे गुरु की गद्दी होती है ना तो यह मुरली का तख्त, मुरली धारण कराना और मुरली सुनाना। सुनाना सिर्फ नहीं लेकिन मुरली धारण कराना, यह टीचर्स को बापदादा ने गुरुभाई का तख्त दिया है और फारेन में तो देखा जाता है कि बहुत जल्दी से जल्दी तख्तनशीन हो जाते हैं। बापदादा खुश होते हैं, जिम्मेवारी का ताज धारण कर लेना, हिम्मत रखना, यह भी

कोई कम बात नहीं है लेकिन गुरुभाई अर्थात् बाप समान। वैसे तो सभी को बाप समान बनना ही है लेकिन फिर भी टीचर्स को विशेष जिम्मेवारी का ताज है। बापदादा को भी टीचर्स का संगठन बहुत अच्छा लगता है। लेकिन आज का विशेष शब्द “निरन्तर अटेन्शन”।

अच्छा - भारत की टीचर्स उठो, भारत की टीचर्स भी कम नहीं हैं। तो सुना, टीचर्स को बाबा किस नज़र से देखते हैं। यह क्लास की, मुरली सुनाने की सीट... बहुत भाग्यवान हैं। बहुत-बहुत-बहुत लक्की हो क्योंकि साकार रूप में निमित्त कौन हैं? अच्छा दादियां तो एक फारेन रहती है एक मधुबन रहती है लेकिन हर स्थान पर साकार रूप में निमित्त टीचर्स हैं या निमित्त पाण्डव भी हैं। ऐसे नहीं सिर्फ टीचर्स (बहनें) हैं, पाण्डव भी हैं, जिसको बड़े भाई कहते हो ना। पाण्डव तो ज़रूरी हैं ही। शक्तियां और पाण्डव दोनों के साथ से ही आदि से कार्य चला है, चाहे थोड़े पाण्डव थे लेकिन विश्वकिशोर तो थे ना। आनंदकिशोर, विश्वकिशोर शुरू के हैं। तो पाण्डवों का साथ तो है ना। लेकिन मैजारिटी टीचर्स ज़्यादा हैं जो निमित्त बन जाती हैं। आप बैकबोन हो, टीचर्स के भी बैकबोन हो। हर एक का पार्ट है। लेकिन विदेश में यह विशेषता है कि पाण्डव भी टीचर बनते हैं, भारत में कम बनते हैं। तो टीचर्स को सदा बापदादा कहते हैं टीचर अर्थात् अपने फीचर्स द्वारा बाप का साक्षात्कार कराने वाली। फीचर्स द्वारा फ्यूचर स्पष्ट दिखाने वाली। तो ऐसी टीचर्स हो ना? जो आपको देख बापदादा के पालना की अनुभूति हो। परमात्म-गुण, परमात्म-शक्तियां आपके चेहरे से दिखाई दें, बोल से दिखाई दें। ऐसे नहीं फलानी टीचर ने बोला, नहीं। बापदादा ने टीचर्स के फीचर्स द्वारा अनुभव कराया। बाप से हर एक का कनेक्शन जोड़ना - यही है टीचर्स का कर्तव्य। हर एक के दिल से हर समय बाबा निकले।

यह गुप्स भी अच्छे बनाये हैं क्योंकि पर्सनल रिफ्रेशमेंट मिलने से अनुभूति अच्छी करते हैं। गुप्स में रिज़ल्ट अच्छी निकली ना! अच्छा है।

**सेवा का चांस यू.पी. का है:-** अच्छा, गोल्डन चांसलर उठो। पाण्डव

भी हैं, शक्तियां भी हैं, तो आप सबको इस सेवा का टाइटल मिला है, गोल्डन चांसलर। तो अभी यू.पी. कमाल करके दिखायेगी ना! धूम मचाओ यू.पी. में। यू.पी. में पुराने-पुराने भी अच्छे हैं, नये भी काफी आये हैं। अभी ऐसा कोई प्रोग्राम बनाओ जो देश-विदेश के ब्राह्मणों की नज़र यू.पी. की तरफ हो जाये। यू.पी. में निशानी है - जो ब्रह्मा बाप ने भी देखी। ब्रह्मा ने बीज डाला था, उस स्थान में साकार रूप में कोशिश की थी, जमीन लेके कुछ बनाने की, लेकिन अभी तक बना नहीं है। कमाल करो, बन जायेगा। (बनारस वाले म्यूजियम बना रहे हैं, आगरा वाले भी बना रहे हैं।) देखेंगे, कितने वारिस निकलते हैं और कितने सहयोगी निकलते हैं, कितने रेग्युलर स्टूडेंट निकलते हैं! रिज़ल्ट देखेंगे। बाकी अच्छा है, हिम्मत अच्छी रखी है, मदद मिलती रहेगी। तो यू.पी. वाले क्या कमाल करेंगे? कमाल करना है या नहीं? करना है ना, तो देखेंगे यू.पी. वाले क्या कमाल करते हैं। सब कहेंगे यू.पी. में चलो, यू.पी. में चलो। वह विनाशकारी विनाश करें, स्थापना वाले स्थापना। तो देखेंगे, प्लैन बनाना। ठीक है ना! प्लैन बनेगा ना।

**मीडिया वालों की मीटिंग है** – मीडिया वाले क्या कर रहे हैं? मीडिया का अर्थ ही है हर बात को प्रत्यक्ष करने वाले। तो मीडिया वालों ने क्या प्रत्यक्षता का प्लैन बनाया? इस साल प्रत्यक्षता हो जायेगी? मीडिया वाले चैनल बनाओ या कुछ भी बनाओ लेकिन यह आना चाहिए कि यही है, यही है, यही है...। अभी तक तो यह भी है, यही है, नहीं आया है। यह भी अच्छे हैं..., अच्छे-ते-अच्छे यही हैं, वह अखबार में निकले। चैनल में आवे तब बाप कहेंगे मीडिया है। फिर भी बढ़ तो रहा है, जितना भी किया है, वृद्धि तो हुई है लेकिन लक्ष्य तो वह है ना? मेहनत अच्छी कर रहे हैं, नाम तो हो गया है लेकिन अभी काम नहीं हुआ है। हो जायेगा, ज़रूर। अच्छा।

**सिन्धी ग्रुप बहुत बड़ा आया है** – बहुत अच्छा किया। अपने घर में आये हो ना? समझते हो अपने घर में आये हैं कि ब्रह्माकुमारियों के पास आये हैं? अपना घर है क्योंकि सिन्ध से स्थापना हुई, तो स्थापना के निमित्त बने हुए

स्थान से आपका सम्बन्ध है। इसलिए आये हैं तो बहुत अच्छा, आये हैं और आते रहना। अपने सम्बन्ध-सम्पर्क वालों को जगाते रहना। बापदादा ने देखा है सेवा अच्छी करते हैं, अब तक की भी है। एक दो को परिचय देते रहते हो लेकिन और सेवा को बढ़ाओ। अभी इतने आये हैं ना, फिर दूसरी बारी और ज्यादा आना। सिन्धी लोगों को देख करके सबको खुशी होती है - यह सिन्ध वाले हैं जहाँ स्थापना हुई थी, आपको देखकर खुश होते हैं। तो अच्छा किया है। वृद्धि हो रही है ना? अच्छी वृद्धि है। बहुत अच्छा किया।

अच्छा, डबल फारेनर्स को मुबारक तो मिली। (३४० देशों से १०००० डबल विदेशी आये हैं) डबल विदेशियों ने विश्व कल्याण करने की जो हिम्मत रखी है, उसकी बापदादा विशेष डबल विदेशी बच्चों को बधाई देते हैं। कोई भी कोना छोड़ने वाले नहीं हैं। हिम्मत रख सेवा में बढ़ते ही रहते हैं। बापदादा ने देखा सेवा की रिज़ल्ट में जो काल आफ टाइम, लिविंग वैल्यू, पीस आफ माइन्ड... जो भी करते हो वह अच्छा कर रहे हैं। अच्छा है। रिज़ल्ट भी अच्छी है और आगे बढ़ भी रहे हैं। भारत को तो वरदान है गांव-गांव में झण्डा लहराना। भारत में मुश्किल नहीं है लेकिन डबल फारेनर्स हर देश में साथ-वात (परिस्थितियां) न देख करके भी स्थापना करने का तरीका बहुत अच्छा है। भारत तो है ही बाप का, इसलिए उसको तो वरदान है ही।

**टर्की से बहुत अच्छा ग्रुप आया है** - अच्छा, टर्की वाले उठो - देखो, आपके लिए बाप को बहुत-बहुत प्यार है, तब तो टर्की में पहुँच गया ना! अच्छे मस्त हैं। गुप्त और मस्त। गुप्त भी रहना है और अपनी मस्ती में भी रहना है। तो अच्छा पार्ट बजा रहे हो। अच्छा। डबल विदेश की टीचर्स ने मेहनत अच्छी की है। आर.सी.ओ. ग्रुप उठो। डबल फारेन में आर.सी.ओ. कौन हैं, आप सबको पता तो होना चाहिए। टाइम भी दिया है और मेहनत भी अच्छी की है, मुबारक हो। बहुत अच्छा किया है। बैकबोन तो है। (दादी जानकी) आप भी उठो, देखो आपके लिए सबका प्यार है ना, इसलिए तालियां बजाईं। अच्छा है। (एन.सी.ओ. भी है) अच्छा है जो भी हैं वह सब

अच्छे हो। एन.सी.ओ, आर.सी.ओ जो भी हैं। समय दिया है। समय देने से सफलता होती है। अच्छा।

गुजरात का क्या हाल है? अच्छी हिम्मत है ना? डर तो नहीं है ना? शक्तियों को क्या डर है। यह तो होना ही है। लेकिन रीयल रुका हुआ है, यह तो रिहर्सल है। घबराते तो नहीं हो ना! कोई घबराता है? नहीं। आराम से ड्रामा की हर सीन देखते चलो। सिर्फ साक्षीपन की सीट से नीचे आकर नहीं देखो। सीट पर अच्छी रीति से सेट होकर बैठो।

**मधुबन वालों से:-** अच्छा, मधुबन वाले ठीक हैं? बहुत सेवा की सीजन चल रही है। मधुबन वाले उठो। मधुबन वाले सबसे प्यार-ते-प्यारे हैं क्योंकि जो चुल पर होता है वह दिल पर होता है। बापदादा मधुबन निवासी बच्चों को सदा ही इमर्ज कर याद-प्यार देते हैं क्योंकि इतनी आत्माओं को बाप से मिलने का सुख देते हैं। सेवा करना अर्थात् बाप समान सुखदाई बन सुख देना। मधुबन को सेवा करने का बहुत-बहुत-बहुत परमात्म चांस है। मधुबन वालों के ऊपर परमात्मा की मेहर है, गुरुकृपा है। तो सदा चाहे ऊपर सुन रहे हैं, चाहे सम्मुख हैं लेकिन बापदादा सभी मधुबन निवासी सेवाधारी सो बाप के दिल पर, तख्त पर बैठने वाले बच्चों को बहुत-बहुत सेवा के रिटर्न में वरदान दे रहे हैं - अथक भव। सदा अथक भव का अपना चित्र सबको दिखाने वाले। ऐसे हो ना! सुखदाई हो ना? कितनी दुआयें मिलती हैं। जो सच्ची दिल वाला है उसको दुआयें स्वतः ही मिलती हैं। मधुबन वालों को दुआयें जमा करने का चांस बहुत अच्छा है। जितनी चाहे उतनी करो। तो दुआओं का स्टाक इक्लू हो रहा है ना? मधुबन निवासियों से बापदादा का स्पेशल प्यार है। अलग मिलते नहीं हैं लेकिन दिल से सदा मिलते रहते हैं। बहुत अच्छा। बहनें भी हैं। अच्छा।

**ग्लोबल हॉस्पिटल के ट्रस्टी भी आये हैं -** ग्लोबल हॉस्पिटल से सबसे ज्यादा फायदा, बापदादा ने देखा ब्राह्मणों को बहुत है। ब्राह्मणों के लिए सहज साधन बन गया। इसलिए बापदादा हॉस्पिटल वालों को भी खास याद दे रहे

हैं। अच्छा - ट्रस्टी उठो। अच्छा है बापदादा एक हंसी की बात सुनाते हैं। कामन बात है लेकिन हंसने की है, सभी से ज्यादा हॉस्पिटल का फायदा बापदादा ने देखा मधुबन वालों को है, क्यों? कोई भी शरीर छोड़ता है ना, तो मधुबन वालों का नाश्ता बंद नहीं होता है और यहाँ तो हर सीजन में दो-चार तो होते ही हैं। फायदा है ना मधुबन वालों को, खाना तो बंद नहीं होता है ना! और बच्चों को भी फायदा है। लेकिन सोशल वर्क के हिसाब से भी आबू निवासियों की वृत्ति चेंज होना, इसके निमित्त हॉस्पिटल है। हॉस्पिटल के सेवाधारी आये हैं, उठो। बहुत-बहुत सेवा की मुबारक हो। अच्छी सेवा करते हैं और दिनप्रतिदिन अनुभवी भी बनते जाते हैं। फिर भी हिम्मत तो रखी है ना? अच्छा, अभी तो बाम्बे में भी हॉस्पिटल खुल रही है। अच्छा है देखो ग्लोबल हॉस्पिटल को अच्छा-सा वारिस मिल गया है। (भुवनेश्वर में भी एक हॉस्पिटल खुली है) सभी को अच्छा लगता है? हाथ तो हिलाओ। टीचर्स को चेक कराना सहज हो गया है ना! अच्छा है। देश-विदेश में यह नाम भी बहुत सेवा करता है। विदेश में जानकी फाउण्डेशन है, अच्छा है, यह भी सेवा का साधन है और एक-दो में कनेक्शन जो रखा है वह भी अच्छा है। ट्रस्टी भी अच्छे-अच्छे हैं। अच्छा।

चारों ओर के जन्म उत्सव मनाने वाले श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्माओं को, सदा अलौकिक जन्म के अलौकिक दिव्य कर्तव्य करने वाले श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा एक बाप दूसरा न कोई, ऐसे एकनामी और सर्व खज़ानों के एकानामी के अवतार बच्चों को सदा हर वरदान और वर्से को जीवन द्वारा प्रत्यक्ष करने वाले उमंग-उत्साह में रहने वाले बच्चों को, बापदादा का अलौकिक जन्म के मुबारक सहित याद-प्यार और नमस्ते।

## दादियों से

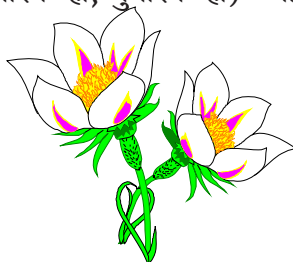
दादी जी ने बापदादा को बर्थ डे की बहुत-बहुत बधाई दी।

आज माला में आप सब आये। माला याद की ना! आदि की स्थापना

के रत्न, तो उसमें आप माला के मणके थे। अच्छा है स्थापना में भी निमित्त बने, पालना में भी निमित्त बने, अभी बाप के साथ चलने में भी निमित्त बनेंगे। क्या दरवाजा बापदादा अकेला खोलेगा? (नहीं) आपके लिए रुके हुए हैं। आओ तो दरवाजा खोलें। लेकिन सेवा पूरी करनी पड़ेगी ना क्योंकि साकार में आप लोगों को निमित्त बनाया है। तो साकार का कार्य तो पूरा करना पड़ेगा ना। आजकल सब किसको देखते हैं? सबकी नजर कहाँ जाती है? आप लोगों के ऊपर ही तो जाती है। जो निमित्त बने हुए हैं, उन्हों के ऊपर ही सबकी नज़र जाती है। नज़रों में तो सभी को बिठाया क्योंकि बाप की नज़र कोई छोटी तो है ही नहीं, बेहद की नज़र है। तो सभी नज़र में हैं। सभी नूरे रत्न हैं। बहुत अच्छा। हर एक अपना-अपना पार्ट बजा रहे हैं और बजाना ही है। ड्रामा में बंधे हुए हो। मजा आता है ना! बहुत अच्छा है!

### बापदादा ने अपने हस्तों से शिव ध्वज फहराया, केक काटी और सब बच्चों को बधाइयाँ दी

सभी बच्चों के दिल में बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहरा रहा है और आप सब बच्चों के दिल में लहराया हुआ झण्डा दुनिया में लहराया जायेगा। सभी के मुख से यही निकलेगा - वाह शिव-शक्ति पाण्डव सेना वाह! बापदादा को सभी के खुशनुमा: चेहरे देख बहुत-बहुत खुशी है। खुशनुमा हो और सदा खुशनुम: चेहरा है और औरों को भी सदा दिलखुश मिठाई खिलाते रहना। अमृतवेले यह मिठाई सभी याद से खा लो। तो सारा दिन इस मिठाई की शक्ति रहेगी, खुशी रहेगी। अच्छा। सबको मुबारक हो। (सबके तरफ से बाबा को मुबारक हो, मुबारक हो) ओम् शान्ति।



28-03-2002

## इस वर्ष को निर्माण, निर्मल वर्ष और व्यर्थ से मुक्त होने का मुक्ति वर्ष मनाओ

आज बापदादा अपने चारों ओर के बच्चों के मस्तक में चमकती हुई तीन लकीरें देख रहे हैं। एक लकीर है प्रभु पालना की, दूसरी लकीर है श्रेष्ठ पढ़ाई की और तीसरी लकीर है श्रेष्ठ मत की। तीनों ही लकीर चमक रही हैं। यह तीनों लकीर सर्व के भाग्य की लकीरें हैं। आप सभी भी अपनी तीनों लकीरें देख रहे हो ना! प्रभु पालना का भाग्य सिवाए आप ब्राह्मण आत्माओं के और किसी को भी प्राप्त नहीं होता है। परमात्म पालना जिस पालना से कितने श्रेष्ठ पूज्यनीय बन जाते हो। कभी स्वप्न में भी ऐसा सोचा था कि मुझ आत्मा को परमात्म पढ़ाई का अधिकार प्राप्त होना है। लेकिन अभी साकार में अनुभव कर रहे हो। स्वयं सतगुरु अमृतवेले से रात तक हर कर्म की श्रेष्ठ मत दे कर्म बन्धन के परिवर्तन में, कर्म सम्बन्ध में आने की श्रीमत देने के निमित्त बनायेंगे - यह भी स्वप्न में नहीं था। लेकिन अभी अनुभव से कहते हो हमारा हर कर्म श्रीमत पर चल रहा है। ऐसा अनुभव है? ऐसा श्रेष्ठ भाग्य हर बच्चों का बापदादा भी देख-देख हर्षित होते हैं। वाह मेरे श्रेष्ठ भाग्यवान वाह! बच्चे कहते वाह बाबा वाह! और बाप कहते वाह बच्चे वाह!

आज अमृतवेले से बच्चों के दो संकल्पों से याद बापदादा के पास पहुँची। एक तो कई बच्चों को अपना एकाउन्ट देने की याद थी। दूसरी - बाप के संग के रंग की होली याद थी। तो सभी होली मनाने आये हो ना! ब्राह्मणों की भाषा में मनाना अर्थात् बनना। होली मनाते हैं अर्थात् होली बनते हैं। बापदादा देख रहे थे ब्राह्मण बच्चों का होलीएस्ट बनना कितना सर्व से न्यारा और प्यारा है। वैसे द्वापर के आदि की महान आत्मायें और समय प्रति समय आये हुए धर्म पितायें भी पवित्र, होली बने हैं। लेकिन आपकी पवित्रता सबसे श्रेष्ठ भी है, न्यारी भी है। कोई भी सारे कल्प में चाहे महात्मा है, चाहे



धर्म आत्मा है, धर्म पिता है लेकिन आप की आत्मा भी पवित्र, शरीर भी पवित्र, प्रकृति भी सतोप्रधान पवित्र, ऐसा होलीएस्ट कोई न बना है, न बन सकता है। अपना भविष्य स्वरूप सामने लाओ। सबके सामने अपना भविष्य रूप आया? या पता ही नहीं है कि बनूंगा या नहीं बनूंगा! क्या बनूंगा! कुछ भी बनेंगे लेकिन होंगे तो पवित्र ना! शरीर भी पवित्र, आत्मा भी पवित्र और प्रकृति भी पवित्र पावन, सुखदाई.... निश्चय की कलम से अपना भविष्य चित्र सामने ला सकते हैं। निश्चय है ना! टीचर्स को निश्चय है? अच्छा एक सेकण्ड में अपना भविष्य चित्र सामने ला सकते हो? चलो कृष्ण नहीं बनेंगे, लेकिन साथी तो बनेंगे ना! कितना प्यारा लगता है। आर्टिस्ट बनना आता है या नहीं आता है? बस सामने देखो। अभी साधारण हूँ, कल (ड्रामा का कल, यह कल नहीं जो कल आयेगा) तो कल यह पवित्र शरीरधारी बनना ही है। पाण्डव क्या समझते हो? पक्का है ना, शक्य तो नहीं है - पता नहीं बनेंगे या नहीं बनेंगे? शक्य है? नहीं है ना! पक्का है। जब राजयोगी हैं तो राज्य अधिकारी बनना ही है। बापदादा कई बार याद दिलाते हैं कि बाप आपके लिए सौगात लाये हैं तो सौगात क्या लाये हैं? सुनहरी दुनिया, सतोप्रधान दुनिया की सौगात लाये हैं। तो निश्चय है, निश्चय की निशानी है रूहानी नशा। जितना अपने राज्य के समीप आ रहे हो, घर के भी समीप आ रहे हो और अपने राज्य के भी समीप आ रहे हो, तो बार-बार अपने स्वीट होम और अपने स्वीट राज्य की स्मृति स्पष्ट आनी ही चाहिए। यह समीप आने की निशानी है। अपना घर, अपना राज्य ऐसा ही स्पष्ट स्मृति में आये, तीसरे नेत्र द्वारा स्पष्ट दिखाई दे। अनुभव हो आज यह, कल यह। कितने बार पार्ट पूरा कर अपने घर और अपने राज्य में गये हो, याद आता है ना! और अब फिर से जाना है। डबल फारेनर्स स्पष्ट याद आता है कि खींचना पड़ता है, पता नहीं क्या बनेगा, कैसा होगा! खींचना पड़ता है या स्पष्ट है? याद है? स्पष्ट है? पीछे वालों को याद है? गैलरी में बैठने वालों को याद है? (आज की सभा १६-१७ हजार की है) बापदादा देख रहे हैं, बाहर भी बैठे हैं और विश्व के

कोने-कोने में भी बैठे हैं। तो होली मना ली ना? हो ही होली, तो होली क्या मनायेंगे! यह तो संगमयुग के सुहेज हैं।

तो बापदादा आज सबका एकाउन्ट देखेंगे ना! भूला नहीं है। सबने अपना एकाउन्ट रखा, जिन्होंने एक्यूरेट अपना एकाउन्ट रखा है, नियम प्रमाण, काम चलाऊ नहीं, यथार्थ रूप से जैसा भी है लेकिन एकाउन्ट अपना पूरा रखा है, सच्चा-सच्चा एकाउन्ट, चलाऊ नहीं, वह बड़ा हाथ उठाओ। जिन्होंने रखा है, लिखा है नहीं, रखा है। थोड़ों ने रखा है। अच्छा पीछे वाले जिन्होंने रखा है, खड़े हो जाओ। अच्छा। डबल फारेनर्स जिन्होंने रखा है वह उठो। अच्छा मुबारक हो। अच्छा - जिन्होंने नहीं रखा है उन्हों से हाथ नहीं उठवाते हैं। उठाना अच्छा नहीं लगेगा ना। लेकिन जिन्होंने सच्चा-सच्चा एकाउन्ट रखा है, बापदादा के पास तो स्पष्ट हो ही जाता है। कइयों ने थोड़ा हिसाब से नहीं, जैसे एवरेज निकाला जाता है ना, ऐसे भी रखा है। एक्यूरेट बहुत थोड़ों ने लिखा है या रखा है। फिर भी बाप के डायरेक्शन को माना इसलिए बापदादा ने दो प्रकार की एक्स्ट्रा मार्क्स उन्हों की बढ़ाई, क्योंकि श्रीमत पर चलना यह भी एक सब्जेक्ट है। तो श्रीमत पर चलने की सब्जेक्ट में पास हुए इसलिए फर्स्ट नम्बर वालों को बापदादा ने अपने तरफ से ७७३ मार्क्स बढ़ाई, जो पहला नम्बर हैं और जो दूसरा नम्बर हैं उसको १०३३ मार्क्स बढ़ाई। यह एक्स्ट्रा लिफ्ट बापदादा ने अपने तरफ से दी। तो फाइनल पेपर में आपकी यह मार्क्स जो हैं वह जमा होंगी। पास विद आनर होने में मदद मिलेगी। लेकिन जिन्होंने नहीं रखा है, कोई भी कारण है, है तो अलबेलापन और तो कुछ नहीं है लेकिन फिर भी कोई भी कारण से अगर नहीं रखा है तो बापदादा कहते हैं कि फिर भी एक मास अपना एकाउन्ट अभी से रखो और अगर अभी भी एक मास एक्यूरेट, नम्बरवन वाला एकाउन्ट रखेंगे, तो बापदादा उसकी मार्क्स कट नहीं करेंगे, जो श्रीमत प्रमाण नहीं कर सके हैं। समझा। कट नहीं करेंगे लेकिन करना ज़रूरी है। श्रीमत न मानने से मार्क्स तो कट होती हैं ना! अन्त में जब आप अपना पोतामेल ड्रामा अनुसार दिल

के टी.वी. में देखेंगे और टी.वी. नहीं, अपने ही दिल की टी.वी. में बापदादा दिखायेंगे, तो उसमें इस श्रीमत की मार्क्स कट नहीं करेंगे। फिर भी बापदादा का प्यार है। समझते हैं कि बहुत जन्म के अलबेलेपन के संस्कार पक्के हैं ना, तो हो जाता है। लेकिन अभी अलबेले नहीं बनना, नहीं तो फिर पीछे बतायेंगे क्या होगा, अभी नहीं बताते हैं क्योंकि बापदादा ने सभी की वर्तमान समय की रिज़ल्ट देखी। चाहे डबल फारेनर्स, चाहे भारतवासी, सभी बच्चों की रिज़ल्ट में देखा कि वर्तमान समय अलबेलेपन के बहुत नये-नये प्रकार बच्चों में हैं। अनेक प्रकार का अलबेलापन है। मन ही मन में सोच लेते हैं, सब चलता है...। आजकल का सब बातों में यह विशेष स्लोगन है - “सब चलता है” - यह अलबेलापन है। साथ में थोड़ा-थोड़ा भिन्न-भिन्न प्रकार का पुरुषार्थ वा स्व-परिवर्तन में अलबेलेपन के साथ कुछ परसेन्ट में आलस्य भी है। हो जायेगा, कर ही लेंगे... बापदादा ने नये-नये प्रकार की अलबेलेपन की बातें देखी हैं। इसलिए अपना सच्चा, सच्ची दिल से अलबेले रूप से नहीं, एकाउन्ट ज़रूर रखो।

आज इस सीजन का लास्ट टर्न है ना! तो बापदादा रिज़ल्ट सुना रहे हैं। सुनाये ना! कि नहीं सिर्फ प्यार करें? यह भी प्यार है। हर एक से बापदादा का इतना प्यार है कि सभी बच्चे ब्रह्मा बाप के साथ-साथ अपने घर में चलें। पीछे-पीछे नहीं आवें, साथी बनके चलें। तो समान तो बनना पड़े ना! बिना समानता के साथी बनके नहीं चल सकेंगे और फिर अपने राज्य का पहला जन्म, पहला जन्म तो पहला ही होगा ना! अगर दूसरे-तीसरे जन्म में आ भी गये, अच्छा राजा भी बन गये, लेकिन कहेंगे तो दूसरा-तीसरा ना! साथ चलें और ब्रह्मा बाप के साथ पहले जन्म के अधिकारी बनें - यह है नम्बरवन पास विद आनर वाले। तो पास-विद्-आनर बनना है या पास मार्क्स वाले भी ठीक हैं? कभी भी यह नहीं सोचना कि जो हम कर रहे हैं, जो हो रहा है वह बापदादा नहीं देखते हैं। इसमें कभी अलबेले नहीं होना। अगर कोई भी बच्चा अपने दिल का चार्ट पूछे तो बापदादा बता सकते हैं लेकिन अभी बताना नहीं

है। बापदादा हर एक महारथी, घोड़ेसवार... सबका चार्ट देख रहे हैं। कई बार तो बापदादा को बहुत तरस आता है, हैं कौन और करते क्या हैं? लेकिन जैसे ब्रह्मा बाप कहते थे ना - याद है क्या कहते थे? गुड़ जाने गुड़ की गोथरी जाने। शिव बाबा जाने और ब्रह्मा बाबा जाने क्योंकि बापदादा को तरस बहुत पड़ता है लेकिन ऐसे बच्चे बापदादा के रहम के संकल्प को टच नहीं कर सकते, कैच नहीं कर सकते। इसीलिए बापदादा ने कहा - भिन्न-भिन्न प्रकार का रॉयल अलबेलापन बाप देखते रहते हैं। आज बापदादा कह ही देते हैं कि तरस बहुत पड़ता है। कई बच्चे ऐसे समझते हैं कि सतयुग में तो पता ही नहीं पड़ेगा कौन क्या था, अभी तो मौज मना लो। अभी जो कुछ करना है कर लो। कोई रोकने वाला नहीं, कोई देखने वाला नहीं। लेकिन यह गलत है। सिर्फ बापदादा नाम नहीं सुनाते, नाम सुनायें तो कल ठीक हो जाएं।

आज धुरिया मना रहे हैं ना। धुरिये में एक-दो को जो भी होता है स्पष्ट दे देते हैं। तो समझा क्या करना है, पाण्डव समझा कि नहीं समझा! चल जायेगा? चलेगा नहीं क्योंकि बापदादा के पास हर एक की हर दिन की रिपोर्ट आती है। बाप-दादा आपस में भी रूहरूहान करते हैं। तो बापदादा सभी बच्चों को फिर से इशारा दे रहे हैं कि समय सब प्रकार से अति में जा रहा है। माया भी अपना अति का पार्ट बजा रही है, प्रकृति भी अपना अति का पार्ट बजा रही है। ऐसे समय पर ब्राह्मण बच्चों का अपने तरफ अटेन्शन भी अति अर्थात् मन-वचन-कर्म में अति में चाहिए। साधारण पुरुषार्थ नहीं। बापदादा ने इशारा दिया भी है कि ६६ वर्ष में अभी तक ६ लाख तैयार किये हैं। अभी ६ लाख भी नहीं हुए हैं। तो विश्व कल्याणी आत्मायें विश्व की सर्व आत्माओं का कल्याण कब करेंगे? और ६६ वर्ष चाहिए क्या? ६६ वर्ष और नहीं चाहिए? डबल फारेनर्स को चाहिए? नहीं चाहिए? तो क्या करेंगे? चलो आधा, ३३ वर्ष चाहिए? नहीं चाहिए। ३३ वर्ष भी नहीं चाहिए तो क्या करेंगे? वैसे बापदादा ने देखा है कि सेवा से लगन अच्छी है। सेवा के लिए एवररेडी हैं, चांस मिले तो प्यार से सेवा के लिए एवररेडी हैं। लेकिन अभी सेवा में एडीशन करो - वाणी के साथ-साथ मनसा, अपनी आत्मा को विशेष कोई-न-कोई प्राप्ति के स्वरूप में स्थित कर वाणी से सेवा करो।

मानो भाषण कर रहे हो तो वाणी से तो भाषण अच्छा करते ही हो लेकिन उस समय अपने आत्मिक स्थिति में विशेष चाहे शक्ति की, चाहे शान्ति की, चाहे परमात्म-प्यार की, कोई न कोई विशेष अनुभूति की स्थिति में स्थित कर मनसा द्वारा आत्मिक-स्थिति का प्रभाव वायुमण्डल में फैलाओ और वाणी से साथ-साथ सन्देश दो। वाणी द्वारा सन्देश दो, मनसा आत्मिक स्थिति द्वारा अनुभूति कराओ। भाषण के समय आपके बोल आपके मस्तक से, नयनों से, सूरत से उस अनुभूति की सीरत दिखाई दे कि आज भाषण तो सुना लेकिन परमात्म प्यार की बहुत अच्छी अनुभूति हो रही थी। जैसे भाषण की रिज़ल्ट में कहते हैं बहुत अच्छा बोला, बहुत अच्छा, बहुत अच्छी बातें सुनाई, ऐसे ही आपके आत्म-स्वरूप की अनुभूति का भी वर्णन करें। मनुष्य आत्माओं को वायुब्रेशन पहुँचे, वायुमण्डल बने। जब साइंस के साधन ठण्डा वातावरण कर सकते हैं, सबको महसूस होता है बहुत ठण्डाई अच्छी आ रही है। गर्म वायुमण्डल अनुभव करा सकते हैं। साइंस सर्दी में गर्मी का अनुभव करा सकती है, गर्मी में सर्दी का अनुभव करा सकती, तो आपकी साइन्स क्या प्रेम स्वरूप, सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप वायुमण्डल अनुभव नहीं करा सकती! यह रीसर्च करो। सिर्फ अच्छा-अच्छा किया लेकिन अच्छे बन जायें, तब समाप्ति के समय को समाप्त कर अपना राज्य लायेंगे। क्यों, आपको अपना राज्य याद नहीं आता? संगमयुग श्रेष्ठ है वह ठीक है, हीरे तुल्य है। लेकिन हे रहमदिल, विश्व कल्याणी बच्चे, अपने दुःखी अशान्त भाई बहनों पर रहम नहीं आता? उमंग नहीं आता, दुःखमय संसार को सुखमय बना दें, यह उमंग नहीं आता? दुःख देखने चाहते, दूसरों का दुःख देखकर भी रहम नहीं आता? आपके भाई हैं, आपकी बहिनें हैं तो दुःख देखना अच्छा लगता है? अपना दयालु, कृपालु स्वरूप इमर्ज करो। सिर्फ सेवा में नहीं लग जाओ, यह प्रोग्राम किया, यह प्रोग्राम किया... चलो वर्ष पूरा हुआ। अभी मर्सीफुल बनो। चाहे दृष्टि से, चाहे अनुभूति से, चाहे आत्मिक स्थिति के प्रभाव से, मर्सीफुल बनो। रहमदिल बनो। ६६ वर्ष समाप्त हो चुके

हैं। कम नहीं हैं ६६ वर्ष। ब्रह्मा बाप को अव्यक्त होते भी ३३ वर्ष हो गये हैं। ब्रह्मा बाप कब-कब कहते भी हैं, कब बच्चे आयेंगे, दरवाजा खोलने के लिए। तो घर का दरवाजा साथ में खोलेंगे या पीछे-पीछे आयेंगे? इन्तजार कर रहा है। तो सेवा में एडिशन करो। इससे बापदादा गैरन्टी दे रहे हैं कि थोड़े समय में अगर इस विधि से सेवा की तो आपके पास क्वालिटी की वर्षा हो जायेगी। वारिस क्वालिटी की बारिश पड़ेगी। इतनी मेहनत करने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी। कहना ही नहीं पड़ेगा - अभी यह कार्य होना है, इसमें सहयोगी बनो, नहीं। सहयोग की स्वयं आफर करने वाले होंगे। लेकिन साधारण पुरुषार्थ, साधारण विधि की सेवा को परिवर्तन करो। छिम-छिम होनी चाहिए। होनी तो है ही। सिर्फ अनुभूति कराने की विधि सोचो, सिर्फ भाषण और कोर्स कराने की नहीं, वह बहुत करा लिए। वर्गीकरण के प्रोग्राम भी बहुत कर लिये। जो आये उस पर छाप लगे, ६ लाख की छाप लग जाए। समझा। क्या करना है? कहते थे सर्विस का प्लैन सुनाना, कहा था ना? अभी कोई छिम-छिम करके दिखाओ। अभी धीमी चाल है। जैसे लक्ष्मी के लिए कहते हैं ना, दोनों हाथों से सम्पत्ति की छिम-छिम हो रही है, तो आप अभी श्रेष्ठ ब्राह्मण बन अनुभूतियों की छिम-छिम करो। लेकिन अनुभूति वह करा सकेंगे जो और व्यर्थ चिंतन, व्यर्थ दर्शन और व्यर्थ समय गंवाने वाले नहीं होंगे। आजकल थोड़ा-थोड़ा, बापदादा ने थोड़ा देखा है। वह भी सुनायें क्या? अच्छा आज सब सुना देते हैं। होली है ना! तो होली में बुरा नहीं मानते हैं। अच्छा।

बापदादा ने एक बात और भी देखी है, सुनाना अच्छा नहीं लगता। कभी-कभी कोई-कोई बच्चे, अच्छे-अच्छे भी दूसरों की बातों में बहुत पड़ते हैं। दूसरों की बातें देखना, दूसरों की बातें वर्णन करना... और देखते भी व्यर्थ बातें हैं। विशेषता एक दो की वर्णन करना, वह कम है। हर एक की

विशेषता देखना, विशेषता वर्णन करना, उनकी विशेषता द्वारा उनको उमंग-उत्साह दिलाना, यह कम है। लेकिन व्यर्थ बातें जिन बातों को, बापदादा कहते हैं छोड़ दो, अपनी तो छोड़ने की कोशिश करते, लेकिन दूसरे की देखने की भी आदत है। उसमें टाइम बहुत जाता है। बापदादा एक विशेष श्रीमत दे रहे हैं - है कामन बात लेकिन टाइम बहुत वेस्ट जाता है। बोल में निर्माण बनो। बोल में निर्माणता कम नहीं होनी चाहिए। भले साधारण शब्द बोलते हैं, समझते हैं, इसमें तो बोलना ही पड़ेगा ना! लेकिन निर्माणता के बजाए अगर कोई अथॉरिटी से, निर्माण बोल नहीं बोलते तो थोड़ा कार्य का, सीट का, <sup>२४</sup> परसेन्ट अभिमान दिखाई देता है। निर्माणता ब्राह्मणों के जीवन का विशेष श्रृंगार है। निर्माणता मन में, वाणी में, बोल में, सम्बन्ध-सम्पर्क में...हो। ऐसे नहीं तीन बातों में तो मैं निर्माण हूँ, एक में कम हूँ तो क्या हुआ! लेकिन वह एक कमी पास विद आनर होने नहीं देगी। निर्माणता ही महानता है। झुकना नहीं है, झुकाना है। कई बच्चे हंसी में ऐसे कह देते हैं क्या मुझे ही झुकना है, यह भी तो झुके। लेकिन यह झुकना नहीं है वास्तव में परमात्मा को भी अपने ऊपर झुकाना है, आत्मा की तो बात ही छोड़ो। निर्माणता निरंहकारी स्वतः ही बना देती है। निरंहकारी बनने का पुरुषार्थ करना नहीं पड़ता है। निर्माणता हर एक के मन में, आपके लिए प्यार का स्थान बना देती है। निर्माणता हर एक के मन से आपके प्रति दुआयें निकालेगी। बहुत दुआयें मिलेंगी। दुआयें, पुरुषार्थ में लिफ्ट से भी राकेट बन जायेंगी। निर्माणता ऐसी चीज़ है। कैसा भी कोई होगा, चाहे बिजी हो, चाहे कठोर दिल वाला हो, चाहे क्रोधी हो, लेकिन निर्माणता आपको सर्व द्वारा सहयोग दिलाने के निमित्त बन जायेगी। निर्माण, हर एक के संस्कार से स्वयं को चला सकता है। रीयल गोल्ड होने के कारण स्वयं को मोल्ड करने की विशेषता होती है। तो बापदादा ने देखा है कि बोल-चाल में भी, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी, सेवा में भी एक दो के साथ निर्माण स्वभाव विजय प्राप्त करा देता है। इसलिए इस वर्ष में विशेष बापदादा इस वर्ष को निर्माण, निर्मल वर्ष का नाम दे रहे हैं। वर्ष मनायेंगे ना। मनाना माना बनना। सिर्फ कहना नहीं, हाँ यह वर्ष है। बनना है। बनना है ना? बस ऐसे बोलो जो सब कहें और भी मोती

हमको सुनाओ, मोती दो। ऐसे नहीं कहें - नहीं, नहीं यह तो सुनो नहीं, जाओ। ऐसे नहीं। हीरे-मोती मुख से निकलें। अभिमान से बोलने से किसको दुःख क्यों देते हो! दुःख के खाते में जमा तो होगा ना। आप समझते हो क्या हुआ बोल दिया, ऐसे ही तो है। लेकिन दुःख के खाते में जमा होता है। समझा। इसीलिए एकाउन्ट रखना। ऐसे नहीं अभी तो एकाउन्ट दे दिया? रखने से फायदा है।

बापदादा ने देखा कइयों ने पुरुषार्थ अच्छा किया है। अटेन्शन दिया है। तो क्या याद रखेंगे? निर्माण। तब निर्माण का कर्त्तव्य फटाफट होगा। निर्माण बनो, निर्माण करो। फिर आपेही बोलेंगे, बाबा अभी तो छिम-छिम हो गई है। होनी ही है। सारे विश्व की आत्मायें अहो प्रभु कहके भी आपके आगे झुकनी हैं। तो सुना वर्ष की सेवा का सुनाया ना! अभी देखेंगे कौन-सा सेन्टर, कौन-सा ज़ोन, ज़ोन में भी कौन-सा सेन्टर इस विधि से वारिस निकालते हैं। अभी कोई वारिसों की छिम-छिम करो। वह होगी अनुभूति कराने से। सबसे बड़े ते बड़ी अथॉरिटी अनुभव है। अनुभवी को कोई बदल नहीं सकता। अच्छा।

डबल फारेनर्स को एक सेकण्ड में कोई भी व्यर्थ बात, कोई भी निगेटिव बात, कोई भी बीती बात, उसको मन से बिन्दी लगाना आता है? डबल फारेनर्स जो समझते हैं कि कैसी भी बीती हुई बात, अच्छी बात तो भूलनी है ही नहीं, भूलनी तो व्यर्थ बातें ही होती हैं। तो कोई भी बात जिसको भूलने चाहते हैं, उसको सेकेण्ड में बिन्दी लगा सकते हैं? जो फारेनर्स लगा सकते हैं, वह सीधा, लम्बा हाथ उठाओ। मुबारक हो। अच्छा, जो समझते हैं कि एक सेकण्ड में नहीं एक घण्टा तो लगेगा ही? सेकण्ड तो बहुत थोड़ा है ना! एक घण्टे के बाद बिन्दी लग सकती है, वह हाथ उठाओ। जो घण्टे में बिन्दी लगा सकते हैं, वह हाथ उठाओ। देखा, फारेनर्स तो बहुत अच्छे हैं। भारतवासी भी जो समझते हैं एक घण्टे में नहीं आधे दिन में बिन्दी लग सकती है, वह हाथ उठाओ। (कोई ने हाथ नहीं उठाया) हैं तो सही, बापदादा को पता है।



बापदादा तो देखता रहता है, हाथ नहीं उठाते, लेकिन लगता है। लेकिन समझो आधा दिन लगे, एक घण्टा लगे और आपको एडवांस पार्टी का निमन्त्रण आ जाए तो? तो क्या रिज़ल्ट होगी? अन्त मते सो गति क्या होगी? समझदार तो हो ना? इसलिए अपनी मनसा को बिज़ी रखेंगे ना, मनसा सेवा का टाइमटेबुल बनायेंगे अपना तो बिन्दी लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। बस, होंगे ही बिन्दी रूप। इसलिए अभी अपने मन का टाइमटेबुल फिक्स करो। मन को सदा बिज़ी रखो, खाली नहीं रखो। फिर मेहनत करनी पड़ती है। ऊँचे-ते-ऊँचे भगवन के बच्चे हो, तो आपका तो एक-एक सेकण्ड का टाइमटेबुल फिक्स होना चाहिए। क्यों नहीं बिन्दी लगती, उसका कारण क्या? ब्रेक पावरफुल नहीं है। शक्तियों का स्टॉक जमा नहीं है इसीलिए सेकण्ड में स्टॉप नहीं कर सकते। कई बच्चे कोशिश बहुत करते हैं, जब बापदादा देखते हैं मेहनत बहुत कर रहे हैं, यह नहीं हो, यह नहीं हो... कहते हैं नहीं हो लेकिन होता रहता है। बापदादा को बच्चों की मेहनत अच्छी नहीं लगती। कारण यह है, जैसे देखो रावण को मारते भी हैं, लेकिन सिर्फ मारने से छोड़ नहीं देते हैं, जलाते हैं और जलाके फिर हड्डियां जो हैं, वह आजकल तो नदी में डाल देते हैं। कोई भी मनुष्य मरता है तो हड्डियां भी नदी में डाल देते हैं तभी समाप्त होती है। तो आप क्या करते हो? ज्ञान की प्वाइंट्स से, धारणा की प्वाइंट्स से उस बात रूपी रावण को मार तो देते हो लेकिन योग अग्नि में स्वाहा नहीं करते हो। और फिर जो कुछ बातों की हड्डियां बच जाती हैं ना - वह ज्ञान सागर बाप के अर्पण कर दो। तीन काम करो - एक काम नहीं करो। आप समझते हो पुरुषार्थ तो किया ना, मुरली भी पढ़ी, नो बारी मुरली पढ़ी फिर भी आ गई क्योंकि आपने योग अग्नि में जलाया नहीं, स्वाहा नहीं किया। अग्नि के बाद नाम निशान गुम हो जाता है फिर उसको भी बाप सागर में डाल दो, समाप्त। इसलिए इस वर्ष में बापदादा हर बच्चे को व्यर्थ से मुक्त देखने चाहते हैं। मुक्त वर्ष मनाओ। जो भी कमी हो, उस कमी को मुक्ति दो, क्योंकि जब तक मुक्ति नहीं दी है ना, तो मुक्तिधाम में बाप के

साथ नहीं चल सकेंगे। तो मुक्ति देंगे? मुक्ति वर्ष मनायेंगे? जो मनायेगा वह ऐसे हाथ करे। मनायेंगे? एक-दो को देख लिया ना, मनायेंगे ना! अच्छा है। अगर मुक्ति वर्ष मनाया तो बापदादा जौहरातों से जड़ी हुई थालियों में बहुत-बहुत मुबारक, ग्रीटिंग्स, बधाइयाँ देंगे। अच्छा है, अपने को भी मुक्त करो। अपने भाई-बहनों को भी दुःख से दूर करो। बिचारों के मन से यह तो खुशी का आवाज निकले - हमारा बाप आ गया। ठीक है। अच्छा।

बाकी दादियां पूछती हैं - बापदादा का प्रोग्राम क्या होगा? यही क्वेश्चन है ना! तो बापदादा कहते हैं जैसे अब तक प्रोग्राम चल रहा है, उसी विधि से चलना ही है। बाकी कभी आवश्यकता हुई तो दादियों की दिल पूरी करेंगे, लेकिन आवश्यकता हुई तो। दादी समझती है बाप का आना तो बहुत सहज है ना। क्यों नहीं बापदादा आवे। लेकिन रथ को भी तो देखो। ३३ वर्ष पार्ट बजाना भी आफरीन है। इतनी बड़ी शक्तियों को धारण करना, छोटी बात नहीं है। दादी क्या करती है बतायें, कोई भी बात होगी कहेगी अभी-अभी जाओ, सन्देश लेके आओ। तो बच्ची कहती है दादी अभी तो दिन है, रात को जायेंगे। नहीं, नहीं, अभी-अभी जाओ। मरना तो पड़ता है ना। शरीर से तो मरना पड़ता है ना। चाहे सन्देश हो, चाहे बापदादा की पधरामनी हो। पधरामनी तो बड़ी बात है लेकिन सन्देश में भी अशरीरी, मीठा मरना है लेकिन मरना तो है ना! इसलिए फिर भी बापदादा का दादियों के लिए बहुत-बहुत-बहुत रिगार्ड और प्यार है। प्यार की रस्सी में बांधना अच्छी तरह से आता है। अच्छा।

### मीटिंग के भाई-बहनों से

जो भी मीटिंग के लिए आये हैं वह उठो। अच्छा। और भी आने वाले होंगे। मीटिंग में इसी विधि से सर्विस के प्लैन बनाना और मुक्त वर्ष मनाने की सहज विधि बताना - एक दो को राय देना। इस वर्ष में सब मुक्त हो जाएं। हो सकता है? एक वर्ष में हो सकता है? बोलो, हो सकता है? हाँ तो

बहुत अच्छी कर रहे हैं, दिल खुश कर दिया। ऐसे ही खुश करना। बस हर एक अपने को मुक्त करो, दूसरे को नहीं देखो। अपनी जिम्मेवारी तो ले सकते हो ना। अगर हर एक ने अपनी-अपनी जिम्मेवारी ले ली तो सब हो जायेगा। आपको फालो करने वाले आपेही फालो करेंगे। एक्जैम्पुल तो बनो ना। अच्छा। तो ऐसा प्लैन बनाना। यह कान्फ्रेन्स हुई, यह भाषण हुआ, यह नहीं। मन की स्थिति के प्रोग्राम बनाना। अच्छा।

**सेवा का टर्न - राजस्थान, इन्दौर का है** – सेवाधारी बहुत हैं। ग्रुप भी बड़ा है ना! अच्छा सभी ने अपने पुण्य का खाता जमा किया! दुआयें ली? यह बहुत सहज विधि है, जमा करने में सबसे सहज विधि है, दुआयें दो अर्थात् दुआयें लो। दुआयें देना ही दुआ लेना है। तो आप सबने दुआओं का खाता जमा किया, तो आपके खाते में मार्क्स जमा हो गई हैं। अच्छा है, यह भी एक चांस मिलता है। तो पहले सुनाया था ना - वह होते हैं युनिवर्सिटी के चांसलर, आप हो पुण्य के खाते का चांस लेने वाले चांसलर। तो बहुत अच्छा किया। सभी ने अच्छी सेवा की। सबको सुख दिया। ठीक रहे ना! सेवा ठीक रही? सेवा में कोई तकलीफ तो नहीं हुई? नहीं। बहुत अच्छा।

### **कल्चरल विंग, सोशल विंग और सिक्वूरिटी विंग की मीटिंग चल रही है**

**कल्चरल वर्ग** – कल्चरल वर्ग वाले सभी कल्चरल करने वाली आत्माओं को ब्राह्मण कल्चर भी सिखाते हो ना! तो कल्चरल और कल्चर दोनों ही सिखाते सभी आत्माओं को बाप के समीप लाते रहो। कल्चरल तो मनोरंजन है, तो सदा मनोरंजन कैसे रहे, वह शिक्षा वा वह विधि भी सिखाके सभी को सदा खुश बनाना। अच्छा है यह भी सर्विस का साधन अच्छा है। लेकिन दोनों साथ-साथ हों। तो सब सेवा में सन्तुष्ट हो ना! सन्तुष्ट हो?

**सिक्वूरिटी वाले** – मन की सिक्वूरिटी, तन की सिक्वूरिटी और धन की सिक्वूरिटी तीनों ही सिक्वूरिटी आज के जमाने में बहुत आवश्यक हैं।

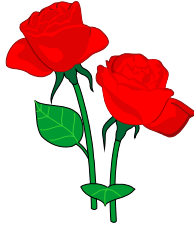
सिक्कूरिटी वालों को पहले आत्माओं को मन से विकारों की सिक्कूरिटी और तन से बुरे कर्म करने की सिक्कूरिटी और धन को सफल करने की सिक्कूरिटी.. तो तीनों ही काम करते हो ना! या सिर्फ सिक्कूरिटी स्थूल तो नहीं करते ना, पहले मन की सिक्कूरिटी, जितनी अपने मन की सिक्कूरिटी होगी, उतनी ही दूसरे को भी मन की सिक्कूरिटी में आगे बढ़ा सकेंगे। अच्छा काम है, बहुत आवश्यक कार्य है। सिक्कूरिटी सबसे आवश्यक है और ऐसे सिक्कूरिटी वाले तो विश्व के लिए बहुत कल्याणकारी आत्मायें हैं। तो बहुत अच्छा कार्य कर रहे हो और सदा आगे बढ़ते रहना, बढ़ाते रहना। अच्छा।

**सोशल वर्ग** – हर वर्ग का कार्य तो बहुत सुन्दर है। वर्तमान समय में सोशल वर्ग का कार्य भी आवश्यक है। और सोशल वर्कर में विशेषता होती अथक और प्यार से हर कार्य में सोशल वर्क करना। तो आप तो मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, इसलिए अथक भी हैं और हर कार्य में हर विधि से सोशल वर्ग द्वारा आत्माओं का कल्याण कर भी रहे हैं और करते भी रहेंगे। ठीक है ना? बहुत अच्छा। अभी हर एक वर्ग जो बापदादा ने विधि सुनाई उसी विधि प्रमाण प्रोग्राम बनाना। ठीक है ना! अच्छा।

चारों ओर के सर्व होलीएस्ट आत्माओं को, सदा निर्माण बन निर्माण करने वाले बापदादा के समीप आत्माओं को, सदा अपने पुरुषार्थ की विधि को फास्ट, तीव्र कर सम्पन्न बनने वाले स्नेही आत्माओं को, सदा अपने बचत का खाता बढ़ाने वाले तीव्र पुरुषार्थी, तीव्र बुद्धि वाले बच्चों को विशाल बुद्धि की मुबारक भी है और होली की भी अर्थात् सेकण्ड में हो ली, बिन्दी लगाने वाले बच्चों को बहुत-बहुत याद-प्यार, कोने-कोने के बच्चों को बापदादा विशेष याद-प्यार दे रहे हैं। आपके पोतामेल भी मिले हैं, याद-प्यार के पत्र भी मिले हैं, कार्ड भी मिले हैं और दिल के संकल्प भी पहुँचे हैं, दिल की रूहरूहान भी पहुँची है, उन सबके रिटर्न में बापदादा पदमगुणा याद-प्यार दे रहे हैं। याद-प्यार के साथ सभी बच्चों को नमस्ते।

**दादियों से बापदादा की मुलाकात**

अभी भी जितना नजदीक से आप मिलते हो, उतना कौन मिलता है! (निर्मलशान्ता दादी से) अच्छा पार्ट बजा रही हो। प्रकृति को चलाने का ढंग अच्छा है। (बाबा चलाता है) और आप चल रही हो। चलाने वाला चला रहा है। सभी अच्छे चल रहे हैं। शरीर को अच्छा चलाने का ढंग आ गया है। अच्छा है, जो हो रहा है अच्छा है। अच्छा। ओम् शान्ति।



## आत्मिक प्यार की मूर्ति बन शिक्षा और सहयोग साथ-साथ दो

(विशेष मधुवन निवासी भाई-बहनों से मुलाकात)

आज प्यार के सागर बापदादा अपने मास्टर ज्ञान सागर बच्चों से मिलन मना रहे हैं। ये परमात्म प्यार बच्चों की पालना का आधार है। जैसे परमात्म प्यार ब्राह्मण जीवन का आधार है, ऐसे ही ब्राह्मण संगठन का आधार आत्मिक प्यार है। जो आत्मिक प्यार आप बच्चे ही अनुभव कर सकते हो। आज के विश्व की आत्मायें इस सच्चे, निःस्वार्थ आत्मिक-परमात्म प्यार की प्यासी हैं। ऐसा सच्चा प्यार सिवाए आप ब्राह्मण आत्माओं के किसी को प्राप्त नहीं हो सकता। प्यासी आत्माओं की प्यास पूर्ण करने वाले अपने को हर समय परमात्म प्यार वा आत्मिक प्यार में समाये हुए अनुभव करते हो? प्यार के दाता व देवता सदा रहे हो? चलते-फिरते आत्मिक प्यार की वृत्ति, दृष्टि, बोल, सम्बन्ध-सम्पर्क अर्थात् कर्म अनुभव करते हो? कैसी भी आत्मा हो लेकिन आप ब्राह्मणों की नेचुरल वृत्ति, ब्राह्मण नेचर बन गयी है? बनानी पड़ती है या बन गयी है? फ़ालो फ़ादर, फ़ालो मदर। अपने ब्राह्मण जन्म के आदि समय को याद करो। भिन्न-भिन्न नेचर वाले बाप के बने। प्यार के सागर बाप ने एक ही प्यार के सागर के स्वरूप की अनादि नेचर से अपना बना लिया ना! अगर आप सबकी भिन्न-भिन्न नेचर देखते तो अपना बना सकते? तो अपने से पूछो, मेरी नेचुरल नेचर क्या है? किसी की भी कमजोर नेचर; वास्तव में ब्राह्मण जीवन की नेचुरल नेचर मास्टर प्रेम का सागर है। जब दुनिया वाले भी कहते हैं कि प्यार पत्थर को भी पानी करता है, तो आत्मिक प्यार, परमात्म प्यार ले के देने वाले, भिन्न-भिन्न नेचर को परिवर्तन नहीं कर सकते? कर सकते है या नहीं? पीछे वाले बोलो? जो समझते हैं कर सकते हैं वो एक हाथ उठाओ। बड़ा हाथ उठाओ, छोटा नहीं। (सभी ने हाथ उठाया) अच्छा मुबारक हो! फिर

सरकमस्टान्स आते हैं। सरकमस्टान्स तो आने ही हैं। ये तो ब्राह्मण जीवन के रास्ते के साइडसीन्स हैं। और साइडसीन कभी एक जैसे नहीं होते हैं। कोई सुन्दर भी होती है, कोई गन्दगी की भी होती है। लेकिन पार करना राह्री का काम है, ना कि साइडसीन बदलने की बात है। तो बापदादा क्या चाहते हैं! सब जानने में तो होशियार हो गये हो ना।

आज मधुबन निवासियों को विशेष चान्स मिला है। गोल्डन चान्स है ना। अच्छा। इस गोल्डन चान्स का रिटर्न क्या? बड़े उमंग-उत्साह से चान्स लिया है। वैसे नीचे बैठने वाले भी मधुबन निवासी हैं (मधुबन निवासी भाई-बहनों के अलावा अन्य सभी पाण्डव भवन में मुरली सुन रहे हैं) लेकिन आज सिर्फ ग्रुप-ग्रुप को मिलने का चान्स है। इतना इकट्ठा तो दूर-दूर हो जाते हैं। इसलिए थोड़े-थोड़े भाग बनाये हैं। बाकी हैं सभी मधुबन निवासी। जब सेन्टर पर रहने वालों की भी परमानेन्ट एड्रेस मधुबन ही है ना, तो ब्राह्मण अर्थात् परमानेन्ट एड्रेस मधुबन। घर मधुबन है बाकी सेवा स्थान हैं। तो नीचे वाले ऐसे नहीं समझें कि आज हमको मधुबन निवासियों से निकाल लिया है। नहीं, आप सब मधुबन निवासी हैं। सिर्फ आपको सामने बापदादा देखने चाहते हैं। तो छोटे ग्रुप में देख सकते हैं। अभी देखो, पीछे देखने वाले भी इतने स्पष्ट नहीं दिखाई देते हैं, ये नजदीक वाले स्पष्ट दिखाई देते हैं। लेकिन पीछे वाले दिल से दूर नहीं हैं। नीचे वाले भी दिल से दूर नहीं हैं। तो बापदादा यही चाहते हैं कि वर्तमान समय प्रमाण लव और लॉ का बैलेन्स रखना पड़ता है, लेकिन लॉ और लव का बैलेन्स मिलकरके लॉ नहीं लगे। लॉ में भी लव महसूस हो। जैसे साकार स्वरूप में बाप को देखा। लॉ के साथ लव इतना दिया जो हरेक के मुख से यही निकलता कि बाबा का मेरे से प्यार है। मेरा बाबा है। लॉ ज़रूर उठाओ लेकिन लॉ के साथ लव भी दो। सिर्फ लॉ नहीं। सिर्फ लॉ से कहीं-कहीं आत्मायें कमजोर होने के कारण दिलशिकस्त हो जाती हैं। जब स्वयं आत्मिक प्यार की मूर्ति बनेंगे तब दूसरों के प्यार की, (आत्मिक प्यार, दूसरा प्यार नहीं) आत्मिक प्यार अर्थात् हर समस्या को

हल करने में सहयोगी बनना। सिर्फ शिक्षा देना नहीं, शिक्षा और सहयोग साथ-साथ देना – ये है आत्मिक प्यार की मूर्ति बनना। तो आज विशेष बापदादा हर ब्राह्मण आत्मा को, चाहे देश, चाहे विदेश चारों ओर के सर्व बच्चों को यही विशेष अण्डरलाइन करते हैं कि आत्मिक प्यार की मूर्ति बनो। और आत्माओं के आत्मिक प्यार की प्यास बुझाने वाले दाता-देवता बनो। ठीक है ना! अच्छा।

(फिर बापदादा ने मधुबन वालों से चिटचैट की तथा सभी को नज़र से निहाल करते दृष्टि दी)।

## हॉस्पिटल, आबू निवासी तथा पार्टियों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

सभी अपने को खुशनसीब समझते हो? सारे विश्व में सबसे बड़े ते बड़ा नसीब किसका है? हरेक क्या समझते हैं कि सबसे बड़े ते बड़ा नसीब मेरा है! हर एक ऐसा समझते हैं? जब खुशनसीब हैं तो खुश रहते हैं? सदा खुश रहते हैं? कभी-कभी तो नहीं ना! जब बापदादा ने भाग्य का सितारा चमका दिया तो चमकते हुए सितारे को देख खुश रहते हो? दिल में सदा खुशी के बाजे बजते हैं। बजते हैं? कौन सा गीत दिल गाती है? “वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य” – यह गीत गाते हो? सारा कल्प आपके भाग्य का गायन होता रहता है। आधाकल्प भाग्य की प्रालम्भ भोगते हो और आधा कल्प आपके भाग्य का गायन अनेक आत्मायें गाती रहती हैं। सबसे विशेष बात है कि बाप को सारे विश्व में से कौन पसन्द आया? आप पसन्द आये ना! कितनी आत्मायें हैं लेकिन आप ही पसन्द आये। जिसको भगवान ने पसन्द कर लिया, उससे ज्यादा क्या होगा! तो सदा बाप के साथ अपना भाग्य भी याद रखो। भगवान और भाग्य। सारे कल्प में ऐसी कोई आत्मा होगी जिसको रोज़ याद प्यार मिले, प्रभु प्यार मिले। रोज़ यादप्यार मिलता है ना। सबसे ज्यादा लाडले कौन हैं? आप ही लाडले हो ना। तो सदा अपने भाग्य को याद करने से व्यर्थ बातें भाग जायेंगी। भगाना नहीं पड़ेगा, सहज ही भाग जायेंगी।



अभी वर्तमान समय के प्रमाण संगमयुग के समय का महत्त्व समझकर हर सेकण्ड अपनी प्रालम्ब्य श्रेष्ठ बनाते रहो। एक सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं जाये क्योंकि एक-एक सेकण्ड का बहुत बड़ा महत्त्व है। सेकण्ड नहीं जाता लेकिन बहुत समय जाता है और यह समय फिर नहीं मिलना है। समय का परिचय है ना - अच्छी तरह से। स्मृति में रहता है? देखो, आज आप सबको स्पेशल टाइम मिला है ना। अगर इकट्टे आते तो दिखाई भी नहीं देते। अभी देख तो रहे हैं कौन-कौन हैं। सब विशेष आत्मायें हो। सिर्फ अपनी विशेषता को जान विशेषता को कार्य में लगाओ। ड्रामा अनुसार हर ब्राह्मण आत्मा को कोई न कोई विशेषता प्राप्त है। ऐसा कोई नहीं है जिसमें कोई विशेषता नहीं हो। तो अपनी विशेषता को सदा स्मृति में रखो और उसको सेवा में लगाओ। हरेक की विशेषता, उड़ती कला की बहुत तीव्र विधि बन जायेगी। सेवा में लगाना, अभिमान में नहीं आना क्योंकि संगम पर हर विशेषता ड्रामा अनुसार परमात्म देन है। परमात्म देन में अभिमान नहीं आयेगा। जैसे प्रसाद होता है ना उसको कोई अपना नहीं कहेगा कि मेरा प्रसाद है, प्रभु प्रसाद है। ये विशेषतायें भी प्रभु प्रसाद हैं। प्रसाद सिर्फ अपने प्रति नहीं यूज किया जाता है, बांटा जाता है। बांटते हो, महादानी हो, वरदानी भी हो। पाण्डव भी वरदानी, महादानी हैं, शक्तियां भी महादानी हैं? एक दो घण्टे के महादानी नहीं, खुला भण्डार। इसीलिए बाप को भोला भण्डारी कहते हैं, खुला भण्डार है ना। आत्माओं को अंचली देते जाओ, कितनी बड़ी लाइन हैं भिखारियों की। और आपके पास कितना भरपूर भण्डार है? अखुट भण्डार है, खुटने वाला है क्या? बांटने में एकानामी तो नहीं करते? इसमें फ्राख दिली से बांटो। व्यर्थ गंवाने में एकानामी करो लेकिन बांटने में खुली दिल से बांटो।

सभी खुश हैं? कभी-कभी थोड़ा-थोड़ा होता है। कभी मूड आफ, कभी मूड बहुत खुश ऐसे तो नहीं ना। फ़ालो फ़ादर, बापदादा मूड आफ करता है क्या? तो फ़ालो फ़ादर हैं ना। बापदादा के पास स्पेशल ब्राह्मण बच्चों के लिए टी.वी. है, उसमें सबकी भिन्न-भिन्न मूड आती है। कितना मजा आता

होगा देखने में! सदा महादानी बनने वाले की मूड बदलती नहीं है। दाता हैं ना, देते जाओ। देवता बनने वाले माना देने वाले। लेवता नहीं देवता। कितने बार देवता बने हो, अनेक बार बने हो ना। तो देवता अर्थात् देने के संस्कार वाले। कोई कुछ भी दे लेकिन आप सुख की अंचली, शान्ति की अंचली प्रेम की अंचली दो। लोगों के पास है ही दुःख अशान्ति तो क्या देंगे वो ही देंगे ना। और आपके पास क्या है - सुख-शान्ति। सब ठीक है ना! अच्छा! मिलन मनाया, ऐसे तो नहीं समझते हम तो पीछे आये। स्पेशल आये हो। नजदीक तो मधुबन के रह रहे हो। मधुबन का घेराव तो अच्छा किया है।

हॉस्पिटल वाले भी सेवा अच्छी कर रहे हैं। शान्तिवन के भी बहुत हैं। पार्टी वाले सिकीलधे हैं। थोड़े हैं इसलिए सिकीलधे हैं। फारेनर्स के बिना भी शोभा नहीं है, इसलिए हर ग्रुप में अपनी शोभा बढ़ाने अच्छा आ जाते हैं।  
अच्छा -

## सेवाधारियों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

सभी सेवा के निमित्त अपना भाग्य बनाने वाले हो क्योंकि इस यज्ञ सेवा का पुण्य बहुत बड़ा है। तन से सेवा तो करते हो लेकिन मन से भी सेवा करते रहो, तो डबल पुण्य हो जाता है। मन्सा सेवा और तन की सेवा। जो भी आते हैं सेवाधारियों की सेवा से वायुमण्डल में देख करके अपना लाभ लेकर जाते हैं। तो जितने भी आते हैं सेवा के समय, उतनी आत्माओं का पुण्य या दुआयें जमा हो जाती हैं। ऐसे सेवा करते हो, तन से भी और मन से भी। डबल सेवाधारी हो या सिंगल, कौन हो? डबल। डबल करते हो? सेवा का प्रत्यक्षफल भी मिलता रहता है। जितना समय रहते हो, एक्स्ट्रा खुशी मिलती है ना! तो प्रत्यक्ष फल भी खाते हो, दुआयें भी जमा होती है, भविष्य भी बना और वर्तमान भी बना। बापदादा को भी खुशी होती है कि बच्चे अपनी प्रालब्ध बहुत सहज और श्रेष्ठ बना रहे हैं। बस सेवा, सेवा और सेवा। और किसी बातों में नहीं जाना। सेवा अर्थात् जमा करना। जितना भी समय मिलता है तो डबल कमाई करो। प्रत्यक्षफल भी, भविष्य भी। सेवा का चांस

भी आप आत्माओं को प्राप्त है। सेवाधारियों से बापदादा का विशेष प्यार होता है क्योंकि बापदादा भी विश्व का सेवक है। तो समान हो गये ना! मन को बिज़ी रखते हो या खाली रखते हो? मधुबन अर्थात् याद और सेवा। चलते-फिरते मन याद में या सेवा में बिज़ी रहे। सभी खुश रहते हो? कभी-कभी वाले तो नहीं हो? सदा खुश रहने वाले। आपकी खुशी को देख दूसरे भी खुश हो जाते है। सेवाधारियों को भी टर्न मिला, खुश हो ना! टर्न मिला ना विशेष? मधुबन वालों के निमित्त आपका भी गोल्डन चांस हो गया। स्वयं सदा स्वमान में रह उड़ते रहो। स्वमान को कभी नहीं छोड़ो, चाहे झाड़ू लगा रहे हो लेकिन स्वमान क्या है? विश्व की सर्व आत्माओं में श्रेष्ठ आत्मा हूँ। तो अपना रूहानी स्वमान कोई भी काम करते भूलना नहीं। नशा रहता है ना, रूहानी नशा। हम किसके बन गये! भाग्य याद रहता है ना? भूलते तो नहीं हो? जितना भी समय सेवा के लिए मिलता है उतना समय एक-एक सेकण्ड सफल करो। व्यर्थ नहीं जाए, साधारण भी नहीं। रूहानी नशे में, रूहानी प्राप्तियों में समय जाए। ऐसा लक्ष्य रखते हो ना। अच्छा।

ओम् शान्ति।



## ब्राह्मण जीवन का आधार - प्युरिटी की रॉयल्टी

आज स्नेह का सागर अपने स्नेही बच्चों को देख रहे हैं। चारों ओर के स्नेही बच्चे रूहानी सूक्ष्म डोरी में बंधे हुए अपने स्वीट होम में पहुंच गये हैं। जैसे बच्चे स्नेह से खिंचकर पहुंच गये हैं वैसे बाप भी बच्चों के स्नेह की डोर में बंधा हुआ बच्चों के सम्मुख पहुंच गये हैं। बापदादा देख रहे हैं कि चारों ओर के बच्चे भी दूर बैठे भी स्नेह में समाये हुए हैं। सम्मुख के बच्चों को भी देख रहे हैं और दूर बैठे हुए बच्चों को भी देख देख हर्षित हो रहे हैं। ये रूहानी अविनाशी स्नेह, परमात्म स्नेह, आत्मिक स्नेह सारे कल्प में अभी अनुभव कर रहे हो।

बापदादा हर एक बच्चे की पवित्रता की रॉयल्टी देख रहे हैं। ब्राह्मण जीवन की रॉयल्टी है ही प्युरिटी। तो हर एक बच्चे के सिर पर रूहानी रॉयल्टी की निशानी प्युरिटी की लाइट का ताज देख रहे हैं। आप सभी भी अपने प्युरिटी का ताज, रूहानी रॉयल्टी का ताज देख रहे हो? पीछे वाले भी देख रहे हो? कितनी शोभनिक ताजधारी सभा है। है ना पाण्डव? ताज चमक रहा है ना! ऐसी सभा देख रहे हो ना! कुमारियां, ताजधारी कुमारियां हो ना! बापदादा देख रहे हैं कि बच्चों की रायल फैमिली कितनी श्रेष्ठ है! अपने अनादि रॉयल्टी को याद करो, जब आप आत्मायें परमधाम में भी रहती हो तो आत्मा रूप में भी आपकी रूहानी रॉयल्टी विशेष है। सर्व आत्मायें भी लाइट रूप में हैं लेकिन आपकी चमक सर्व आत्माओं में श्रेष्ठ है। याद आ रहा है परमधाम? अनादि काल से आपकी झलक फलक न्यारी है। जैसे आकाश में देखा होगा सितारे सभी चमकते हैं, सब लाइट ही हैं लेकिन सर्व सितारों में कोई विशेष सितारों की चमक न्यारी और प्यारी होती है। ऐसे ही सर्व आत्माओं के बीच आप आत्माओं की चमक रूहानी रॉयल्टी, प्युरिटी की चमक न्यारी है। याद आ रहा है ना? फिर आदिकाल में आओ, आदिकाल को याद करो तो आदिकाल में भी देवता स्वरूप में रूहानी रॉयल्टी की पर्सनालिटी कितनी विशेष रही? सारे कल्प में देवताई

स्वरूप की रॉयल्टी और किसी की रही है? रूहानी रॉयल्टी, प्युरिटी की पर्सनाल्टी याद है ना! पाण्डवों को भी याद है? याद आ गया? फिर मध्यकाल में आओ तो मध्यकाल द्वापर से लेकर आपके जो पूज्य चित्र बनाते हैं, उन चित्रों की रॉयल्टी और पूजा की रॉयल्टी द्वापर से अभी तक किसी चित्र की है? चित्र तो बहुतों के हैं लेकिन ऐसे विधि पूर्वक पूजा और किसी आत्माओं की है? चाहे धर्म पितायें हैं, चाहे नेतायें हैं, चाहे अभिनेतायें हैं, चित्र तो सबके बनते लेकिन चित्रों की रॉयल्टी और पूजा की रॉयल्टी किसी की देखी है? डबल फारेनर्स ने अपनी पूजा देखी है? आप लोगों ने देखी है या सिर्फ सुना है? ऐसे विधिपूर्वक पूजा और चित्रों की चमक, रूहानियत और किसकी भी नहीं हुई है, न होगी। क्यों? प्युरिटी की रॉयल्टी है। प्युरिटी की पर्सनाल्टी है। अच्छा देख लिया अपनी पूजा? नहीं देखी हो तो देख लेना। अभी लास्ट में संगमयुग पर आओ तो संगम पर भी सारे विश्व के अन्दर प्युरिटी की रॉयल्टी ब्राह्मण जीवन का आधार है। प्युरिटी नहीं तो प्रभु प्यार का अनुभव भी नहीं। सर्व परमात्म प्राप्तियों का अनुभव नहीं। ब्राह्मण जीवन की पर्सनाल्टी प्युरिटी है और प्युरिटी ही रूहानी रॉयल्टी है। तो आदि अनादि, आदि मध्य और अन्त सारे कल्प में यह रूहानी रॉयल्टी चलती रही है।

तो अपने आपको देखो - दर्पण तो आप सबके पास है ना? दर्पण है? देख सकते हो? तो देखो। हमारे अन्दर प्युरिटी की रॉयल्टी कितने परसेन्ट में है? हमारे चेहरे से प्युरिटी की झलक दिखाई देती है? चलन में प्युरिटी की फलक दिखाई देती है? फलक अर्थात् नशा। चलन में वह फलक अर्थात् रूहानी नशा दिखाई देता है? देख लिया अपने को? देखने में कितना समय लगता है? सेकण्ड ना? तो सभी ने देखा अपने को?

**कुमारियां** - झलक फलक है? अच्छा है, सभी उठो, खड़े हो जाओ। (कुमारियां लाल पट्टा लगाकर बैठी हैं, जिस पर लिखा है एकव्रता) सुन्दर लगता है ना। एकव्रता का अर्थ ही है प्युरिटी की रॉयल्टी। तो एकव्रता का पाठ पक्का कर लिया है! वहाँ जाकर कच्चा नहीं कर लेना। और कुमार

ग्रुप उठो। कुमारों का ग्रुप भी अच्छा है। कुमारों ने दिल में प्रतिज्ञा का पट्टा बांध लिया है, इन्होंने (कुमारियों ने) तो बाहर से भी बांध लिया है। प्रतिज्ञा का पट्टा बांधा है कि सदा अर्थात् निरन्तर प्युरिटी की पर्सनाल्टी में रहने वाले कुमार हैं। ऐसे हैं? बोलो, जी हाँ। ना जी या हाँ जी? या वहाँ जाकर पत्र लिखेंगे थोड़ा-थोड़ा ढीला हो गया! ऐसे नहीं करना। जब तक ब्राह्मण जीवन में जीना है तब तक सम्पूर्ण पवित्र रहना ही है। ऐसा वायदा है? पक्का वायदा है तो हाथ हिलाओ। टी.वी. में आपके फोटो निकल रहे हैं। जो ढीला होगा ना उसको यह चित्र भेजेंगे। इसलिए ढीला नहीं होना, पक्का रहना। हाँ पक्के हैं, पाण्डव तो पक्के होते हैं। पक्के पाण्डव, बहुत अच्छा।

प्युरिटी की वृत्ति है - शुभ भावना, शुभ कामना। कोई कैसा भी हो लेकिन पवित्र वृत्ति अर्थात् शुभ भावना, शुभ कामना और पवित्र दृष्टि अर्थात् सदा हर एक को आत्मिक रूप में देखना वा फ़रिश्ता रूप में देखना। तो वृत्ति, दृष्टि और तीसरा है कृति अर्थात् कर्म में, तो कर्म में भी सदा हर आत्मा को सुख देना और सुख लेना। यह है प्युरिटी की निशानी। वृत्ति, दृष्टि और कृति तीनों में यह धारणा हो। कोई क्या भी करता है, दुःख भी देता है, इन्सल्ट भी करता है, लेकिन हमारा कर्तव्य क्या है? क्या दुःख देने वाले को फ़ालो करना है या बापदादा को फ़ालो करना है? फ़ालो फ़ादर है ना! तो ब्रह्मा बाप ने दुःख दिया वा सुख दिया? सुख दिया ना! तो आप मास्टर ब्रह्मा अर्थात् ब्राह्मण आत्माओं को क्या करना है? कोई दुःख देवे तो आप क्या करेंगे? दुःख देंगे? नहीं देंगे? बहुत दुःख देवे तो? बहुत गाली देवे, बहुत इन्सल्ट करे, तो थोड़ा तो फील करेंगे या नहीं? कुमारियां फील करेंगी? थोड़ा। तो फ़ालो फ़ादर। यह सोचो मेरा कर्तव्य क्या है! उसका कर्तव्य देख अपना कर्तव्य नहीं भूलो। वह गाली दे रहा है, आप सहनशील देवी, सहनशील देव बन जाओ। आपकी सहनशीलता से गाली देने वाले भी आपको गले लगायेंगे। सहनशीलता में इतनी शक्ति है, लेकिन थोड़ा समय सहन करना पड़ता है। तो सहनशीलता के देव वा देवियां हो ना? हो? सदा यही स्मृति रखो - मैं

सहनशील का देवता हूँ, मैं सहनशीलता की देवी हूँ। तो देवता अर्थात् देने वाला दाता, कोई गाली देता है, रिस्पेक्ट नहीं करता है तो किचड़ा है ना कि अच्छी चीज़ है? तो आप लेते क्यों हो? किचड़ा लिया जाता है क्या? कोई आपको किचड़ा देवे तो आप लेंगे? नहीं लेंगे ना। तो रिस्पेक्ट नहीं करता, इन्सल्ट करता, गाली देता, आपको डिस्टर्व करता, तो यह क्या है? अच्छी चीज़ें हैं। फिर आप लेते क्यों हो? थोड़ा-थोड़ा तो ले लेते हो, पीछे सोचते हो नहीं लेना था। तो अभी लेना नहीं। लेना अर्थात् मन में धारण करना, फील करना। तो अपने अनादिकाल, आदिकाल, मध्यकाल, संगम काल, सारे कल्प के प्युरिटी की रॉयल्टी, पर्सनाल्टी याद करो। कोई क्या भी करे आपकी पर्सनाल्टी को कोई छीन नहीं सकता। यह रूहानी नशा है ना? और डबल फारेनर्स को तो डबल नशा है ना! डबल नशा है ना? सब बात का डबल नशा। प्युरिटी का भी डबल नशा, सहनशील देवी-देवता बनने का भी डबल नशा। है ना डबल? सिर्फ अमर रहना। अमर भव का वरदान कभी नहीं भूलना।

अच्छा - जो प्रवृत्ति वाले हैं अर्थात् युगल, वैसे सिंगल रहते हैं, कहने में युगल आता है, वह उठो। खड़े हो जाओ। युगल तो बहुत हैं, कुमार, कुमारियां तो थोड़े हैं। कुमारों से तो युगल बहुत हैं। तो युगल मूर्त बापदादा ने आप सबको प्रवृत्ति में रहने के लिए डायरेक्शन क्यों दिया है? आपको युगल रहने की छुट्टी क्यों दी है? प्रवृत्ति में रहने की छुट्टी क्यों दी है, जानते हो? क्योंकि युगल रूप में रहते इन महामण्डलेश्वरों को आपको पांव में झुकाना है। है इतनी हिम्मत? यह लोग कहते हैं कि साथ रहते पवित्र रहना मुश्किल है और आप क्या कहते हो? मुश्किल है या सहज है? (बहुत सहज है) पक्का है? या कभी इज़ी, कभी लेजी? इसलिए बापदादा ने ड्रामानुसार आप सबको दुनिया के आगे, विश्व के आगे एगज़ैम्पुल बनाया है। चैलेन्ज करने के लिए। तो प्रवृत्ति में रहते भी निवृत्त, अपवित्रता से निवृत्त रह सकते हो? तो चैलेन्ज करने वाले हो ना? सभी चैलेन्ज करने वाले हो, थोड़ा-थोड़ा डरते

तो नहीं हो, चैलेन्ज तो करें लेकिन पता नहीं क्या हो! तो चैलेन्ज करो विश्व को क्योंकि नई बात यही है कि साथ रहते भी स्वप्न मात्र भी अपवित्रता का संकल्प नहीं आये, यही संगमयुग के ब्राह्मण जीवन की विशेषता है। तो ऐसे विश्व के शोकेस में आप एगजैम्पुल हो, सैम्पुल कहो एगजैम्पुल कहो। आपको देख करके सबमें ताकत आयेगी हम भी बन सकते हैं। ठीक है ना? शक्तियां ठीक है? पक्के हो ना? कच्चे पक्के तो नहीं? पक्के। बापदादा भी आपको देख करके खुश है। मुबारक हो। देखो कितने हैं? बहुत अच्छे।

बाकी रही टीचर्स। टीचर्स के बिना तो गति नहीं। टीचर्स उठो। अच्छा - पाण्डव भी अच्छे-अच्छे हैं। वाह! टीचर्स की विशेषता है कि हर टीचर के फीचर से फ्युचर दिखाई दे। या हर एक टीचर के फीचर्स से फ़रिश्ता स्वरूप दिखाई दे। ऐसे टीचर्स हो ना! आप फ़रिश्तों को देखकर और भी फरिश्ते बन जायें। देखो कितने टीचर्स हैं। फारेन ग्रुप में टीचर्स बहुत हैं। अभी तो थोड़े आये हैं। जो नहीं आये हैं उनको भी बापदादा याद कर रहे हैं। अच्छा है, अभी टीचर्स मिलकरके यह प्लैन बनाओ कि अपने चलन और चेहरे से बाप को प्रत्यक्ष कैसे करें? दुनिया वाले कहते हैं परमात्मा सर्वव्यापी है और आप कहते हो नहीं है। लेकिन बापदादा कहते हैं कि अभी समय प्रमाण हर टीचर में बाप प्रत्यक्ष दिखाई दे तो सर्वव्यापी दिखाई देगा ना! जिसको देखे उसमें बाप ही दिखाई दे। आत्मा, परमात्मा के आगे छिप जाये और परमात्मा ही दिखाई दे। यह हो सकता है? अच्छा इसकी डेट क्या? डेट तो फिक्स होनी चाहिए ना? तो डेट कौन सी है इसकी? कितना समय चाहिए? (अब से चालू करेंगे) चालू करेंगे, अच्छी हिम्मत है, कितना समय चाहिए? 2002 तो चल रहा है अभी दो हजार कब तक? तो टीचर्स को यही अटेन्शन रखना है कि बस अभी बाप के अन्दर मैं समाई हुई दिखाई दूँ। मेरे द्वारा बाप दिखाई दे। प्लैन बनायेंगे ना! डबल विदेशी मीटिंग करने में तो होशियार हैं? अभी यह मीटिंग करना, इस मीटिंग के बिना जाना नहीं - कि कैसे हम एक एक से बाप दिखाई दे। अभी ब्रह्माकुमारियां दिखाई देती हैं, ब्रह्माकुमारियां बहुत



अच्छी हैं लेकिन इनका बाबा कितना अच्छा है, वह देखें। तभी तो विश्व परिवर्तन होगा ना! तो डबल विदेशी इस प्लैन को प्रैक्टिकल शुरू करेंगे ना! करेंगे? पक्का। अच्छा। तो आपकी दादी है ना, उसकी आशा पूर्ण हो जायेगी। ठीक है ना? अच्छा।

**अधरकुमार और मातायें** – जो सिंगल हैं वह उठो। आप भी सिंगल नहीं हो। आपका युगल तो बहुत पॉवरफुल है क्योंकि बापदादा सभी बच्चों को कहते हैं कि आप सभी “आप और बाप” कम्बाइण्ड हैं। तो कम्बाइण्ड हैं तो सिंगल हुए क्या? लौकिक जीवन अलग चीज़ है, लेकिन ब्राह्मण जीवन में कम्बाइण्ड रूप में हो। ऐसे कम्बाइण्ड हो जो कोई भी अलग कर नहीं सकता। ऐसे कम्बाइण्ड हो ना? या अकेले हो? कम्बाइण्ड हो। सदा बाप हर कार्य में सहयोगी है, साथी है। यह नशा रहता है ना? कभी अपने को अकेले तो नहीं समझते? कभी-कभी समझते हो? नहीं। पहले बापदादा आप सबका साथी है और अविनाशी साथ निभाने वाले हैं। बाबा कहा और बाबा हाज़िर है। कहते हैं हज़ूर सदा हाज़िर है। तो मौज़ में रहते हो ना? उदास तो नहीं होते? होते हैं? हाँ ना नहीं करते? उदास तो नहीं हैं ना? मौज़ में रहते हो ना! मौज़ ही मौज़ है, हम बाप के, बाप हमारे। बाप आपकी हर सेवा में सहयोग देने वाले हैं। इसलिए इसी रूहानी नशे में सदा रहना - हम कम्बाइण्ड हैं। कम्बाइण्ड हैं ना? बहुत अच्छे रूहानी नशे वाले हैं। नशा है ना? बापदादा को अति प्रिय से भी प्रिय हैं।

**छोटे बच्चे भी आये हैं** – बच्चों ने बापदादा को स्पेशल कार्ड भेजे थे, कार्ड भेजे हैं ना? आप सबके कार्ड मिल गये हैं। सुना बच्चों ने। अच्छे अच्छे कार्ड हैं। (कार्ड सभी को दिखाये गये) बहुत अच्छे कार्ड लिखे हैं। देखा बच्चों की कमाल, देखी ना! बच्चों की लगन अच्छी है तब यहाँ पहुंचते हैं। और यही बाप से प्यार बच्चों को आगे बढ़ाता रहेगा। अच्छा।

**पहली बार बहुत आये हैं** – अच्छा हाथ ऊपर करो। पहली बारी आने वालों को पहला नम्बर जाना है। लास्ट सो फास्ट होना है। ऐसे है ना! फास्ट

जायेंगे ना, पहला नम्बर लेना है। सारा ब्राह्मण परिवार आप सब पहली बारी आने वालों को बहुत-बहुत-बहुत मुबारक दे रहे हैं। अच्छा -

बाकी जो भारत वाले बैठे हैं, वह भी उठो। भारत वाले, भारत महान है, तो भारतवासी भी महान हैं। भारत से बाप का प्यार है तब तो भारत में आया ना। विदेश में नहीं आया, भारत में ही आया। लेकिन विदेश, देश वालों को भी जगाने के निमित्त बनेगा। तो भारत वाले तो चांस लेने में होशियार हैं। देखो डबल विदेशियों के टर्न में भी कितने भारत वाले आये हैं। इसीलिए अभी भारत के टर्न में विशेष डबल विदेशियों को निमन्त्रण है। ठीक है ना! वेलकम। तो डबल विदेशी तो होशियार हैं, जाते ही पहले टिकेट इक्व्ट्री करने लग जाते हैं। मधुबन से भी प्यार है ना! मधुबन वा भारत से प्यार है क्यों? क्योंकि असुल में आप सब भारतवासी थे, यह तो सेवा के कारण गये हो। अगर भारतवासी नहीं होते तो भारत की फिलॉसाफी से भी प्यार नहीं होता। भारत की कलचर से भी प्यार नहीं होता, इससे सिद्ध है कि आप भारत वाले ही हो। सिर्फ सेवा के लिए गये हो, विश्व सेवा है ना। तो विश्व सेवा के कारण अलग-अलग स्थान में पहुंचे हो। भाषायें देखो कितनी हैं। तो भारत से भाषायें सीखने जायें या सेवा करने जायें, इसलिए आपको सेवा के लिए वहाँ का जन्म मिला है। आदि सतयुग में भी भारत में थे, बीच में भी भारत के ही थे, अभी थोड़े समय के लिए सेवा के लिए गये हुए हो। नशा है ना - हम भारत के हैं! बीज आपका भारत ही है। खुशी होती है ना, हम भारत के हैं। थे, हैं और होंगे। हर कल्प में होंगे। अच्छा।

**पीस आफ माइण्ड रिट्रीट के गेस्ट भी बैठे हैं -** अच्छा है, आप सभी गेस्ट नहीं हो लेकिन होस्ट हो। बच्चे जो सभी हैं वह सब होस्ट हैं, गेस्ट नहीं हैं। निशानी में कहते हैं गेस्ट लेकिन हो होस्ट। मधुबन अच्छा लगता है ना? अभी औरों को भी निमन्त्रण देकर अपने साथी बनाना। हमेशा ऐसे ही समझो कि हम परमात्म सन्देश देने वाले सन्देशवाहक हैं। अच्छा है। तो सदा बाप की याद और सेवा करते रहना। अच्छा।

पाण्डव भवन में भी बहुत बैठे हैं, ज्ञान सरोवर, शान्तिवन सभी जगह सुन रहे हैं – साइंस का फायदा तो आप लोग ले रहे हैं। साइंस आपके लिए ही बनी है। जब से स्थापना का पार्ट हुआ है तो थोड़ा समय पहले ही यह साइंस की इन्वेन्शन तीव्रगति पर जा रही है। लोग चाहे फायदा लेवें, नुकसान लेवें। लेकिन आप तो फायदा ले रहे हो ना। इसलिए बापदादा साइंस के साधन देने वालों को भी मुबारक देते हैं। नीचे भी आराम से सुन रहे हैं। विदेश में भी कोई-कोई सुन रहे हैं, मोहिनी बहन (न्यूयार्क) और चन्द्रू बहन (सेनफ्रांसिसको) भी सुन रहे हैं। (न्यूयार्क की मोहिनी बहन ने आपरेशन कराया है) चाहे बीमारी आती है, चाहे सेवा आती है, दोनों को अपनी शक्ति से पार करके विजयी बन जाते हैं। यह बीमारी भी एक पेपर है। जैसे और पेपर पास करते हो ऐसे यह भी एक पेपर पास हो जाता है और सहज पास हो जाता है।

तो मधुबन निवासी जो भी हैं, बापदादा शान्तिवन, हॉस्पिटल, आबू निवासी, ज्ञान सरोवर निवासी, संगम निवासी, सभी को मधुबन निवासी कहते हैं। अच्छा है, यह भी अच्छा पुण्य कमाया जो औरों को चांस दिया, तो चांस देना भी आपके पुण्य के खाते में जमा हो गया। आराम से बैठ कर सुन रहे हैं। तो बापदादा जो भी नीचे सुन रहे हैं, पहले याद उन्हीं को दे रहे हैं। उनके साथ-साथ जो फारेन में सुन रहे हैं, जो दूर बैठे सुन रहे हैं, चाहे भारत में चाहे विदेश में, उन सबको भी पहले याद दे रहे हैं। और साथ में सभी बच्चों ने जिन्होंने भी कार्ड भेजे हैं, पत्र भेजे हैं, वह सबके पत्र, कार्ड, दिल के समाचार, सेवा के समाचार, हिम्मत के समाचार सब बापदादा के पास पहुंच गये हैं और बापदादा रिटर्न में एक-एक बच्चे को नाम सहित दिल से बहुत-बहुत यादप्यार दे रहे हैं। बहुत प्यार से पत्र लिखते हैं। कितना खर्चा करते हैं। कार्ड कितना बढ़िया भेजते हैं। लेकिन बापदादा खर्च को नहीं देखते, उन्हीं के प्यार को देखते हैं। प्यार के आगे कोई बड़ी चीज़ नहीं है। अच्छा।

हॉस्पिटल के सभी ट्रस्टी भी आये हैं – अच्छा है, यह हॉस्पिटल भी

विश्व में आवाज फैलाने का अच्छा साधन है क्योंकि इसमें डबल लाभ मिल जाता है। एक शरीर का और दूसरा आत्मा को भी लाभ मिलता है, डबल लाभ है इसीलिए बापदादा, जो भी हॉस्पिटल में ट्रस्टी हैं वा सेवाधारी हैं, सभी को विशेष सेवा की मुबारक देते हैं। यह हॉस्पिटल, नाम हॉस्पिटल है लेकिन है आत्माओं को बाप से मिलाने का साधन। हॉस्पिटल के नाम से सहज आ जाते हैं। तो सब अच्छा चल रहा है ना। जहाँ भी हॉस्पिटल हैं, ठीक चल रहे हैं। बाम्बे का अच्छा चल रहा है? ग्लोबल हॉस्पिटल का तो नाम प्रसिद्ध हो गया है। बहुत अच्छा है। मुबारक हो।

**विदेश के पुराने-पुराने भाई-बहनों को देख कर** – अच्छा है आदि रत्न हो ना। यह चार्ली भी आदि है। बापदादा को खुशी होती है कि आदि रत्न, फारेन सेवा के आदि रत्न बहुत अच्छे सेवाधारी हैं। अथक भी हैं और आगे बढ़ने वाले भी हैं। (25 वर्ष वाले बहुत बैठे हैं) अच्छा - सभी लम्बा हाथ उठाओ। अच्छा है। अमर भव के वरदानी हैं। जन्म से अमर वरदान मिला है। अमर रहे हैं, अमर रहेंगे। अच्छा है। सबका मिलन हो गया या कोई रह गया ?

**सिन्धी ग्रुप रह गया** – सिन्धी तो अभी ब्राह्मण ग्रुप हो गया। अभी अपने को सिन्धी समझते हो या ब्राह्मण ? क्या समझते हो ? लेकिन नशा है कि जहाँ से ब्रह्मा बाप निकला वहाँ के हम हैं। यह नशा भी अच्छा है लेकिन अभी तो ब्राह्मण परिवार के विशेष सेवाधारी आत्मायें हो। सेवाधारी हो ना ? बापदादा जानते हैं कि सेवा का शौक सारे ग्रुप को है। और धीरे-धीरे सिन्धी ग्रुप को बढ़ा रहे हैं, बढ़ता रहता है, बढ़ता रहेगा। इसीलिए आप सबको डबल मुबारक है, एक सिन्धी होने की और दूसरा ब्राह्मण जीवन की। अच्छा है सभी पक्के हैं। बापदादा देख करके खुश हैं। अच्छा।

देखो, **डबल विदेशी** कितने सेवाधारी हो, आपके कारण सबको यादप्यार मिल रहा है। बापदादा को भी डबल विदेशियों से ज्यादा तो नहीं कहेंगे लेकिन स्पेशल प्यार है। क्यों प्यार है ? क्योंकि डबल विदेशी आत्मायें जो

सेवा के निमित्त बन गये हैं, वह विश्व के कोने-कोने में बाप का सन्देश पहुंचाने के निमित्त बने हुए हैं। नहीं तो विदेश की आत्मायें चारों ओर की प्यासी रह जाती। अभी बाप को उलहना तो नहीं मिलेगा ना कि भारत में आये, विदेश में क्यों नहीं सन्देश दिया। तो बाप का उलहना पूरा करने के निमित्त बने हो। और जनक को तो उमंग बहुत है, कोई देश रह नहीं जावे। अच्छा है। बाप का उलहना तो पूरा करेंगे ना! लेकिन आप (दादी जानकी) साथियों को थकाती बहुत हो। थकाती है ना! जयन्ती, थकाती नहीं है? लेकिन इस थकावट में भी मौज़ समाई हुई होती है। पहले लगता है कि यह बार-बार क्या है, लेकिन जब भाषण करके दुआयें ले आते हैं ना तो चेहरा बदल जाता है। अच्छा है, दोनों दादियों में उमंग-उत्साह बढ़ाने की विशेषता है। यह शान्त करके बैठ नहीं सकते। सेवा अभी रही हुई तो है ना? अगर नक्शा लेके देखो चाहे भारत में, चाहे विदेश में, अगर नक्शे में एक-एक स्थान पर राइट लगाते जाओ तो दिखाई देंगे कि अभी भी रहे हुए हैं। इसलिए बापदादा खुश भी होते हैं और कहते भी हैं ज्यादा नहीं थकाओ। आप सब सेवा में खुश हो ना! अभी यह कुमारियां भी तो टीचर बनेंगी ना। जो टीचर हैं वह तो हैं ही लेकिन जो टीचर नहीं हैं वह टीचर बनके कोई न कोई सेन्टर सम्भालेंगी ना। हैण्डस बनेंगी ना! डबल विदेशी बच्चों को दोनों काम करने का अभ्यास तो है ही। जाँब भी करते हैं सेन्टर भी सम्भालते हैं, इसीलिए बापदादा डबल मुबारक भी देते हैं। अच्छा -

चारों ओर के अति स्नेही, अति समीप सदा आदिकाल से अब तक रॉयल्टी के अधिकारी, सदा अपने चेहरे और चलन से प्युरिटी की झलक दिखाने वाले, सदा स्वयं को सेवा और याद में तीव्र पुरुषार्थ द्वारा नम्बरवन बनने वाले, सदा बाप के समान सर्व शक्ति, सर्व गुण सम्पन्न स्वरूप में रहने वाले, ऐसे सर्व तरफ के हर एक बच्चे को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादी जी से - (तबियत ठीक है) है ही ठीक, और सदा ठीक रहना ही

है। सभी की दुआयें मिल गई हैं ना। दुआयें सबसे बड़ी दवाई है। यह दुआओं की दवाई ठीक कर रही है, बाकी तो निमित्त है। (आपकी भी दवाई रोज़ लेते हैं) वह भी दुआयें हैं। सबका दादियों से बहुत प्यार है ना। कितना प्यार है? बाप का तो है ही। लेकिन साकार रूप में तो आप लोग हो ना। निमित्त तो हैं ना!

**विदेश की मुख्य टीचर्स बहनों से** – सभी ने सेवा के प्लैन अच्छे-अच्छे बनाये हैं ना क्योंकि सेवा समाप्त हो तब आपका राज्य आये। तो सेवा का साधन भी आवश्यक है। लेकिन मन्सा भी हो, वाचा भी हो, साथ-साथ हो। सेवा और स्व-उन्नति दोनों ही साथ हों। ऐसी सेवा सफलता को समीप लाती है। तो सेवा के निमित्त तो हो ही और सभी अपने-अपने स्थान पर सेवा तो अच्छी कर ही रहे हो। बाकी अभी जो काम दिया है, उसका प्लैन बनाओ। उसके लिए क्या-क्या स्वयं में वा सेवा में वृद्धि चाहिए, एडीशन चाहिए वह प्लैन बनाओ। बाकी बापदादा सेवाधारियों को देख करके खुश तो होते ही हैं। सभी अच्छे सेवाकेन्द्र उन्नति को पा रहे हैं ना! उन्नति है ना? अच्छा है। अच्छा हो रहा है ना। हो रहा है और होता रहेगा। अभी सिर्फ जो अलग-अलग बिखरे हुए हैं, उनके संगठन करके उन्हीं को पक्का करो। प्रैक्टिकल सबूत सबके आगे दिखाओ। चाहे कोई भी सेवा कर रहे हो, भिन्न-भिन्न प्लैन बनाते हो, कर भी रहे हो, अच्छे चल भी रहे हैं, अभी उन सभी का ग्रुप एक सामने लाओ। जो सेवा का सबूत सारे ब्राह्मण परिवार के सामने आ जाए। ठीक है ना! बाकी सभी अच्छे हो, अच्छे ते अच्छे हो। अच्छा। ओम् शान्ति।



## ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन और सफलता का आधार - निश्चयबुद्धि

आज समर्थ बाप अपने चारों ओर के समर्थ बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चा समर्थ बन बाप समान बनने के श्रेष्ठ पुरुषार्थ में लगे हुए हैं। बच्चों की इस लगन को देख बापदादा भी हर्षित होते रहते हैं। बच्चों का यह दृढ़ संकल्प बापदादा को भी प्यारा लगता है। बापदादा तो बच्चों को यही कहते कि बाप से भी आगे जा सकते हो क्योंकि यादगार में भी बाप की पूजा सिंगल है, आप बच्चों की पूजा डबल है। बापदादा के सिर के भी ताज हो। बापदादा बच्चों के स्वमान को देख सदा यही कहते वाह श्रेष्ठ स्वमानधारी, स्वराज्यधारी बच्चे वाह! हर एक बच्चे की विशेषता बाप को हर एक के मस्तक में चमकती हुई दिखाई देती है। आप भी अपनी विशेषता को जान, पहचान विश्व सेवा में लगाते चलो। चेक करो - मैं प्रभु पसन्द, परिवार पसन्द कहाँ तक बना हूँ? क्योंकि संगमयुग में बाप ब्राह्मण परिवार रचते हैं, तो प्रभु पसन्द और परिवार पसन्द दोनों आवश्यक हैं।

आज बापदादा सर्व बच्चों के ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन देख रहे थे। फाउण्डेशन है निश्चयबुद्धि। इसलिए जहाँ हर संकल्प में, हर कार्य में निश्चय है वहाँ विजय हुई पड़ी है। सफलता जन्म सिद्ध अधिकार के रूप में स्वतः और सहज प्राप्त है। जन्म सिद्ध अधिकार के लिए मेहनत की आवश्यकता नहीं होती। सफलता ब्राह्मण जीवन के गले का हार है। ब्राह्मण जीवन है ही सफलता स्वरूप। सफलता होगी वा नहीं होगी यह ब्राह्मण जीवन का क्वेश्चन ही नहीं है। निश्चयबुद्धि सदा बाप के कम्बाइन्ड है, तो जहाँ बाप कम्बाइन्ड है वहाँ सफलता सदा प्राप्त है। तो चेक करो - सफलता स्वरूप कहाँ तक बने हैं? अगर सफलता में परसेन्टेज है तो उसका कारण निश्चय में परसेन्टेज है। निश्चय सिर्फ बाप में है, यह तो बहुत अच्छा है। लेकिन निश्चय - बाप में निश्चय, स्व में निश्चय, ड्रामा में निश्चय और साथ-साथ परिवार में निश्चय। इन

चारों निश्चय के आधार से सफलता सहज और स्वतः है।

बाप में निश्चय सभी बच्चों का है तब तो यहाँ आये हैं। बाप का भी आप सबमें निश्चय है तब अपना बनाया है। लेकिन ब्राह्मण जीवन में सम्पन्न वा सम्पूर्ण बनने के लिए स्व में भी निश्चय आवश्यक है। बापदादा के द्वारा प्राप्त हुए श्रेष्ठ आत्मा के स्वमान सदा स्मृति में रहे कि मैं परमात्मा द्वारा स्वमानधारी श्रेष्ठ आत्मा हूँ। साधारण आत्मा नहीं, परमात्म स्वमानधारी आत्मा। तो स्वमान हर संकल्प में, हर कर्म में सफलता अवश्य दिलाता है। साधारण कर्म करने वाली आत्मा नहीं, स्वमानधारी आत्मा हूँ। तो हर कर्म में स्वमान आपको सफलता सहज ही दिलायेगा। तो स्व में निश्चयबुद्धि की निशानी है - सफलता वा विजय। ऐसे ही बाप में तो पक्का निश्चय है, उसकी विशेषता है - “निरन्तर मैं बाप का और बाप मेरा।” यह निरन्तर विजय का आधार है। “मेरा बाबा” सिर्फ बाबा नहीं, मेरा बाबा। मेरे के ऊपर अधिकार होता है। तो मेरा बाबा, ऐसी निश्चयबुद्धि आत्मा सदा अधिकारी है - सफलता की, विजय की। ऐसे ही ड्रामा में भी पूरा-पूरा निश्चय चाहिए। सफलता और समस्या दोनों प्रकार की बातें ड्रामा में आती हैं लेकिन समस्या के समय निश्चयबुद्धि की निशानी है - समाधान स्वरूप। समस्या को सेकण्ड में समाधान स्वरूप द्वारा परिवर्तन कर देना। समस्या का काम है आना, निश्चयबुद्धि आत्मा का काम है समाधान स्वरूप से समस्या को परिवर्तन करना। क्यों? आप हर ब्राह्मण आत्मा ने ब्राह्मण जन्म लेते माया को चैलेन्ज किया है। किया है ना या भूल गये हो? चैलेन्ज है कि हम मायाजीत बनने वाले हैं। तो समस्या का स्वरूप, माया का स्वरूप है। जब चैलेन्ज किया है तो माया सामना तो करेगी ना! वह भिन्न-भिन्न समस्याओं के रूप में आपकी चैलेन्ज को पूरा करने के लिए आती है। आपको निश्चयबुद्धि विजयी स्वरूप से पार करना है, क्यों? नर्थिंगन्यु। कितने बार विजयी बने हो? अभी एक बार संगम पर विजयी बन रहे हो वा अनेक बार बने हुए को रिपीट कर रहे हो? इसलिए समस्या आपके लिए नई बात नहीं है, नर्थिंगन्यु। अनेक बार विजयी



बने हैं, बन रहे हैं और आगे भी बनते रहेंगे। यह है ड्रामा में निश्चयबुद्धि विजयी। और है - ब्राह्मण परिवार में निश्चय, क्यों? ब्राह्मण परिवार का अर्थ ही है संगठन। छोटा परिवार नहीं है, ब्रह्मा बाप का ब्राह्मण परिवार सर्व परिवारों से श्रेष्ठ और बड़ा है। तो परिवार के बीच, परिवार के प्रीत की रीति निभाने में भी विजयी। ऐसा नहीं कि बाप मेरा, मैं बाबा का, सब कुछ हो गया, बाबा से काम है, परिवार से क्या काम! लेकिन यह भी निश्चय की विशेषता है। चार ही बातों में निश्चय, विजय आवश्यक है। परिवार भी सभी को कई बातों में मजबूत बनाता है। सिर्फ परिवार में यह स्मृति में रहे कि सब अपने-अपने नम्बरवार धारणा स्वरूप हैं। वैरायटी है। इसका यादगार 108 की माला है। सोचो - कहाँ एक नम्बर और कहाँ 108वां नम्बर, क्यों बना? सब एक नम्बर क्यों नहीं बने? 16 हज़ार क्यों बना? कारण? वैरायटी संस्कार को समझ नॉलेजफुल बन चलना, निभाना, यही सबसेसफुल स्टेज है। चलना तो पड़ता ही है। परिवार को छोड़कर कहाँ जायेंगे। नशा भी है ना कि हमारा इतना बड़ा परिवार है। तो बड़े परिवार में बड़ी दिल से हर एक के संस्कार को जानते हुए चलना, निर्माण होके चलना, शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति से चलना... यही परिवार के निश्चयबुद्धि विजयी की निशानी है। तो सभी विजयी हो ना? विजयी हैं?

डबल फारेनर्स विजयी हैं? हाथ तो बहुत अच्छा हिला रहे हैं। बहुत अच्छा। बापदादा को खुशी है। अच्छा - टीचर्स विजयी हैं? या थोड़ा-थोड़ा होता है? क्या करें, यह तो नहीं! 'कैसे' के बजाए 'ऐसे' शब्द को यूज करो, कैसे करें नहीं, ऐसे करें। 21 जन्म का कनेक्शन परिवार से है। इसलिए जो परिवार में पास (Pass) है, वह सबमें पास है।

तो चार ही प्रकार का निश्चय चेक करो क्योंकि प्रभु पसन्द के साथ परिवार पसन्द भी होना अति आवश्यक है। नम्बर इन चारों निश्चय के परसेन्टेज़ अनुसार मिलना है। ऐसे नहीं मैं बाबा की, बाबा मेरा, बस हो गया। ऐसा नहीं। मेरा बाबा तो बहुत अच्छा कहते हो और सदा इस निश्चय में अटल

भी हो, इसकी मुबारक है लेकिन तीन और भी हैं। टीचर्स, चार ही ज़रूरी हैं कि नहीं? ऐसे तो नहीं तीन ज़रूरी है एक नहीं? जो समझते हैं चारों ही निश्चय ज़रूरी हैं वह एक हाथ उठाना। सभी को चारों ही बातें पसन्द हैं? जिसको तीन बातें पसन्द हों वह हाथ उठाओ। कोई नहीं। निभाना मुश्किल नहीं है? बहुत अच्छा। अगर दिल से हाथ उठाया तो सब पास हो गये। अच्छा।

देखो, कहाँ-कहाँ से, भिन्न-भिन्न देश की टालियां मधुबन में एक वृक्ष बन जाता है। मधुबन में याद रहता है क्या, मैं दिल्ली की हूँ, मैं कनार्टक की हूँ, मैं गुजरात की हूँ...! सब मधुबन निवासी हैं। तो एक झाड़ हो गया ना। इस समय सब क्या समझते हैं, मधुबन निवासी हो या अपने-अपने देश के निवासी हो? मधुबन निवासी हो? सभी मधुबन निवासी हो, बहुत अच्छा। वैसे भी हर ब्राह्मणों की परमानेन्ट एड्रेस तो मधुबन ही है। आपकी परमानेन्ट एड्रेस कौन सी है? बाम्बे है? दिल्ली है? पंजाब है? मधुबन परमानेन्ट एड्रेस है। यह तो सेवा के लिए सेवाकेन्द्र में भेजा गया है। वह सेवा के स्थान हैं, घर आपका मधुबन है। आखिर भी एशलम कहाँ मिलना है? मधुबन में ही मिलना है। इसीलिए बड़े-बड़े स्थान बना रहे हैं ना!

सभी का लक्ष्य बाप समान बनने का है। तो सारे दिन में यह ड्रिल करो - मन की ड्रिल। शरीर की ड्रिल तो शरीर के तन्दरूस्ती के लिए करते हो, करते रहो क्योंकि आजकल दवाईयों से भी एक्सरसाइज़ आवश्यक है। वह तो करो और खूब करो टाइम पर। सेवा के टाइम एक्सरसाइज़ नहीं करते रहना। बाकी टाइम पर एक्सरसाइज़ करना अच्छा है। लेकिन साथ-साथ मन की एक्सरसाइज़ बार-बार करो। जब बाप समान बनना है तो एक है - निराकार और दूसरा है - अव्यक्त फ़रिश्ता। तो जब भी समय मिलता है सेकण्ड में बाप समान निराकारी स्टेज पर स्थित हो जाओ, बाप समान बनना है तो निराकारी स्थिति बाप समान है। कार्य करते फ़रिश्ता बनकर कर्म करो, फ़रिश्ता अर्थात् डबल लाइट। कार्य का बोझ नहीं हो। कार्य का बोझ अव्यक्त फ़रिश्ता बनने नहीं देगा। तो बीच-बीच में निराकारी और

फ़रिश्ता स्वरूप की मन की एक्सरसाइज़ करो तो थकावट नहीं होगी। जैसे ब्रह्मा बाप को साकार रूप में देखा - डबल लाइट। सेवा का भी बोझ नहीं। अव्यक्त फ़रिश्ता रूप। तो सहज ही बाप समान बन जायेंगे। आत्मा भी निराकार है और आत्मा निराकार स्थिति में स्थित होगी तो निराकार बाप की याद सहज समान बना देगी। अभी-अभी एक सेकण्ड में निराकारी स्थिति में स्थित हो सकते हो? हो सकते हो? (बापदादा ने ड्रिल कराई) यह अभ्यास और अटेन्शन चलते फिरते, कर्म करते बीच-बीच में करते जाना। तो यह प्रैक्टिस मन्सा सेवा करने में भी सहयोग देगी और पॉवरफुल योग की स्थिति में भी बहुत मदद मिलेगी। अच्छा -

**डबल फारेनर्स से** - देखो डबल फारेनर्स को इस सीज़न में कारणे-अकारणे सब ग्रुप में चांस मिला है। हर ग्रुप में आ सकते हैं, फ्रीडम है। तो यह भाग्य है ना, डबल भाग्य है। तो इस ग्रुप में भी बापदादा देख रहे हैं कुछ पहली बारी भी आये हैं, कुछ पहले वाले भी आये हैं। बापदादा की दृष्टि सभी फारेनर्स के ऊपर है। जितना प्यार आपका बाप से है, बाप का प्यार आपसे पद्मगुणा है। ठीक है ना! पद्मगुणा है? आपका भी प्यार, दिल का प्यार है तब यहाँ पहुंचे हो। डबल फारेनर्स इस ब्राह्मण परिवार का श्रृंगार हैं। स्पेशल श्रृंगार हो। हर देश में बापदादा देख रहे हैं - याद में बैठे हैं, सुन भी रहे हैं तो याद में भी बैठे हैं। बहुत अच्छा।

**टीचर्स** - टीचर्स का झुण्ड भी बड़ा है। बापदादा टीचर्स को एक टाइटल देते हैं। कौन-सा टाइटल देते हैं? (फ्रैण्डस) फ्रैण्डस तो सभी हैं ही। डबल फारेनर्स तो पहले फ्रैण्डस हैं। इन्हों को फ्रैण्ड का सम्बन्ध अच्छा लगता है। टीचर्स जो योग्य हैं, सभी को नहीं, योग्य टीचर्स को बापदादा कहते हैं - यह गुरुभाई हैं। जैसे बड़े बच्चे बाप के समान हो जाते हैं ना, तो टीचर्स भी गुरुभाई हैं क्योंकि सदा बाप की सेवा के निमित्त बने हुए हैं। बाप समान सेवाधारी हैं। देखो, टीचर्स को बाप का सिंहासन मिलता है मुरली सुनाने के लिए। गुरु की गद्दी मिलती है ना! इसलिए टीचर्स अर्थात् निरन्तर सेवाधारी।

चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा कर्मणा - सदा सेवाधारी। ऐसे है ना! आराम पसन्द तो नहीं ना! सेवाधारी। सेवा, सेवा और सेवा। ठीक है ना? अच्छा।

**सेवा में दिल्ली, आगरा का टर्न है** - आगरा साथी है। दिल्ली का लश्कर तो बहुत बड़ा है। अच्छा - दिल्ली में स्थापना का फाउण्डेशन पड़ा, यह तो बहुत अच्छा। अभी प्रत्यक्षता बाप की करने का फाउण्डेशन कहाँ से होगा? दिल्ली से या महाराष्ट्र से? कर्नाटक से, लंदन से.... कहाँ से होगा? दिल्ली से होगा? करो निरन्तर सेवा और तपस्या। सेवा और तपस्या दोनों के बैलेन्स से प्रत्यक्षता होगी। जैसे सेवा का डायलॉग बनाया ना, ऐसे दिल्ली में तपस्या का वर्णन करने का डायलॉग बनाओ तब कहेंगे दिल्ली, दिल्ली है। दिल्ली बाप की दिल तो है लेकिन बाप के दिल पसन्द कार्य करके भी दिखायेंगे। पाण्डव करना है ना? करेंगे, ज़रूर करेंगे। तपस्या ऐसी करो जो सब पतंग बाबा, बाबा कहते दिल्ली के विशेष स्थान पर पहुँच जाएं। परवाने बाबा-बाबा कहते आवें तब कहेंगे प्रत्यक्षता। तो यह करना है, अगले साल यह डायलॉग करना है, यह रिज़ल्ट सुनानी है कि कितने परवाने बाबा-बाबा कहते स्वाहा हुए। ठीक है ना? बहुत अच्छा, मातायें भी बहुत हैं।

**कुमार-कुमारियां** - कुमार और कुमारियां, तो आधा हाल कुमार-कुमारियां हैं। शाबास कुमार-कुमारियों को। बस कुमार कुमारियां ज्वाला रूप बन - आत्माओं को पावन बना देने वाले। कुमार और कुमारियों को तरस पड़ना चाहिए, आज के कुमार और कुमारियों पर, कितने भटक रहे हैं। भटके हुए हमजिन्स को रास्ते पर लगाओ। अच्छा, जो भी कुमार और कुमारी आये हैं उनमें से इस सारे वर्ष में जिसने आत्माओं को सेवा में आप समान बनाया है वह बड़ा हाथ उठाओ। कुमारियों ने आप समान बनाया है? अच्छा प्लैन बना रही हैं। यह हॉस्टल वाली हाथ उठा रही हैं। अभी सेवा का सबूत नहीं लाया है। तो कुमार और कुमारियों को सेवा का सबूत लाना है। ठीक है!

**अधर कुमार** - अधरकुमार भी कम नहीं हैं। अधरकुमार क्या सेवा की नवीनता दिखायेंगे? अधरकुमार विश्व में यह चैलेन्ज करके दिखावें कि सारे कल्प में जो कार्य हुआ है उससे अनोखा कार्य अभी हो रहा है। अधरकुमार प्रवृत्ति में रहते चैलेन्ज करें कि दोनों साथ रहते भी स्वप्न तक भी पवित्र रह सकते हैं। यह विश्व में चैलेन्ज करो जो असम्भव समझते हैं वह सम्भव करके दिखाओ। असम्भव समझते हैं ना। वह कहते हैं आग और कपूस इक्की नहीं रह सकती है। और आप क्या कहते हो? साथ रहते भी पवित्र रह सकते हैं। ऐसी चैलेन्ज है? कमजोर तो नहीं हैं ना! स्वप्न में भी संकल्प मात्र नहीं हो तब चैलेन्ज होगी। वह भी दिन आयेगा जो बड़े-बड़े महामण्डलेश्वर आपके चरणों में झुकेंगे। लेकिन ऐसे सम्पन्न बनना है। अच्छा है अधरकुमारों की संख्या भी कम नहीं है, बहुत है। ब्राह्मण परिवार की शोभा है। अच्छा।

अच्छा अभी रह गई - **भोलानाथ की मीठी-मीठी मातायें**, अच्छा देखो दादी देखो कितनी माताओं का झुण्ड है। बहुत अच्छा झुण्ड है। टी.वी. में दिखाओ सभी को। साइंस के साधन से फायदा तो उठा रहे हैं। अच्छा है शक्ति सेना। शक्तियों की विजय हो, विजय हो, विजय हो। देखो बापदादा ने अबला से शक्तियां बना दिया। अभी अपने को अबला तो नहीं समझते ना! शक्ति हैं। तो शक्तियां तो हैं ही विजयी। शक्तियों को विजय की निशानी शस्त्र दिखा दिये हैं। शस्त्रधारी शक्तियां अर्थात् सर्व शक्तियों धारी शक्तियां। तो सदा अपने को सर्व शक्ति स्वरूप अनुभव करो। आपका यादगार सर्व शक्तियों का सूचक है। तो ऐसे है ना? सब शक्तियां, शक्ति सम्पन्न हैं? बहुत अच्छा। विजयी है और सदा विजयी रहेंगी। अच्छा।

अभी तो कोई नहीं कहेंगे कि हम बाबा से मिले नहीं। सबसे मिले ना। सबसे मिलन हो गया।

**इन्दौर हॉस्टल की कुमारियां** - कुमारी वह जो आत्माओं के 21 कुल का उद्धार करे। तो कितनी आत्माओं के 21 कुल सुधारे हैं? सेवा करते हो या सेवाधारी बन रहे हो? तैयार हो रहे हो अच्छा है। फिर भी देखो जब भी

कुछ होता है तो आपको निमन्त्रण मिलता है ना। विशेष आत्मा हो गई ना। विशेष निमन्त्रण देकर आपको बुलाया जाता है, तो बहुत अच्छा है। स्वयं भी शक्ति रूप बन रही हो और दूसरों को भी बनाने में भी ऐसे ही होशियार बन जलवा दिखायेंगी। अच्छा है। मुबारक हो।

**पोलीटिकल विंग के आये हैं** - बहुत अच्छा किया जो अपने घर में पहुंच गये हैं। होस्ट हो या गेस्ट हो? (होस्ट) बाप का घर सो बच्चे का घर, इसीलिए होस्ट हो।

**अच्छा** - चारों ओर के विजयी रत्नों को, सदा निश्चय बुद्धि सहज सफलता मूर्त बच्चों को, सदा मेरा बाबा के अधिकार से हर सेवा में सफलता प्राप्त करने वाले सफलता मूर्त बच्चों को, सदा समाधान स्वरूप, समस्या को परिवर्तन करने वाले परिवर्तक आत्मायें, ऐसे श्रेष्ठ बच्चों को सदा बाप को प्रत्यक्ष करने के प्लैन को प्रैक्टिकल में लाने वाले बच्चों को बापदादा का यादप्यार, मुबारक, अक्षोणी बार मुबारक और नमस्ते।

**दादी जी से** - सबका आपसे प्यार है, बाप का भी आपसे प्यार है। (रतनमोहिनी दादी से) सहयोगी बनने से बहुत कुछ सूक्ष्म में प्राप्त होता है। ऐसे है ना! आदि रतन हैं। आदि रतन अब तक भी निमित्त हैं। अच्छा -

**नारायण दादा से** - (कोई आज्ञा) आज्ञा यही है - बैलेन्स रखो। अलौकिक और लौकिक दोनों में बैलेन्स रखो। यह बैलेन्स जो है वह स्वतः ही ब्लैसिंग दिलाता रहेगा। ओमशान्ति।



## रिटर्न शब्द की स्मृति से समान बनो और रिटर्न-जर्नी के स्मृति स्वरूप बनो

आज बापदादा अपने चारों ओर के दिल तख्तनशीन, भ्रुकुटी के तख्त नशीन, विश्व के राज्य के तख्त नशीन, स्वराज्य अधिकारी बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। परमात्म दिल तख्त सारे कल्प में अब आप सिकीलधे, लाडले बच्चों को ही प्राप्त होता है। भ्रुकुटी का तख्त तो सर्व आत्माओं को है लेकिन परमात्म दिल तख्त ब्राह्मण आत्माओं के सिवाए किसी को प्राप्त नहीं है। यह दिल तख्त ही विश्व का तख्त दिलाता है। वर्तमान समय स्वराज्य अधिकारी बने हो, हर एक ब्राह्मण आत्मा का स्वराज्य गले का हार है। स्वराज्य आपके जन्म का अधिकार है। ऐसे स्वयं को ऐसा स्वराज्य अधिकारी अनुभव करते हो ? दिल में यह दृढ़ संकल्प है कि हमारे इस बर्थ राइट को कोई छीन नहीं सकता। साथ-साथ यह भी रूहानी नशा है कि हम परमात्म दिल तख्तनशीन भी हैं। मानव जीवन में, तन में भी विशेष दिल ही महान गाई जाती है। दिल रूक गई तो जीवन समाप्त। तो आध्यात्मिक जीवन में भी दिल तख्त का बहुत महत्व है। जो दिल तख्तनशीन हैं वही आत्मायें विश्व में विशेष आत्मायें गाई जाती हैं। वही आत्मायें भक्तों के लिए माला के मणकों के रूप में सिमरी जाती हैं। वही आत्मायें कोटों में कोई, कोई में भी कोई गाई जाती है। तो वह कौन हैं ? आप हो ? पाण्डव भी हैं ? मातायें भी हैं। (हाथ हिला रहे हैं) तो बाप कहते हैं हे लाडले बच्चे कभी-कभी दिल तख्त को छोड़कर देह रूपी मिट्टी से क्यों दिल लगाते हो ? देह मिट्टी है। तो लाडले बच्चे कभी मिट्टी में पांव नहीं रखते हैं, सदा तख्त पर, गोदी में या अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते। आपके लिए बापदादा ने भिन्न-भिन्न झूले दिये हैं, कभी सुख के झूले में झूलो, कभी खुशी के झूले में झूलो। कभी आनंदमय झूले में झूलो।

तो आज बापदादा ऐसे श्रेष्ठ बच्चों को देख रहे थे कि कैसे नशे से झूलों में झूल रहे हैं। झूलते रहते हो ? झूलते हो ? मिट्टी में तो नहीं जाते ! कभी-कभी

दिल होती है क्या, मिट्टी में पांव रखने की? क्योंकि 63 जन्म मिट्टी में ही पांव रखते, मिट्टी से ही खेलते। तो अभी तो नहीं मिट्टी से खेलते? कभी-कभी मिट्टी में पांव जाता है कि नहीं जाता है? कभी-कभी चला जाता है। देहभान भी मिट्टी में पांव रखना है। देह अभिमान तो बहुत गहरी मिट्टी में पांव है। लेकिन देह भान अर्थात् बॉडीकान्सेसनेस यह भी मिट्टी है। जितना संगम का समय ज्यादा से ज्यादा तख्तनशीन होंगे उतना ही आधाकल्प सूर्यवंश की राजधानी में और चन्द्रवंश में भी सूर्यवंश के राज्य घराने में होंगे। अगर अभी संगम पर कभी-कभी तख्तनशीन होंगे तो सूर्यवंश के रॉयल फैमिली में इतना ही थोड़ा समय होंगे। तख्तनशीन चाहे टर्न बाई टर्न होंगे लेकिन रॉयल फैमिली, राज्य घराने की आत्माओं के सदा सम्बन्ध में होंगे। तो चेक करो - कि संगमयुग के आदि समय से अब तक चाहे 10 साल हुए हैं, चाहे 50, चाहे 66 साल हो गये, लेकिन जब से ब्राह्मण बनें तब आदि से अब तक कितना समय दिल तख्तनशीन स्वराज्य तख्त नशीन रहे? बहुतकाल रहा, निरन्तर रहा वा कभी-कभी रहा? जो परमात्म तख्त नशीन होगा उसकी निशानी - प्रत्यक्ष चलन और चेहरे से सदा बेफिकर बादशाह होगा। अपने मन में, स्थूल बोझ तो सिर पर होता है लेकिन सूक्ष्म बोझ मन में होता है। तो मन में कोई बोझ नहीं होगा। फिकर है बोझ, बेफिकर है डबल लाइट। अगर किसी भी प्रकार का चाहे सेवा का, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क का, चाहे स्थूल सेवा का, रूहानी सेवा का भी बोझ नहीं, क्या होगा, कैसा होगा....सफलता होगी या नहीं होगी! सोचना, प्लैन बनाना अलग चीज़ है, बोझ अलग चीज़ है। बोझ वाले की निशानी सदा चेहरे में बहुत या थोड़ा थकावट के चिन्ह होंगे, थकावट होना अलग चीज़ है, थकावट के चिन्ह थोड़ा भी यह भी बोझ की निशानी है। और बेफिकर बादशाह का यह अर्थ नहीं कि अलबेले रहें, हो अलबेलापन और कहे हम तो बेफिकर रहते हैं। अलबेलापन, यह बहुत धोखा देने वाला है। तीव्र पुरुषार्थ के भी वही शब्द हैं और अलबेलेपन के भी वही शब्द हैं। तीव्र पुरुषार्थी सदा दृढ़ निश्चय होने के कारण यही सोचता है -



हर कार्य हिम्मत और बाप की मदद से सफल हुआ ही पड़ा है और अलबेलेपन के भी यही शब्द हैं, हो जायेगा, हो जायेगा, हुआ ही पड़ा है। कोई कार्य रहा है क्या, हो जायेगा। तो शब्द एक है लेकिन रूप अलग अलग है।

वर्तमान समय माया के विशेष दो रूप बच्चों का पेपर लेते हैं। जानते हो? जानते तो हो। एक व्यर्थ संकल्प, विकल्प नहीं, व्यर्थ संकल्प। दूसरा भी सुनायें क्या? दूसरा है 'मैं ही राइट हूँ'। जो किया, जो कहा, जो सोचा.... मैं कम नहीं, राइट हूँ। बापदादा समय के प्रमाण अब यही चाहते - एक शब्द सदा स्मृति में रखो - बाप से हुई सर्व प्राप्तियों का, स्नेह का, सहयोग का रिटर्न करना है। रिटर्न करना अर्थात् समान बनना। दूसरा - अब हमारी रिटर्न-जरनी (वापिसी यात्रा) है। एक ही शब्द रिटर्न सदा याद रहे। इसके लिए बहुत सहज साधन है - हर संकल्प, बोल और कर्म को ब्रह्मा बाप से टाली करो। बाप का संकल्प क्या रहा? बाप का बोल क्या रहा? बाप का कर्म क्या रहा? इसको ही कहा जाता है फ़ालो फ़ादर। फ़ालो करना तो सहज होता है ना! नया सोचना, नया करना उसकी आवश्यकता है ही नहीं, जो बाप ने किया वह फ़ालो फ़ादर। सहज है ना!

**टीचर्स** - टीचर्स हाथ उठाओ। फ़ालो करना सहज है या मुशिकल है? सहज है ना! बस फ़ालो फ़ादर। पहले चेक करो, जैसे कहावत है पहले सोचो फिर करो, पहले तौलो फिर बोलो। तो सभी टीचर्स इस वर्ष में, अभी इस वर्ष का लास्ट मंथ है, पुराना जायेगा नया आयेगा। नये आने के पहले क्या करना है, उसकी तैयारी कर लो। यह संकल्प करो कि सिवाए बाप के कदम पर कदम रखने के और कोई भी कदम नहीं उठायेंगे। बस फुट स्टेप। कदम पर कदम रखना तो इजी है ना! नये वर्ष में अभी से संकल्प में प्लैन बनाओ, जैसे ब्रह्मा बाप सदा निमित्त और निर्माण रहे ऐसे निमित्त भाव और निर्माण भाव। सिर्फ निमित्त भाव नहीं, निमित्त भाव के साथ निर्माण भाव, दोनों आवश्यक हैं क्योंकि टीचर्स तो निमित्त हैं ना! निमित्त हैं ना! तो संकल्प में भी, बोल में भी और किसी के भी संबंध में, कर्म में, हर बोल में निर्माण।

जो निर्माण है वही निमित्त भाव में है। जो निर्माण नहीं है उसमें थोड़ा बहुत सूक्ष्म, महान रूप में अभिमान नहीं भी हो तो रोब होगा। ये रोब, यह भी अभिमान का अंश है और बोल में सदा निर्मल भाषी, मधुर भाषी। जब सम्बन्ध-सम्पर्क में आत्मिक रूप की स्मृति रहती है तो सदा निराकारी और निरहंकारी रहते हैं। ब्रह्मा बाप के लास्ट के तीनों शब्द याद रहते हैं? निराकारी, निरहंकारी वही निर्विकारी। अच्छा, फ़ालो फ़ादर। पक्का रहा ना!

अगले वर्ष की मुख्य लक्ष्य स्वरूप की स्मृति है - यह तीन शब्द, निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी। अंश भी नहीं हो। मोटा-मोटा रूप तो ठीक हो गया है लेकिन अंश भी नहीं हो क्योंकि अंश ही धोखा देता है। फ़ालो फ़ादर का अर्थ ही है - इन तीन शब्दों को सदा स्मृति में रखें। ठीक है?

अच्छा - डबल फारेनर्स उठो। अच्छा गुप आया है। बापदादा को डबल फारेनर्स की एक बात पर खुशी है, जानते हो कौन सी? जानते हो? देखो, जितना ही दूर से, दूरदेश से आते हो लेकिन जो डायरेक्शन मिला कि इस टर्न में भी आना है तो पहुंच गये ना। कैसे भी पुरुषार्थ कर बड़ा ही गुप पहुंच गया है। दादी का डायरेक्शन ठीक माना है ना! इसकी मुबारक हो। बापदादा एक-एक को देख रहा है, दृष्टि दे रहा है। ऐसा नहीं कि स्टेज पर ही दृष्टि मिलती है। दूर से और ही अच्छा दिखाई दे रहा है। डबल फारेनर्स हाँ जी का पाठ अच्छा पढ़े हुए हैं। बापदादा को डबल फारेनर्स के ऊपर प्यार तो है ही लेकिन नाज़ भी है, क्योंकि विश्व के कोने-कोने में सन्देश पहुंचाने के लिए डबल फारेनर्स ही निमित्त बने हैं। विदेश में अभी कोई विशेष स्थान रहा है, गांव-गांव रहे हैं या विशेष स्थान? कोने-कोने, गांव-गांव छोटे स्थान या विशेष स्थान रह गया है? कौन-सा स्थान रहा है? फिर भी देखो यह भी गुप जो आया है कितने देशों का गुप है? गिनती किया है? नहीं किया है। फिर भी बापदादा जानते हैं कि विश्व के अनेक भिन्न-भिन्न देशों में आप आत्मायें निमित्त बने हो। बापदादा हमेशा कहते ही हैं कि विश्व कल्याणकारी का टाइटल बाप का डबल विदेशियों ने ही प्रत्यक्ष किया है। अच्छा है। हर एक

अपने-अपने स्थान पर खुद अपने पुरुषार्थ में और सेवा में आगे बढ़ रहे हैं और सदा आगे बढ़ते रहेंगे। सफलता के सितारे है ही। बहुत अच्छा।

**कुमारों से** - मधुबन के कुमार भी हैं। देखो, कुमारों की संख्या देखो कितनी है? आधा क्लास तो कुमारों का है। कुमार अभी साधारण कुमार नहीं हैं। अभी कुमारों का टाइटल है, कौन से कुमार हो? ब्रह्माकुमार तो हो ही। लेकिन ब्रह्माकुमारों की विशेषता क्या है? कुमारों की विशेषता है कि सदा जहाँ भी अशान्ति होगी उसमें शान्ति फैलाने वाले शान्तिदूत हैं। न मन की अशान्ति, न बाहर की अशान्ति। कुमारों का कार्य ही है मुश्किल काम करना, हार्ड वर्कर होते हैं ना! तो आज सबसे हार्ड में हार्ड वर्क है - अशान्ति को मिटाए शान्तिदूत बन शान्ति फैलाना। ऐसे कुमार हो? हो? अशान्ति का नाम निशान नहीं रहे। ऐसे शान्तिदूत हो? न विश्व में, न आपके सम्बन्ध-सम्पर्क में। शान्तिदूत, जैसे आग बुझाने वाले कहाँ भी आग होगी तो आग बुझायेंगे ना। तो शान्तिदूत का कार्य ही है अशान्ति को शान्ति में बदलना। तो शान्तिदूत हो ना! पक्का! पक्का? पक्का? बहुत अच्छा लग रहा है, बापदादा इतने कुमारों को देख खुश होते हैं। पहले भी बापदादा ने प्लैन दिया था कि दिल्ली में ज्यादा से ज्यादा कुमार, जो गवर्मेन्ट समझती है कुमार अर्थात् झगड़ा करने वाले, डरती है कुमारों से। ऐसे डरने वाली गवर्मेन्ट, हर ब्रह्माकुमार कर शान्तिदूत के टाइटल से स्वागत करें, तब है कुमारों की कमाल। सारे विश्व में छा जावें कि ब्रह्माकुमार शान्तिदूत हैं। हो सकता है ना? दिल्ली में करना। करना है ना - दादियां करेंगे? इतने कुमार हैं, एक ग्रुप में इतने हैं तो सभी ग्रुप में कितने होंगे? विश्व में कितने होंगे? (लगभग 1 लाख) तो करो कमाल कुमार। गवर्मेन्ट में जो कुमारों के प्रति उल्टा भरा हुआ है वह सुल्टा कर दो। लेकिन मन में भी अशान्ति नहीं। साथियों में भी अशान्ति नहीं और अपने स्थान पर भी अशान्ति नहीं। अपने शहर में भी अशान्ति नहीं। बस कुमारों के चेहरे में बोर्ड लगाने की ज़रूरत नहीं लेकिन मस्तक में आटोमेटिक लिखा हुआ अनुभव हो कि यह शान्तिदूत हैं। ठीक है ना!

**कुमारियाँ उठो** – कुमारियाँ भी बहुत हैं। जो सेन्टर पर रहती हैं वह नहीं, जो सेन्टर पर नहीं रहती हैं, वह उठो। तो इन सब कुमारियों का लक्ष्य क्या है? नौकरी करनी है या विश्व सेवा करनी है? ताज सिर पर रखना है या टोकरी रखनी है? क्या रखना है? देखो, सब कुमारियों को रहमदिल बनना है। विश्व की आत्माओं का कल्याण हो जाए, कुमारियों के लिए गायन है 21 कुल का उद्धार करने वाली, तो आधाकल्प 21 कुल हो जायेंगे। तो ऐसी कुमारियाँ हो? जो 21 कुल का कल्याण करेंगी वह हाथ उठाओ। एक परिवार का नहीं, 21 परिवारों का। करेंगी? देखो आपका नाम नोट होगा और फिर देखा जायेगा कि रहमदिल है या कोई हिसाब-किताब रहा हुआ है? अभी समय सूचना दे रहा है कि समय के पहले तैयार हो जाओ। समय को देखते रहेंगे तो समय बीत जायेगा। इसीलिए लक्ष्य रखो कि हम सभी विश्व कल्याणी रहमदिल बाप के बच्चे रहमदिल हैं। ठीक हैं ना? रहमदिल हो ना! रहमदिल और बनो। थोड़ा और तीव्रगति से बनो। कुमारियों को तो बाप का बहुत सहज तख्त मिलता है। देखेंगे नये वर्ष में क्या कमाल करके दिखाती हो। अच्छा।

**मातायें उठो** – आधा क्लास मातायें हैं। हाथ हिलाओ दृश्य अच्छा लगता है। फारेनर्स में भी मातायें हैं। मातायें क्या कमाल करेंगी? मातायें जो गीत बना हुआ है ना आप सबका। गीत याद है - गीत क्या कहता है? कि शक्तियाँ आ गई...सुना है गीत! नहीं सुना हो तो कल सुना देना। तो शक्तियों का झुण्ड विश्व में चारों तरफ आ गया है, तो आप शक्तियाँ, शक्ति माता, माताओं का काम क्या है? बच्चों को जगाना, पालना करना और अधिकारी बनाना। तो मातायें अभी जो आपके भारत में या विश्व में बाप के बच्चे, आपकी बहनें सोई हुई हैं, उनको जगाओ। गीत तो बहुत गाते हो - जागो, जागो...तो अभी सोई हुई आत्माओं को जल्दी-जल्दी जगाओ। कुछ तो अपना थोड़ा सा अंचली का वर्सा भी ले लें क्योंकि अभी तक टू लेट का बोर्ड नहीं लगा है। लेट हैं लेकिन टू लेट नहीं है। तो टू लेट के पहले सोये हुए

हमजिन्स को जगाओ। जगायेंगे ना? अपने-अपने स्थान पर जहाँ भी सेवा करते हो वहाँ जगाओ और ऐसे जगाओ जो पूरे परवाने बन शमा तक पहुंच जायें। ठीक है मातायें। अभी दूसरे वर्ष की रिजल्ट में एक एक माता एक-एक मास में एक-एक तैयार करो। हो सकता है? एक दिन में नहीं, एक मास में। अच्छा अगर एक मास में नहीं करो तो चलो दो मास में करो। रिजल्ट आती है ना! इस साल में इतनी मातायें, दूसरे साल में इतनी हो गई। तो बापदादा देखेंगे कि नये साल में जो इतनी मातायें आईं उन्होंने संख्या कितनी बढ़ाई। लिस्ट है कितनी मातायें आई हैं? अलग लिस्ट नहीं निकालते? (4 हजार मातायें हैं) अच्छा, 4 हजार मातायें आई हैं तो कितनी वृद्धि होगी देख लेंगे। हिम्मत है? जो समझते हैं हो सकता है वह हाथ उठाओ। ऐसे ही हाथ नहीं उठाना, टी.वी. में फोटो आ रहा है। माताओं से तो विशेष प्यार है तभी देखो माताओं के कारण बाप का गऊपाल नाम पड़ा है। तो माताओं के कारण गऊपाल नाम है। बहुत अच्छा, मातायें भी बहुत हैं।

**अधर कुमार उठो** - अधर कुमार भी कम नहीं हैं। देखो, अधरकुमारों ने बापदादा का बहुत नाम बाला किया है। जानते हो क्या? जो बहुतकाल से व्यर्थ वायब्रेशन था तो यह परिवार छुड़ाते हैं लेकिन अधरकुमारों ने यह जो व्यर्थ संकल्प था, वह समाप्त कर दिया। तो मुबारक हो आपको क्योंकि बाप की सेवा में प्रैक्टिकल जीवन से रेसपान्ड दिया, तो बहुत अच्छा। अधरकुमार और अधरकुमारियों को बापदादा सदा महात्माओं को जीतने वाले कहते हैं। आपके चरणों में आयेंगे। जो महात्मायें काम नहीं कर सके वह आपने करके दिखाया। कमल पुष्प, एक एक कमल पुष्प समान प्रवृत्ति में रहते, पर-वृत्ति में रहने वाले। इसलिए सदा बढ़ते रहो और बढ़ाते रहो। अधरकुमारों की संख्या भी बढ़नी चाहिए। ठीक है ना! हिम्मत है? कहो हॉ बाबा हिम्मत हमारी, मदद आपकी। बहुत अच्छा। कमाल है। साथ रहते न्यारे और प्यारे। इसलिए बापदादा सभी अधरकुमार और कुमारियों को भी दिल से बहुत-बहुत दुआयें देते हैं। सदा बढ़ते रहो। अच्छा।

सेवा में बंगाल, बिहार, उड़ीसा, आसाम, नेपाल, तामिलनाडु (ईस्टर्न) का टर्न है। अच्छा - टीचर्स उठो। देखो निमित्त टोटल ईस्टर्न ज़ोन कहते हैं, तो निमित्त आपकी परदादी है। परदादी मिली है इसलिए कितनी स्टेट आ गई हैं। परदादी बड़ी होती है ना! तो इसमें स्टेट भी अच्छी-अच्छी हैं। अच्छा है। आपकी सेना अच्छी है। देखो, परदादी को देखा है। अच्छा है। आदि से अब तक कितना अच्छा पार्ट बजाया है। फ़ालो लौकिक फ़ादर और फ़ालो अलौकिक फ़ादर और फ़ालो पारलौकिक फ़ादर। बहुत अच्छा देखो लश्कर कितना अच्छा है। अच्छी सेवा दिल से की है। रिज़ल्ट बहुत अच्छी है। दिल से सेवा की है और दिल से सहयोगी भी बने हो। इसलिए सदा और ज़्यादा-से-ज़्यादा बढ़ाते चलो। बढ़ते रहेंगे और सदा बढ़ाते रहेंगे। अच्छा है। पुरानी-पुरानी टीचर्स भी बहुत हैं। सर्विस के आदिकाल की टीचर्स हैं। स्थापना के आदि की थोड़ी हैं। लेकिन सेवा के आदि रत्न अच्छे-अच्छे हैं। बहुत अच्छा, एक एक की महिमा क्या करें। एक एक रत्न महान है, विशेष आत्मा है। अच्छा। हिम्मत रखकर आ गई बहुत अच्छा किया। अच्छा।

सभी से स्पेशल मिलना हुआ ना! कोई रह गये ?

**बच्चे रह गये हैं** - बच्चे सदा हर स्थान का श्रृंगार होते हैं तो बच्चे कैसे रहेंगे, बच्चे पहले। बच्चों से तो बापदादा का अक्षोणी प्यार है। देखो, अपना हक ले लिया ना! चतुर है। अच्छा है। इस विश्व विद्यालय की स्थापना भी बच्चों से हुई है। पहले बच्चे ही तो बड़े हुए हैं ना! बहुत अच्छा। बच्चे हैं बापदादा के सिर के ताज। अच्छा। तो सदा डबल पढ़ाई में नम्बरवन लेते रहना। लौकिक पढ़ाई में भी नम्बर दो तीन नहीं, नम्बरवन और अलौकिक पढ़ाई में भी नम्बरवन। ऐसे बच्चे बनना है। अच्छा।

**मीडिया** - (108 रत्न आये हैं) अच्छा है मीडिया वाले कमाल करके दिखावें जो सबके बुद्धि में आवे कि बाप से वर्सा लेना ही है। कोई वंचित नहीं रह जाए। मीडिया का काम ही है आवाज फैलाना। तो यह आवाज फैलाओ कि बाप से वर्सा ले लो। कोई वंचित नहीं रह जाए। अभी विदेश में भी

मीडिया का प्रोग्राम चलता रहता है ना! अच्छा है। भिन्न-भिन्न रूप से जो प्रोग्राम रखते हैं तो अच्छे इन्ट्रेस्टेड होते हैं। अच्छा कर रहे हैं और करते रहेंगे और सफलता तो है ही। सभी वर्ग वाले जो भी सेवा कर रहे हैं बापदादा के पास समाचार आता रहता है, हर वर्ग की अपनी-अपनी सेवा के साधन और सेवा की रूपरेखा है लेकिन यह देखा कि वर्ग अलग-अलग होने से हर वर्ग एक दो से रेस भी करते हैं, अच्छा है। रीस नहीं करना, रेस भले करो। हर वर्ग की रिज़ल्ट, वर्ग की सेवा के बाद आई.पी. और वी.आई.पी. सम्पर्क में काफी आये हैं, अभी माइक नहीं लाये हैं लेकिन सम्बन्ध-सम्पर्क में आये हैं। अच्छा -

बापदादा वाली एक्सरसाइज़ याद है? अभी-अभी निराकारी, अभी-अभी फ़रिश्ता... यह है चलते फिरते बाप और दादा के प्यार का रिटर्न। तो अभी-अभी यह रूहानी एक्सरसाइज़ करो। सेकण्ड में निराकारी, सेकण्ड में फ़रिश्ता। (बापदादा ने ड्रिल कराई) अच्छा - चलते-फिरते सारे दिन में यह एक्सरसाइज़ बाप की सहज याद दिलायेगी।

चारों ओर के बच्चों की याद सभी तरफ से बापदादा को पहुंची है। हर एक बच्चा समझता है हमारी याद देना, हमारी याद देना। कोई पत्र द्वारा भेजते, कोई कार्डों द्वारा, कोई मुख द्वारा लेकिन बापदादा चारों ओर के बच्चों को, एक-एक को नयनों में समाते हुए याद का रेसपान्ड पद्मगुणा यादप्यार दे रहे हैं। बापदादा देख रहे हैं सबके मन में इस समय कितना भी बजा है लेकिन मैजारिटी के मन में मधुबन और मधुबन का बापदादा है।

चारों ओर के तीनों तख़्तनशीन, स्वराज्य अधिकारी बच्चों को, सदा बापदादा को रिटर्न बाप समान बनने वाले बच्चों को, सदा रिटर्न जरनी के स्मृति स्वरूप बच्चों को, सदा संकल्प, वाणी और कर्म में फ़ालो फ़ादर करने वाले हर एक बच्चे को बापदादा का बहुत-बहुत-बहुत यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से – सब अच्छा सहयोग दे रहे हैं और देते रहेंगे, स्थापना के साथी हो। मैजारिटी सब आदि रत्न हैं, जो अभी आगे बैठे हैं। (सभी ने चार्ट लिखा है) बापदादा ने समाचार सुना लेकिन मध्यम से श्रेष्ठ बनना ही है।





## समय प्रमाण लक्ष्य और लक्षण की समानता द्वारा बाप समान बनो

आज चारों ओर के सर्व स्वमानधारी बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। इस संगम पर जो आप बच्चों को स्वमान मिलता है उससे बड़ा स्वमान सारे कल्प में किसी भी आत्मा को प्राप्त नहीं हो सकता है। कितना बड़ा स्वमान है, इसको जानते हो? स्वमान का नशा कितना बड़ा है, यह स्मृति में रहता है? स्वमान की माला बहुत बड़ी है। एक एक दाना गिनते जाओ और स्वमान के नशे में लवलीन हो जाओ। यह स्वमान अर्थात् टाइटल्स स्वयं बापदादा द्वारा मिले हैं। परमात्मा द्वारा स्वमान प्राप्त है। इसलिए इस स्वमान के रूहानी नशे को कोई अर्थॉरिटी नहीं जो हिला सके क्योंकि आलमाइटी अर्थॉरिटी द्वारा प्राप्ति है।

तो बापदादा ने आज अमृतवेले सारे विश्व के सर्व बच्चों के तरफ चक्कर लगाते देखा कि हर एक बच्चे की स्मृति में कितने स्वमानों की माला पड़ी हुई है। माला को धारण करना अर्थात् स्मृति द्वारा उसी स्थिति में स्थित रहना। तो अपने को चेक करो - यह स्मृति की स्थिति कहाँ तक रहती है? बापदादा देख रहे थे कि स्वमान का निश्चय और उसका रूहानी नशा दोनों का बैलेन्स कितना रहता है? निश्चय है - नॉलेजफुल बनना और रूहानी नशा है - पाँवरफुल बनना। तो नॉलेजफुल में भी दो प्रकार देखे - एक है नॉलेजफुल। दूसरे हैं नॉलेजेबुल (ज्ञान स्वरूप) तो अपने से पूछो - मैं कौन? बापदादा जानते हैं कि बच्चों का लक्ष्य बहुत ऊंचा है। लक्ष्य ऊंचा है ना, क्या ऊंचा है? सभी कहते हैं बाप समान बनेंगे। तो जैसे बाप ऊंचे ते ऊंचा है तो बाप समान बनने का लक्ष्य कितना ऊंचा है! तो लक्ष्य को देख बापदादा बहुत खुश होते हैं लेकिन.... लेकिन बतायें क्या? लेकिन क्या...वह टीचर्स वा डबल फारेनर्स सुनेंगे? समझ तो गये होंगे। बापदादा लक्ष्य और लक्षण समान चाहते हैं। अभी अपने से पूछो कि लक्ष्य और लक्षण अर्थात् प्रैक्टिकल

स्थिति समान है? क्योंकि लक्ष्य और लक्षण का समान होना - यही बाप समान बनना है। समय प्रमाण इस समानता को समीप लाओ।

वर्तमान समय बापदादा बच्चों की एक बात देख नहीं सकते। कई बच्चे भिन्न-भिन्न प्रकार की बाप समान बनने की मेहनत करते हैं, बाप की मोहब्बत के आगे मेहनत करने की आवश्यकता ही नहीं है, जहाँ मोहब्बत है वहाँ मेहनत नहीं। जब उल्टा नशा देह-अभिमान का नेचर बन गई, नेचुरल बन गया। क्या देह-अभिमान में आने में पुरुषार्थ करना पड़ता? या 63 जन्म पुरुषार्थ किया? नेचर बन गई, नेचुरल बन गया। जो अभी भी कभी-कभी यही कहते हो कि देही के बजाए देह में आ जाते हैं। तो जैसे देह-अभिमान, नेचर और नेचुरल रहा वैसे अभी देही-अभिमानी स्थिति भी नेचुरल और नेचर हो, नेचर बदलना मुश्किल होती है। अभी भी कभी-कभी कहते हो ना कि मेरा भाव नहीं है, नेचर है। तो उस नेचर को नेचुरल बनाया है और बाप समान नेचर को नेचुरल नहीं बना सकते! उल्टी नेचर के वश हो जाते हैं और यथार्थ नेचर बाप समान बनने की, इसमें मेहनत क्यों? तो बापदादा अभी सभी बच्चों की देही-अभिमानी रहने की नेचुरल नेचर देखने चाहते हैं। ब्रह्मा बाप को देखा चलते-फिरते कोई भी कार्य करते देही-अभिमानी स्थिति नेचुरल नेचर थी।

बापदादा ने समाचार सुना कि आजकल विशेष दादियां यह रूह्रूहान करती हैं - फ़रिश्ता अवस्था, कर्मातीत अवस्था, बाप समान अवस्था नेचुरल कैसे बनें? नेचर बन जाए, यह रूह्रूहान करते हो ना! दादी को भी यही बार-बार आता है ना - फ़रिश्ता बन जाएं, कर्मातीत बन जाएं, बाप प्रत्यक्ष हो जाए। तो फ़रिश्ता बनना वा निराकारी कर्मातीत अवस्था बनने का विशेष साधन है - निरहंकारी बनना। निरहंकारी ही निराकारी बन सकता है। इसलिए बाप ने ब्रह्मा द्वारा लास्ट मन्त्र निराकारी के साथ निरहंकारी कहा। सिर्फ अपनी देह या दूसरे की देह में फंसना, इसको ही देह अहंकार या देह-भान नहीं कहा जाता है। देह अहंकार भी है, देह भान भी है। अपनी देह या

दूसरे की देह के भान में रहना, लगाव में रहना - उसमें तो मैजारिटी पास हैं। जो पुरुषार्थ की लगन में रहते हैं, सच्चे पुरुषार्थी हैं, वह इस मोटे रूप से परे हैं। लेकिन देह-भान के सूक्ष्म अनेक रूप हैं, इसकी लिस्ट आपस में निकालना। बापदादा आज नहीं सुनाते हैं। आज इतना ही इशारा बहुत है क्योंकि सभी समझदार हैं। आप सब जानते हो ना, अगर सभी से पूछेंगे ना, तो सब बहुत होशियारी से सुनायेंगे। लेकिन बापदादा सिर्फ छोटा-सा सहज पुरुषार्थ बताते हैं कि सदा मन-वचन-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क में लास्ट मन्त्र तीन शब्दों का (निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी) सदा याद रखो। संकल्प करते हो तो चेक करो - महामन्त्र सम्पन्न है? ऐसे ही बोल, कर्म सबमें सिर्फ तीन शब्द याद रखो और समानता करो। यह तो सहज है ना? सारी मुरली नहीं कहते हैं याद करो, तीन शब्द। यह महामन्त्र संकल्प को भी श्रेष्ठ बना देगा। वाणी में निर्माणता लायेगा। कर्म में सेवा भाव लायेगा। सम्बन्ध-सम्पर्क में सदा शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना की वृत्ति बनायेगा।

बापदादा सेवा का समाचार भी सुनते हैं, सेवा में आजकल भिन्न-भिन्न कोर्स कराते हो, लेकिन अभी एक कोर्स रह गया है। वह है हर आत्मा में जो शक्ति चाहिए, वह फोर्स का कोर्स कराना। शक्ति भरने का कोर्स, वाणी द्वारा सुनाने का कोर्स नहीं, वाणी के साथ-साथ शक्ति भरने का कोर्स भी हो। जिससे अच्छा-अच्छा कहें नहीं लेकिन अच्छा बन जाएं। यह वर्णन करें कि आज मुझे शक्ति की अंचली मिली। अंचली भी अनुभव हो तो उन आत्माओं के लिए बहुत है। कोर्स कराओ लेकिन पहले अपने को कराके फिर कहो। तो सुना बापदादा क्या चाहते हैं? लक्ष्य और लक्षण को समान बनाओ। लक्ष्य सभी का देखकर बापदादा बहुत-बहुत खुश होते हैं। अब सिर्फ समान बनाओ, तो बाप समान बहुत सहज बन जायेंगे।

बापदादा तो बच्चों को समान से भी ऊंचा, अपने से भी ऊंचा देखते हैं। सदा बापदादा बच्चों को सिर का ताज कहते हैं। तो ताज तो सिर से भी ऊंचा होता है ना! टीचर्स - सिर के ताज हो?

टीचर्स से - देखो, कितनी टीचर्स हैं। एक ग्रुप में इतनी टीचर्स तो हर ग्रुप में कितनी टीचर्स होंगी! टीचर्स ने बापदादा की एक आश पूरी करने का संकल्प किया है लेकिन सामने नहीं लाया है। जानते हो कौन-सी? एक तो बापदादा ने कहा है कि अभी वारिसों की माला बनाओ। वारिसों की माला, जनरल माला नहीं। दूसरा - सम्बन्ध-सम्पर्क वालों को माइक बनाओ। आप नहीं भाषण करो लेकिन वह आपकी तरफ से मीडिया बन जायें। अपनी मीडिया बनाओ। मीडिया क्या करता है? उल्टा या सुल्टा आवाज फैलाता है ना! तो माइक ऐसे तैयार हों जो मीडिया समान प्रत्यक्षता का आवाज फैलाये। आप कहेंगे भगवान आ गया, भगवान आ गया.... वह तो कामन समझते हैं लेकिन आपकी तरफ से दूसरे कहें, अथॉरिटी वाले कहें, पहले आप लोगों को शक्तियों के रूप में प्रत्यक्ष करें। जब शक्तियां प्रत्यक्ष होंगी तब बाप प्रत्यक्ष होगा। तो बनाओ, मीडिया तैयार करो। देखेंगे। किया है? चलो कंगन ही सही, माला छोड़ो, तैयार किया है? हाथ उठाओ जिसने ऐसे तैयार किया है? बापदादा देखेंगे कौन से तैयार किये हैं, अच्छा हिम्मत तो रखी है। सुना - टीचर्स को क्या करना है! शिवरात्रि पर वारिस क्वालिटी तैयार करो। माइक तैयार करो, तब फिर दूसरे वर्ष शिवरात्रि पर सबके मुख से शिव बाप आ गया, यह आवाज निकले। ऐसी शिवरात्रि मनाओ। प्रोग्राम तो बहुत अच्छे बनाये हैं। प्रोग्राम सबको भेजे हैं ना। प्रोग्राम तो ठीक बनाया है लेकिन हर प्रोग्राम से कोई माइक तैयार हो, कोई वारिस तैयार हो। यह पुरुषार्थ करो, भाषण किया चले गये, ऐसा नहीं। यह तो 66 वर्ष हो गये और 50 वर्ष सेवा के भी मना लिए। अभी शिवरात्रि की डायमण्ड जुबली मनाओ। यह दो प्रकार की आत्मायें तैयार करो, फिर देखो नगाड़ा बजता है या नहीं। नगाड़े आप थोड़ेही बजायेंगे। आप तो देवियां हो साक्षात्कार करायेंगी। नगाड़े बजाने वाले तैयार करो। जो प्रैक्टिकल गीत गायें शिव शक्तियां आ गईं। सुना - शिवरात्रि पर क्या करेंगी! ऐसे ही भाषण करके पूरा नहीं करना। फिर लिखेंगी बाबा 500-1000, लाख आदमी आ गये, आ तो गये सन्देश दिया,

लेकिन वारिस कितने निकले, माइक कितने निकले, अभी वह समाचार देना। जो अभी तक किया धरनी बनाई, सन्देश दिया, उसको बाबा अच्छा कहते हैं, वह सेवा व्यर्थ नहीं गई है, समर्थ हुई है। प्रजा तो बनी है, रॉयल फैमिली तो बनी है लेकिन राजा रानी भी तो चाहिए। राजा रानी तख्त वाले नहीं, राजा रानी के साथ वहाँ दरबार में भी राजे समान बैठते हैं, ऐसे तो बनाओ। राज्य दरबार शोभा वाली हो जाए। सुना, शिवरात्रि पर क्या करना है। पाण्डव सुन रहे हो। हाथ उठाओ। ध्यान दिया। अच्छा। बड़े-बड़े महारथी बैठे हैं। बापदादा खुश होते हैं, यह भी दिल का प्यार है, क्योंकि आप सबका संकल्प चलता है ना, प्रत्यक्षता कब होगी, कब होगी... तो बापदादा सुनता रहता है। क्या सुना मधुबन वालों ने? मधुबन वालों ने सुना। मधुबन, शान्तिवन, ज्ञान सरोवर वाले, सभी मधुबन निवासी हैं। अच्छा।

मधुबन से नगाड़ा बजेगा, कहाँ से नगाड़ा बजेगा? (दिल्ली से) मधुबन से नहीं? कहो चारों ओर से। एक तरफ से नहीं बजेगा। मधुबन से भी बजेगा, तो चारों ओर से बजेगा तभी कुम्भकरण जायेंगे। मधुबन वाले जैसे सेवा में अथक होकर सेवा का पार्ट बजा रहे हो ना, ऐसे यह भी मन्सा सेवा करते रहो। सिर्फ कर्मणा नहीं, मन्सा, वाचा, कर्मणा तीनों सेवा, करते भी हो और ज्यादा करना। अच्छा। मधुबन वाले भूले नहीं हैं। मधुबन वाले सोचते हैं बापदादा आते मधुबन में है लेकिन मधुबन का नाम नहीं लेते। मधुबन तो सदा याद है ही। मधुबन नहीं होता तो यह आते कहाँ! आप सेवाधारी सेवा नहीं करते तो यह खाते, रहते कैसे! तो मधुबन वालों को बापदादा भी दिल से याद करते और दिल से दुआयें देते हैं। अच्छा। मधुबन से भी प्यार, टीचर्स से भी प्यार, मीठी-मीठी माताओं से भी प्यार और साथ में महावीर पाण्डवों से भी प्यार। पाण्डवों के बिना भी गति नहीं है। इसीलिए चतुर्भुज रूप की महिमा ज्यादा है। पाण्डव और शक्तियाँ दोनों का कम्बाइण्ड रूप विष्णु चतुर्भुज है।

**माताओं से –** मातायें तो बहुत हैं। अभी मातायें वह कपड़े का झण्डा नहीं

उठाओ। कपड़े का झण्डा उठाकर कहते हो ना भगवान आ गया, जागो जागो... लेकिन अभी सच्चा आवाज निकालो। सबके दिल से आवाज निकलवाओ। सच्ची शिवरात्रि मनाओ। सुना माताओं ने। दिल में बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहराओ। झण्डा लहराना आता है ना! होशियार हैं। मातायें कम नहीं हैं। बस अभी जगाओ। आपके बच्चे कुम्भकरण सोये हुए हैं। अभी समय आ गया है, अभी उन्हीं को जगाओ। उनके मुख से निकालो - बाप आ गया। मातायें ऐसी शिवरात्रि मनाना, कमाल दिखाना। हाथ तो बहुत अच्छा हिला रहे हो, बापदादा खुश है। इस शिवरात्रि पर देखेंगे क्या समाचार आता है। फंक्शन किया, यह नहीं। फंक्शन करो लेकिन निकालना ज़रूर। अच्छा। मातायें तो बहुत हैं, माताओं से ही ब्राह्मण परिवार की शोभा है। माताओं की विशेषता है, चाहे कैसे भी गांव की मातायें हों लेकिन जिस सेवाकेन्द्र पर माताओं की संख्या ज्यादा होगी वहाँ भण्डारी और भण्डारा भरपूर। चाहे पाण्डव एक हो, मातायें 25 हों, लेकिन दिल बड़ी है। अच्छा।

**डबल फारेनर्स से** - डबल फारेनर्स फारेन से मीडिया ग्रुप तैयार करेंगे? हाथ उठाओ जो मीडिया ग्रुप तैयार करेंगे? बापदादा ने सुना कि 30 देशों से आये हैं। तो कम से कम 30 देशों में तो जाकर आलमाइटी मीडिया बनायेंगे ना? क्या करेंगी बहनें? शक्तियां क्या करेंगी? अच्छा है, देखो कितना बाप से प्यार है, कितने समुद्र पार करके आते हैं। बापदादा को डबल विदेशियों पर नाज़ है, प्यार तो सभी से है लेकिन प्यार के साथ नाज़ भी है कि बाप का सन्देश कोने-कोने में फैलाने के लिए निमित्त बन गये। नहीं तो इण्डिया की बहनें पहले तो लैंग्वेज सीखें फिर सन्देश देवें। लेकिन आप लोगों ने देखो चैरिटी बिगन्स एट होम करके दिखाया है। अभी तो सिर्फ 30 देश आये हैं लेकिन है तो बहुत देशों में ना! तो बहुत अच्छा सन्देश वाहक बने हो। एक-एक बच्चे की विशेषता देख-देख बापदादा बहुत खुश होते हैं। एक बात की डबल विदेशियों में विशेषता है। भारत के विशेषता की लिस्ट अपनी है लेकिन अभी डबल विदेशियों के विशेषता की बात है। तो डबल

विदेशी अनुभव से कहते हैं हम ब्रह्मा के बच्चे हैं। हैं विदेशी लेकिन अनुभव से कहते हैं सिर्फ दिमाग से नहीं। दिल से कहते हैं हम ब्रह्माकुमार हैं, हम ब्रह्माकुमारी हैं। दिल से, अनुभव से कहते हो ना! कहने से नहीं कहते, सुनने से नहीं कहते, अनुभव से कहते हैं। रूहानी नशा है ना, ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी बनने का। है नशा? जितना नशा है उतना जोर से हाथ हिलाओ। यह तो बापदादा भी वेरीफाय करते हैं कि ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी का नशा है। अभी विदेश में शिवरात्रि इतना नहीं करते, 18 जनवरी मनाते हैं। शिवरात्रि यहाँ मनाते हैं और 18 जनवरी या जनवरी में सेवा की धूम मचाते हैं, यह भी अच्छा है लेकिन सेवा में अभी बापदादा देखेंगे कि वारिस और माइक पहला नम्बर कौन निकालते हैं। उसको चांदी का ब्रह्मा बाप देंगे। इनाम देंगे। चाहे भारत वाला हो, चाहे विदेश वाला हो। जो भी निकालेंगे, उनको वह प्राइज मिलेगी। जितने भी सेन्टर्स निकालें, बापदादा के पास भण्डारा भरपूर है। ठीक है ना!

पाण्डव क्या करेंगे? पाण्डव क्या करत भये? पाण्डवों की विजय गाई हुई है। बापदादा पाण्डवों के मस्तक में सदा विकट्री (V) देखते हैं और विकट्री के बीच में आत्मा चमक रही है। जैसे पाण्डवों का गायन है, पाण्डवों को ड्रामानुसार यादगार में भी विजय का वरदान मिला हुआ है। गायन ही है विजयी पाण्डव। तो पाण्डवों को कभी भी किसी भी बात में हार नहीं खाना है। बापदादा के गले का हार बनना, हार खाना नहीं। जब भी कोई ऐसी बात आवे ना, तो कहो हम बापदादा के गले का हार हैं, हार खाने वाले नहीं हैं। ऐसे पक्के हो? कि थोड़ी-थोड़ी हार खा भी लेते हो? चलो बीती सो बीती। अभी हार नहीं खाना। विजय गले का हार है, हम बाप के गले का हार हैं। हार खाने वाले नहीं। हार खाने वाले तो करोड़ों आत्मायें हैं, आप नहीं हैं। आप तो करोड़ों में कोई, कोई में भी कोई आत्मा हो। मधुबन वाले पाण्डव नशा है ना? विजय का नशा और नशा नहीं। अच्छे हैं, पाण्डव भवन में मैजारिटी पाण्डव हैं, पाण्डव नहीं होते तो आप सबको मधुबन में मजा नहीं आता

इसलिए बलिहारी मधुबन निवासियों की जो आपको मौज़ से रहाते, खिलाते और उड़ाते हैं। आज बापदादा को मधुबन निवासी अमृतवेले से याद आ रहे हैं। चाहे यहाँ हैं, चाहे ऊपर बैठे हुए हैं, चाहे मधुबन वाले कोई यहाँ भी ड्युटी पर हैं लेकिन चारों तरफ के मधुबन निवासियों को बापदादा ने अमृतवेले से याद दिया है।

**यू.पी. के सेवाधारियों से** – यह (मधुबन वाले) तो सदा के सेवाधारी हैं, आप एक टर्न के सेवाधारी हैं। हर एक ने अपना एक टर्न में अविनाशी पुण्य का खाता बना दिया। थोड़े समय की सेवा अनेक जन्मों के पुण्य की लकीर, भाग्य की बना ली। तो चतुरसुजान निकले ना! एक जन्म में अनेक जन्मों का बना दिया। बापदादा सेवाधारियों को देख विशेष खुश होता है, क्यों? क्यों खुश होता है? क्योंकि आप सब पुरानों को याद होगा कि ब्रह्मा बाप जब साइन करते थे तो क्या करते थे? वर्ल्ड सर्वेन्ट। सेवाधारी। और निराकार बाप भी किसलिए आया है? सेवाधारी बनकर आया है ना? इसलिए बापदादा को सेवाधारी बहुत याद आते, प्यारे लगते हैं। और यह भी अच्छा है जो मैजारिटी सभी आत्माओं को यज्ञ सेवा का पुण्य प्रोग्राम प्रमाण मिल जाता है। यह भी अच्छा है। अच्छा।

यू.पी. की सेवाधारी टीचर्स ठीक है ना? बहुत अच्छा। बापदादा ने कहा ना टीचर्स को सदा बापदादा गुरुभाई के रूप में देखता है। अच्छा।

**छोटे बच्चों से** – बच्चे महात्मा है ना? देखो, बच्चों को भी कितना प्यार है। बच्चे तो चैलेन्ज करने वाले हैं। आजकल प्रेजीडेंट भी बच्चों की बात मानते हैं। भारत का प्रेजीडेंट भी बच्चों को मानते हैं। तो बापदादा भी बच्चों को प्यार करते हैं। ठीक हैं सब बच्चे। ठीक हैं तो हाथ हिलाओ। बहुत अच्छा। सदा बाबा, बाबा, बाबा कहते रहना। याद में रहना।

**कुमारियों से** – कुमारियां भी बहुत हैं लेकिन कौन सी कुमारियां हों? 21 जन्म तारने वाली कुमारियां हो या बंधन वाली कुमारियां हो? कुमारी वह जो आत्माओं के 21 जन्म श्रेष्ठ बनाये। कुमारियों की यह महिमा है।



अगर बंधन भी है नौकरी का या संबंध का, तो भी कुमारी शक्ति है। अपने योग की शक्ति से अपने को निर्बन्धन बना सकती है। बापदादा यह नहीं कहते कि नौकरी नहीं करो, लेकिन नौकरी करते हुए डबल नौकरी, सेवा करो। फारेन की यह विशेषता है, बापदादा ने फारेन में यह विशेषता देखी है जॉब भी करते, सेन्टर भी सम्भालते, इसलिए बापदादा ऐसे बच्चों को डबल मुबारक देते हैं। सरकमस्टांश हैं तो बापदादा मना नहीं करते, लेकिन बैलेन्स। तो ऐसी कुमारियां हो? सेन्टर खोलें, सेन्टर सम्भालेंगी? इतनी कुमारियां मिलेंगी! सेन्टर खोले? हाथ उठाओ जो हाँ करती हैं, आर्डर करें सेन्टर खोलो, जायेंगी सेन्टर पर? थोड़े हाथ उठा रहे हैं। देखना टी.वी. में आपका फोटो आ गया। अच्छा। हिम्मत वाली हैं। हिम्मत से बाप की मदद मिलती है। अच्छा, मुबारक हो। सेन्टर पर आने की मुबारक हो।

**कुमारों से** - कुमार - वारिस बना सकते हैं। कुमार माइक भी बना सकते हैं। कुमार तो गवर्मेन्ट को जगा सकते हैं। कुमार कमाल करके दिखायेंगे। वह दिन भी आना ही है। तो कुमारों को जगाओ, समीप लाओ। उनको जगाओ कहो आप भी कुमार, हम भी कुमार, आओ तो आपको कहानियां सुनायें। अच्छा।

बापदादा ने जो रूहानी एक्सरसाइज़ दी है, वह सारे दिन में कितने बार करते हो? और कितने समय में करते हो? निराकारी और फ़रिश्ता। बाप और दादा, अभी-अभी निराकारी, अभी-अभी फ़रिश्ता स्वरूप। दोनों में देह-भान नहीं है। तो देह-भान से परे होना है तो यह रूहानी एक्सरसाइज़ कर्म करते भी अपनी ड्युटी बजाते हुए भी एक सेकण्ड में अभ्यास कर सकते हो। यह एक नेचुरल अभ्यास हो जाए - अभी-अभी निराकारी, अभी-अभी फ़रिश्ता। अच्छा। (बापदादा ने ड्रिल कराई)

**ऐसे निरन्तर भव!** चारों ओर के बापदादा की याद में मगन रहने वाले बाप समान बनने के लक्ष्य को लक्षण में समान बनाने वाले, जो कोने-कोने में साइंस के साधनों से दिन वा

रात जाग करके बैठे हुए हैं, उन बच्चों को भी बापदादा यादप्यार, मुबारक और दिल की दुआयें दे रहे हैं। बापदादा जानते हैं सभी के दिल में इस समय दिलाराम बाप की याद समाई हुई है। हर एक कोने-कोने में बैठे हुए बच्चों को बापदादा पर्सनल नाम से यादप्यार दे रहे हैं। नामों की माला जपें तो रात पूरी हो जायेगी। बापदादा सभी बच्चों को याद देते हैं, चाहे पुरुषार्थ में कौन सा भी नम्बर हो लेकिन बापदादा सदा हर बच्चे के श्रेष्ठ स्वमान को यादप्यार देते हैं और नमस्ते करते हैं। यादप्यार देने के समय बापदादा के सामने चारों ओर का हर बच्चा याद है। कोई एक बच्चा भी किसी भी कोने में, गांव में, शहर में, देश में, विदेश में, जहाँ भी है, बापदादा उसको स्वमान याद दिलाते हुए यादप्यार देते हैं। सब यादप्यार के अधिकारी हैं क्योंकि बाबा कहा तो यादप्यार के अधिकारी हैं ही। आप सभी सम्मुख वालों को भी बापदादा स्वमान के मालाधारी स्वरूप में देख रहे हैं। सभी को बाप समान स्वमान स्वरूप में यादप्यार और नमस्ते।

दादी जी से - ठीक हो गई, अभी कोई बीमारी नहीं है। भाग गई। वह सिर्फ दिखाने के लिए आई जो सभी देखें कि हमारे पास भी आती है तो कोई बड़ी बात नहीं है।

सभी दादियां बहुत अच्छा पार्ट बजा रही हो। बापदादा सबके पार्ट को देख करके खुश होते हैं। (निर्मलशान्ता दादी से) आदि रत्न हो ना! अनादि रूप में भी निराकारी बाप के समीप हो, साथ-साथ रहते हो और आदि रूप में भी राज्य दरबार के साथी हो। सदा रॉयल फैमिली के भी रॉयल हो और संगम पर भी आदि रत्न बनने का भाग्य मिला है। तो बहुत बड़ा भाग्य है, है ना भाग्य? आपका हाज़िर रहना ही सबके लिए वरदान है। बोलो नहीं बोलो, कुछ करो नहीं करो लेकिन आपका हाज़िर रहना ही सबके लिए वरदान है। अच्छा। ओम् शान्ति।



## इस नये वर्ष में सर्व खज़ाने सफल कर सफलतामूर्त बनने की विशेषता दिखाओ

आज नव युग रचता, नव जीवन दाता बापदादा नव वर्ष मनाने आये हैं। आप सभी भी नव वर्ष मनाने आये हो वा नव युग मनाने के लिए आये हो? नव वर्ष तो सभी मनाते हैं लेकिन आप सभी नव जीवन, नव युग और नव वर्ष तीनों ही मना रहे हो। बापदादा भी त्रिमूर्ति मुबारक दे रहे हैं। नव वर्ष की एक दो को मुबारक देते हैं और साथ में कोई न कोई गिफ्ट भी देते हैं। गिफ्ट देते हो ना! लेकिन बापदादा ने आप सबको कौन सी गिफ्ट दी है? गोल्डन दुनिया की गिफ्ट दी है। सभी को गोल्डन दुनिया की गिफ्ट मिल गई है ना! जिस गोल्डन दुनिया में, नव युग में सर्व प्राप्तियां हैं। याद है अपना राज्य? कोई अप्राप्ति का नाम-निशान नहीं है। ऐसी गिफ्ट सिवाए बापदादा के और कोई दे नहीं सकता। सारे विश्व में अगर कोई बड़े ते बड़ी सौगात देंगे भी तो क्या देंगे? बड़े ते बड़ा ताज वा तख्त दे देंगे। जब स्थापना हुई थी, (आगे-आगे बैठे हैं स्थापना वाले) तब आदि में ही ब्रह्मा बाप बच्चों से पूछते थे कि अगर आपको आजकल की कोई भी रानी ताज और तख्त देवे तो आप जायेंगे? याद है ना! तो बच्चे कहते थे इस ताज और तख्त को क्या करेंगे, जब बाप मिल गया तो यह क्या! तो इस गोल्डन वर्ल्ड की गिफ्ट के आगे कोई भी गिफ्ट बड़ी नहीं हो सकती। कई बच्चे पूछते हैं वहाँ क्या-क्या प्राप्ति होगी? तो बापदादा कहते हैं प्राप्तिओं की लिस्ट तो लम्बी है लेकिन सार रूप में क्या कहेंगे! अप्राप्त कोई नहीं वस्तु, जो जीवन में चाहिए वह सब प्राप्त होंगे। तो ऐसी गोल्डन गिफ्ट की अधिकारी आत्मायें हो। अधिकारी हैं ना! डबल विदेशी अधिकारी हैं? (हाथ हिलाते हैं) सभी राजा बनेंगे? राजा बनेंगे, अच्छा। इतने तख्त तैयार करने पड़ेंगे। बापदादा कहते हैं वह तख्त तो तख्त है, सर्व प्राप्ति हैं लेकिन इस संगमयुग का स्वराज्य उससे कम नहीं है। अभी भी राजा हो ना! प्रजा हो या रायल फैमिली हो? क्या हो? एक ही बाप है जो फलक से कहते हैं कि मेरा एक-एक बच्चा राजा बच्चा है। राजा हो

ना! राजयोगी हो कि प्रजा योगी हो? इस समय सब दिलतख्तानशीन, स्वराज्य अधिकारी राजा बच्चा हो। इतना रूहानी नशा रहता है ना? क्योंकि इस समय के स्वराज्य से ही भविष्य राज्य प्राप्त होता है। यह संगमयुग बहुत-बहुत-बहुत अमूल्य श्रेष्ठ है। संगमयुग को बापदादा और सभी बच्चे जानते हैं, खुशी-खुशी में संगमयुग को नाम क्या देते हैं? मौजों का युग। क्यों? यहाँ संगम जैसी मौज सारे कल्प में नहीं है। कारण? परमात्म मिलन की मौज सारे कल्प में अब मिलती है। संगमयुग का एक एक दिन क्या है? मौज ही मौज है। मौज है ना? मौज है, मूँझते तो नहीं हो ना! हर दिन उत्सव है क्योंकि उत्साह है। उमंग है, उत्साह है कि अपने सर्व भाई बहनों को परमात्मा पिता का बनायें। सेवा का उमंग-उत्साह रहता है ना! यह करें, यह करें, यह करें... प्लैन बनाते हो ना! क्योंकि जो श्रेष्ठ प्राप्ति होती है तो दूसरे को सुनाने के बिना रह नहीं सकते हैं। इसी संगमयुग की प्राप्ति गोल्डन वर्ल्ड में भी होगी। अभी के पुरुषार्थ की प्रालब्ध भविष्य गोल्डन वर्ल्ड है। तो संगमयुग अच्छा लगता है या सतयुग अच्छा लगता है? क्या अच्छा लगता है? संगम अच्छा है ना? सिर्फ बीच-बीच में माया आती है। थोड़ा-थोड़ा कभी-कभी मूँझ जाते हैं। कई बच्चे सहज योग को मुश्किल योग बना देते हैं, है नहीं लेकिन बना देते हैं। वास्तव में है बहुत सहज, मुश्किल लगता है? जिसको मुश्किल लगता है वह हाथ उठाओ। सदा नहीं, कभी कभी मुश्किल है? या सहज है? जो मुश्किल योगी हैं वह हाथ उठाओ। मुश्किल वाले हाथ उठाओ। मातायें मुश्किल योगी हो या सहज होगी? कोई मुश्किल योगी है? हाथ नहीं उठायेंगे, सारी सभा में कैसे उठायेंगे!

सभी बच्चे फलक से कहते हैं मेरा बाबा। कहते हैं, मेरा बाबा? मेरा बाबा है कि दादियों का बाबा है? मेरा बाबा है ना! हर एक कहेगा पहले मेरा। ऐसे है? यह सिन्धी लोग सभी बैठे हैं ना! मेरा बाबा है या दादी जानकी का है? दादी प्रकाशमणि का है? किसका है? मेरा है? मेरा है? सारा दिन क्या याद रहता है? मेरा ना! बाप कहते हैं बहुत सहज युक्ति है जितने बार मेरा-

मेरा कहते हैं, सारे दिन में कितने बार मेरा शब्द कहते हो? अगर गिनती करो तो बहुत बार मेरा शब्द बोलते हो। जब मेरा शब्द बोलते हो तो बस मेरा कौन? मेरा बाबा। मुश्किल है? कभी-कभी भूल तो जाते हो? बापदादा कोई नया शब्द नहीं देता है, जो सदैव कार्य में लाते हो मैं और मेरा, तो मैं कौन और मेरा कौन! कई बच्चे मुश्किल पुरुषार्थ क्यों करते? सिर्फ सोचते हैं बिन्दू सामने आ जाए, बिन्दु-बिन्दु-बिन्दु.... और बिन्दु खिसक जाती है। बिन्दु तो है लेकिन कौन-सी बिन्दु? मैं कौन हूँ, यह अपने स्वमान स्मृति में लाओ तो रमणीक पुरुषार्थ हो जायेगा सिर्फ ज्योति बिन्दु कहते हो ना तो मुश्किल हो जाता है। सहज पुरुषार्थ, मौज का पुरुषार्थ करो।

इस नये वर्ष में पुरुषार्थ भी श्रेष्ठ हो लेकिन श्रेष्ठ के साथ पहले सहज हो। सहज भी हो और श्रेष्ठ भी हो यह हो सकता है? दोनों साथ हो सकता है? डबल फारेनर्स बोलो, हो सकता है? तो बापदादा देखेंगे। बापदादा तो चेक करते रहते हैं ना! तो मुश्किल योगी कौन-कौन बनता है! सहज योगी का यह मतलब नहीं है कि अलबेलेपन का पुरुषार्थ हो। श्रेष्ठ भी हो और सहज भी हो। तो पाण्डव सहज योगी हैं? सहजयोगी जो हैं वह हाथ उठाओ। देखना टी.वी. में आ रहा है। मुबारक हो। तो यह वर्ष कोई के आगे कोई मुश्किलात नहीं आयेगी क्योंकि सहज योगी हो। अलबेले नहीं बनना।

समय प्रमाण इस नये वर्ष में सभी को विशेष यह लक्ष्य रखना है कि जो भी खज़ाने प्राप्त हैं - समय है, संकल्प हैं, गुण हैं, ज्ञान है, शक्तियां हैं... सबसे बड़ा खज़ाना संकल्प है - श्रेष्ठ संकल्प, शुद्ध संकल्प। इन सभी खज़ानों को हर रोज़ सफल करना है। खूब बांटो। दाता के बच्चे मास्टर दाता बनो। खूब बांटों। क्यों? सफल करना अर्थात् सफलता को प्राप्त करना। तो यही इस वर्ष की विशेषता सदा कायम रखना। सफल करना है और सफलता है ही है। सभी कहते भी हो ना कि सफलता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। है अधिकार? तो सफल करो और सफलता प्राप्त करो। कोई भी कार्य करो, कोई न कोई खज़ाना सफल करते जाओ और सफलता का अनुभव करते

चलो। सोचो - सफलता का अधिकार आप ब्राह्मण आत्माओं के सिवाए और किसका अधिकार हो सकता है! क्यों? क्योंकि बाप ने आपको सफलता भव का वरदान दिया है। बापदादा सदा कहते हैं कि एक-एक ब्राह्मण आत्मा सफलता का सितारा है। सफलता स्वरूप है। सफलता कि सितारे हो ना या मेहनत के सितारे हो? बापदादा सभी बच्चों को सफलता का सितारा इसी स्वरूप में देखते हैं। याद है ब्रह्मा बाप ने आदि में कितने समय में सब सफल किया? अन्त तक अपना समय सफल किया, चाहे कर्मातीत भी बन गये फिर भी कितने पत्र लिखे! समय सफल किया ना! लास्ट दिन भी मुख से महावाक्य उच्चारण किये। लास्ट दिन तक सब सफल किया इसीलिए सफलता को प्राप्त हो गये। तो फ़ालो फ़ादर। वास्तव में संगमयुग का एक-एक संकल्प, एक-एक सेकण्ड सफल करना ही सफलता मूर्त बनना है। सभी निश्चय से कहते हैं ना कि ब्रह्मा बाप से तो हमारा बहुत प्यार है। तो प्यार की निशानी है जो बाप को प्रिय था वह बच्चों को प्रिय हो। समय, संकल्प और सर्व खज़ाने सफल हो। व्यर्थ नहीं हो। प्यार की निशानी फ़ालो फ़ादर। ब्रह्मा बाप ने विशेषता क्या दिखाई? जो सोचा वह सेकण्ड में किया। सिर्फ़ सोचा नहीं, सिर्फ़ प्लैन नहीं बनाया, प्रैक्टिकल में करके दिखाया। तो ऐसे है? फ़ालो करने वाले हैं ना? अच्छा है।

आज बहुत ही आ गये हैं न्यु ईयर मनाने के लिए। अच्छा है। अगर हाल छोटा पड़ गया तो दिल तो बड़ी है। देखो दिल बड़ी है तो समा गये है ना? (आज सभा में 18-19 हज़ार भाई बहनें बैठे हैं) सभी बाहर बैठे हुए भी सुन रहे हैं ना? बाहर बैठने वाले सुन रहे हैं, वह तो दिखाई नहीं देंगे। बापदादा ने सुना कि फारेन में सबसे ज्यादा आस्ट्रेलिया वाले 12 बजे बैठते हैं। रात के 12 बजे बैठते हैं और 4 बजे अमृतवेला करके उठते हैं। तो बापदादा ने भी आज आस्ट्रेलिया को याद किया। सुन रहे हैं। यहाँ आस्ट्रेलिया वाले हैं हाथ उठाओ। त्रिमूर्ति मुबारक पहले आस्ट्रेलिया को फिर सभी को।

इस वर्ष का लक्ष्य तो बताया - सफल करो, सफलता है ही। यह सभी

ने पक्का किया? सफल करना है। व्यर्थ नहीं। संगमयुग समर्थ युग है, सफलता का युग है, व्यर्थ का नहीं है। व्यर्थ के 63 जन्म समाप्त हुए। अब यह छोटा सा युग सफल करने का युग है। अगर समय सफल करेंगे तो भविष्य में भी आधाकल्प का पूरा समय राज्य अधिकारी बनेंगे। अगर कभी-कभी सफल करेंगे तो राज्य अधिकारी भी कभी-कभी बनेंगे। समय सफल की प्रालम्ब यह है। श्वास सफल कर रहे हो तो 21 जन्म ही स्वस्थ रहेंगे। चलते-चलते हार्टफेल नहीं होगी। किसकी हार्ट रूक जाती, किसकी नलियां बन्द हो जाती, वह नहीं होगी।

ज्ञान के खज़ाने को भी सफल करो तो ज्ञान का अर्थ है समझ, वहाँ इतने समझदार बन जायेंगे जो कोई मन्त्रियों की ज़रूरत नहीं है। आजकल तो देखो शपथ लेते ही पहले मन्त्रीमण्डल बनाते हैं। वहाँ साथी होंगे लेकिन मन्त्री नहीं होंगे। रायल फैमिली हर एक दरबार में बैठने वाले ताजधारी होंगे। रायल फैमिली कम नहीं होगी, चाहे तख्त पर नहीं भी बैठे लेकिन मर्तबा एक ही जैसा होगा। इसलिए यह नहीं सोचो कि तख्तनशीन बहुत थोड़े बनेंगे लेकिन आप लोग भी राज दरबार में राज्य अधिकारी के रूप में होंगे। आपके सिर पर भी ताज होगा और आपका पूरा अधिकार होगा। तो क्या बनेंगे? नम्बरवन या नम्बरवार? क्या बनेंगे? नम्बरवार बनेंगे या नम्बरवन बनेंगे? क्या बनेंगे? नम्बरवन या नम्बरवार? तो क्या करना पड़ेगा, पता है? हिम्मत दिखाई, यह बहुत अच्छा है। लेकिन वन नम्बर बनने के लिए पहले विन करना पड़ेगा। कर रहे हैं ना! करेंगे नहीं कहना, कर रहे हैं। दूसरे भी सुन रहे हैं। आज सुना कि पुराने सिन्ध के ब्रह्मा के साथी बहुत आये हैं। हाथ उठाओ। हिन्दी नहीं सिन्धी। बच्चे उठो, परिवार के परिवार आये हैं। अच्छा। कोई कमाल दिखायेंगे ना! क्या दिखायेंगे? (मैसेज देंगे) वह तो कर ही रहे हो। अच्छा 38 आये हैं, तो क्या कमाल करेंगे? चलो ज्यादा नहीं कहते हैं, छोटी-सी बात कहते हैं, करने के लिए तैयार हो? बच्चे भी कमाल करेंगे ना? (38 लाख बनायेंगे) पद्मगुणा मुबारक हो। आपने तो बड़ी बात

बता दी लेकिन बापदादा छोटी बात कहते हैं वह एक एक, एक को लाओ। लाना है? एक, एक को लाओ। बच्चे हैं तो बच्चों को लाओ। मातायें हैं तो भाई को लायें या बहन को लायें, लेकिन एक-एक को एक लाना है। यह गुप देख लो, आप इसको गाइड करना, अगले साल लेकर ही आना, डबल गुप लेकर आना। बापदादा यही चाहते हैं कि जहाँ से आदि हुई, वहाँ ही प्रत्यक्षता होनी है। रहम आता है ना! ब्रह्मा बाप के देश के वासी हो तो देश वासियों से प्यार होता है।

आपके पास खज़ाने बहुत हैं, गुणों का खज़ाना कितना बड़ा है, शक्तियों का खज़ाना कितना बड़ा है। तो गुण दान, शक्तियों का दान करने वाले मास्टर दाता बनो। जो भी आये चाहे सम्बन्ध में आये, चाहे सम्पर्क में आये लेकिन उनको कोई न कोई गुण या शक्ति की गिफ्ट दे देना। कोई खाली हाथ नहीं जाये। और कुछ नहीं तो बाप के सन्देश के मीठे बोल, वह मीठे बोल भी गिफ्ट देना। दुनिया वाले तो कोई भी उत्सव होता है ना तो एक दो को मुख मीठा कराते हैं। लेकिन बापदादा कहते हैं मुख मीठा तो कराना ही है लेकिन अपना मीठा मुखड़ा भी दिखाना है। सिर्फ मुख मीठा नहीं, मुखड़ा भी मीठा। इतनी मधुरता जमा है ना! जो बांटो तो भी भरपूर रहो और इस खज़ाने को तो जितना बांटेंगे उतना बढ़ेगा, कम नहीं होगा। तो इस वर्ष नोट करना, जो भी आत्मा आई उसको कुछ दिया? अगर सुनने वाला नहीं है तो मीठी शक्तिशाली दृष्टि देना। लेकिन देना ज़रूर। खाली नहीं जाये। यह तो सहज है ना! कि मुश्किल है? यूथ गुप सहज है? हाथ तो बहुत अच्छा हिला रहे हैं। यूथ गुप भी अच्छा आया है।

**डबल विदेशी यूथ रिट्रीट गुप** – सबसे श्रेष्ठ शक्ति यूथ के लिए है - परिवर्तन शक्ति। सोचा और किया। यूथ ने वायदे बहुत किये हैं ना! बापदादा ने समाचार सुना है। सभी यूथ कौन बन गये? (सभी यूथ हाथ हिला रहे हैं) सब तिलकधारी बनकर आये हैं, जिन्होंने विशेष रिप्रेशमेंट की है वह तिलकधारी खड़े रहो। (तिलक लगाकर बैठे हैं) अच्छी निशानी लगाई है।



आत्मा चमक गई है ना ? जो समझते हैं कि हमारी इस ट्रेनिंग से गोल्डन हार्ट बन गई, वह हाथ उठाओ। गोल्डन हार्ट बन गई। यह तो सबसे आगे चले गये। गोल्डन स्टार नहीं, गोल्डन हार्ट। फिर तो सफलता मूर्त हो गये। अभी गोल्डन हार्ट प्लेन में थोड़ा नीचे तो नहीं आ जायेगी, अच्छा अपने देश में जाके थोड़ा गोल्डन सिल्वर बनेंगी ? नहीं बनेगी ? अच्छा है। ऐसे तैयार हो जाओ जो भारत की आत्माओं को जगाओ। है हिम्मत ? भारत को जगायेंगे ? बहुत टेढ़े-बांके क्वेश्चन करेंगे भारत वाले। उत्तर देंगे ? आप सबका फोटो टी.वी. में आ रहा है। तो आप सबको निमन्त्रण आयेगा भारत को जगाने के लिए। तो एवररेडी रहना। अगर टिकेट नहीं होगी तो मिल जायेगी। बापदादा को पता है कि डबल फारेनर्स की विशेषता है, एक साल होकर जाते हैं, दूसरे साल की तैयारी सारे वर्ष में करते जाते हैं। अच्छा है। कितने देशों के यूथ हैं ? (21 देशों के) बापदादा जानते हैं कि यह गोल्डन हार्ट कमाल करेंगे। अटेन्शन अच्छा रखा है। स्व-पुरुषार्थ का अटेन्शन ज्यादा इस बारी अन्डरलाइन किया है। बापदादा खुश है। अच्छा है गुप-गुप बनने से अटेन्शन जाता है। सारे संगठन के बजाए गुप अच्छा होता है लेकिन पॉजिटिव हो। अच्छा- (बापदादा गुप-गुप उठा रहे हैं) (अन्तर्मुखी गुप) अच्छा पुरुषार्थ किया है। बापदादा देखते हैं कि हर गुप यही चाहता है कि हम आगे से आगे जायें। रीस नहीं करते, रेस करते हैं। अच्छा है, अन्तर्मुखी सदा सुखी। (शक्ति गुप) - बापदादा शक्ति गुप से पूछते हैं कि प्रत्यक्षता का झण्डा कब लहरायेंगे ? बोलो, शक्तियां तो झण्डा लहराने वाली हैं ना ! तो प्रत्यक्षता का झण्डा शक्तियां लहरायेंगी ना ! अच्छा है। अभी आपस में रूहरूहान कर डेट को फिक्स करना। जैसे और डेट फिक्स करते हो वैसे यह भी डेट फिक्स करना कि प्रत्यक्षता का झण्डा कब लहरेगा ? लहरायेंगे ना ! (महावीर गुप) महावीर गुप क्या करेगा ? साल के साथ-साथ सदा के लिए माया को भी विदाई देना। हो सकता है ? माया को विदाई देंगे ? कि आवे कोई हर्जा नहीं ? महावीर का अर्थ ही है जैसे ब्रह्मा बाप ने जो कहा वह किया है, जो सोचा वह

तुरत दान महापुण्य समान किया। ऐसे ही महावीर गुप का यह लक्ष्य है ना! करेंगे? अच्छा है। हिम्मत तो आती है। (विदेश के छोटे बच्चों का गुप) सभी ने अपनी निशानी लगाई है। (यूथ ने तिलक लगाया है, इन्होंने बैनर बनाया है, झण्डी हाथ में है।) एंजिल से देवता बन गये, कितना अच्छा है। तो देवता माना दिव्य गुण वाले। तो दिव्य गुण को कभी नहीं छोड़ना। अच्छा है। बच्चों का उमंग-उत्साह बढ़ता है। इण्डिया के बच्चे भी उठो - (भारत से 1000 बच्चे आये हैं) अच्छा है भारत और विदेश के सब देशों के मिलकरके दिल्ली को घेराव करो। दिल्ली को अपनी राजधानी बनाना है ना? तो पहले राजधानी तैयार करेंगे, तब तो राज्य करेंगे ना! ऐसा दिल्ली के चारों ओर घेराव करो जो सारे भारत के वी.आई.पी. जग जावें। भारत के बच्चे भी करेंगे ना! अच्छे हैं, भारत भी कम नहीं है। बच्चे अच्छे-अच्छे आये हैं। अच्छा।

अभी इस वर्ष नवीता क्या करेंगे? अभी बापदादा ने जो काम दिया है, वह किया नहीं है। माइक और वारिस का गुप कहाँ लाया है। बापदादा यही कहते हैं वेट एण्ड सी। प्रत्यक्षता का झण्डा यह माइक लहराने में होशियार होते हैं। हैं अलग-अलग देशों में कोई-कोई माइक हैं लेकिन संगठित रूप में सामने नहीं आये हैं, अभी उन्हीं को इक्ठ्ठा करो। इक्ठ्ठा करने से क्या होता है? एक दो को देखकरके उन्हीं को उमंग आता है, उत्साह आता है। भारत में भी माइक चाहिए, तो विदेश में भी चाहिए। तैयार हो रहे हैं ना? लेकिन अभी छिपे हुए हैं, पर्दे के अन्दर हैं, अभी बाहर लाओ। बाहर लाना है ना! बहुत अच्छा।

माताओं का झुण्ड तो बहुत बड़ा है। अगर उठायेंगे तो सारा हाल छिप जायेगा। माताओं को देखकर बापदादा खुश होते हैं। क्यों खुश होते हैं? क्योंकि संगम में माताओं को ही बापदादा के द्वारा चांस मिलता है। द्वापर, कलियुग में नहीं मिला, अभी मिल रहा है। चाहे महात्माओं में भी अभी दिन प्रतिदिन ज्यादा चांस मिल रहा है। गवर्मेन्ट में भी अभी माताओं को सेवा

करने का चांस मिल रहा है। बापदादा सदा कहते हैं कि यह मातायें जिस भी सेन्टर पर होंगी ना वह सेन्टर सदा फलीभूत होगा। चाहे कमायें नहीं लेकिन दिल बड़ी होती है, भावना बड़ी होती है। तो बाप भी भावना और सच्ची दिल को पसन्द करते हैं। हर ग्रुप में देखा है मातायें ज्यादा ही होती हैं। तो मातायें अभी हमजिन्स को और जगाओ। आप लाओ हाल आपेही बड़ा हो जायेगा। यह नहीं सोचो हाल अभी भर गया, कहाँ बैठेंगे, लाओ तो सब कुछ हो जायेगा। हो जायेगा ना? दादी यह तो नहीं सोचती कि क्या करेंगे? कम से कम ९ लाख बैठ सकें, इतनी प्रजा तो तैयार करेंगे या नहीं? कब करेंगे? कब करेंगे, वह डेट फिक्स करेंगे। 9 लाख लायेंगे पहले, पाण्डव लायेंगे। बापदादा हाल तैयार कर लेंगे लेकिन 9 लाख लाओ। (एक एक लाख हर वर्ष लायेंगे) ऐसा नहीं। वह तो आवें, उसकी तो मना है ही नहीं। लेकिन आखिर स्टेज पर 9 लाख तो लायेंगे या नहीं? नहीं तो राज्य किस पर करेंगे? आपके पहले जन्म में 9 लाख भी प्रजा या रॉयल फैमिली नहीं होगी तो किस पर राज्य करेंगे?

मधुबन वाले क्या सोचते हैं? 9 लाख चाहिए या नहीं? ९ लाख चाहिए, मुख्य पाण्डव क्या कहते हैं? चाहिए, नहीं चाहिए? हो जायेगा। जब 9 लाख आयेंगे तो साधन स्वतः जुट जायेगा। घबराओ नहीं, हाल बनाना पड़ेगा। देखो, भविष्य बहुत-बहुत उज्ज्वल है। सब साधन मिल जायेंगे। बने बनाये हाल आपको मिलेंगे। बनाने नहीं पड़ेंगे। सिर्फ जो इस वर्ष का स्लोगन दिया है ना - सफल करो, सफलता है ही। अच्छा। पाण्डव हाथ हिलाओ।

**टीचर्स** - टीचर्स अभी स्वयं भी सफल करो और सफल कराओ। सेवा में वृद्धि होना अर्थात् खज़ानों को सफल किया और कराया। तो इस वर्ष इस स्लोगन को प्रैक्टिकल में लाना तो स्वतः ही वृद्धि होती जायेगी। हिम्मत दिलाओ। बापदादा ने देखा है, कोई-कोई स्थान में हिम्मत कम दिलाने की शक्ति है। हिम्मत दिलाओ, हर कार्य में मन्सा में भी, वाचा में भी, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी, कर्म में भी हिम्मत दिलाओ। टीचर्स की सीट ही है -

हिम्मत में रहना और हिम्मत दिलाना। क्यों? क्योंकि टीचर्स को जो बाप की मुरली सुनाने का चांस मिला है और तख्त मिला है, यह एकस्ट्रा मदद है। तो हिम्मत और उल्लास दिलाओ। सारा क्लास रूहानी खिला हुआ गुलाब दिखाई दे। सुना टीचर्स ने। उल्लास में लाओ क्लास को।

**सेवा का टर्न इन्दौर ज़ोन का है** - अच्छा इन्दौर का ग्रुप उठो। अच्छा है - सेवा के लिए डायमण्ड चांस मिला है। एक कर्मणा और दूसरा स्व-उन्नति का भी डायमण्ड चांस। अच्छा - सभी ने हिम्मत अच्छी रखी है। सेवा का उमंग भी अच्छा रहा है। सबसे बड़े ग्रुप को सम्भाला है। तो हिम्मत के रिटर्न में बापदादा का पदम-पद्मगुणा मुबारक है। सदा ही डायमण्ड बन सेवा में डायमण्ड चांस लेते रहना। अच्छा है। बहुत अच्छा।

**ज्युरिस्ट विंग के भाई बहनों की मीटिंग हो रही है** - इन्टरनेशनल है ना। अगर इतने वकील या जज हो गये, फिर तो गीता का भगवान सिद्ध हो जायेगा। अच्छा है। बहुत अच्छा। ऐसा प्लैन बनाओ जो कोई ने नहीं किया हो, वर्ग तो बहुत बने हुए है ना! तो आपका वर्ग सबसे नम्बरवन ले लेवे। अच्छा है। ग्रुप अच्छा है। लेकिन ऐसे प्लैन बनाओ जो सांप मरे और लाठी भी नहीं टूटे। प्रत्यक्षता हो, धमाल नहीं हो, कमाल हो। अच्छा है और भी संगठन इक्ठ्ठा करो। (प्लान बनाया है) मुबारक हो। अच्छा।

**कल्चरल ग्रुप** - नाचना गाना तो सभी को आता है, बाप के गुणों का गीत गाना भी आता है और खुशी में नाचना भी आता है। अच्छा है। कल्चर द्वारा भारत का कैरेक्टर प्रसिद्ध करो। हो कल्चर लेकिन कैरेक्टर सिद्ध हो जाए कि श्रेष्ठ कैरेक्टर क्या है! अच्छा है वर्ग जबसे बने हैं, अलग-अलग सेवा तो कर रहे हैं। कमाल करके दिखाना। सब कमाल करने वाले हैं ना? कमाल करना है ना! हर वर्ग को अभी नया-नया प्लैन बनाना चाहिए। यह वर्ग बनके कितना साल हो गये हैं? (20 साल) बापदादा ने सभी वर्ग वालों को कहा था, याद है कि अपने-अपने वर्ग का विशेष सेवा में माइक बने, या वारिस बनें, ऐसा संगठन तैयार करो। तो आपके कल्चरल में कौन तैयार

हुआ है? लाया है? तो बाप का सन्देश देने के लिए आपकी तरफ (बाम्बे के प्रसिद्ध एक्टर परिक्षित सहानी परिवार बापदादा के सामने खड़ा है) सब अंगुली कर रहे हैं। अच्छा है। प्लैन बनायेगा। हिम्मत आपकी, मदद बाप की है ही है।

अच्छा - एक सेकण्ड में मन की ड्रिल याद है? हर एक सारे दिन में कितने बार यह ड्रिल करते हो? यह नोट करो। यह मन की ड्रिल जितना बार करेंगे उतना ही सहज योगी, सरल योगी बनेंगे। एक तरफ मन्सा सेवा दूसरे तरफ मन्सा एक्सरसाइज़। अभी-अभी निराकारी, अभी-अभी फ़रिश्ता। ब्रह्मा बाप आप फ़रिश्तों का आह्वान कर रहे हैं। फ़रिश्ता बनके ब्रह्मा बाप के साथ अपने घर निराकार रूप में चलना। फिर देवता बन जाना। अच्छा -

चारों तरफ से बहुत-बहुत यादप्यार चाहे कार्ड के रूप में, चाहे पत्रों के रूप में बापदादा के पास पहुंच गये हैं। बापदादा जानते हैं कि हर बच्चा यही समझते हैं मेरी याद बाबा को देना, लेकिन मिल गई है। यादप्यार देने वाले बहुत लाडले बच्चे बापदादा के सामने हैं। इसलिए बापदादा कहते हैं कि हर एक बच्चा अपने-अपने नाम से मुबारक और दिल की दुआयें स्वीकार करे।

आप सभी को भी नव जीवन, नव युग और नये वर्ष की बहुत-बहुत पदम-पदम-पदम-पदमगुणा मुबारक और दिल की दुआयें हैं, यादप्यार और नमस्ते।

दादी जी, दादी जानकी जी से - आप दोनों एक मत होकरके सारे परिवार को चलाने के निमित्त बनी हो। यह सभी आपके साथी हैं। सुनाया ना - अगर सफल करते जायेंगे तो मायाजीत बन ही जायेंगे। दादियां कहती हैं कि इस साल में सभी एकमत हो जाएं। जिसको भी देखो एक हैं। जैसे दादियों के लिए कहते हो एक हैं, ऐसे आप दीदियां, दादे सब एकमत। इसका स्लोगन है अभी-अभी बालक बनो, अभी-अभी मालिक बनो। बालक के समय मालिक नहीं बनो, मालिक के समय बालक नहीं बनो। तो दादियों

को यह संकल्प उठा है, वो पूरा कौन करेगा? आप सभी करेंगे ना? अगर विचारों में फर्क हो जाये तो क्या करेंगे? अच्छा। सभी को देख बापदादा खुश हो रहे हैं। एक दिन आयेगा, बहुत जल्दी आयेगा जो सब कहेंगे कि हम सभी स्व-परिवर्तन करने वाले शक्ति पाण्डव सेना हैं। स्व-परिवर्तन। पुराने साल को विदाई देने के साथ-साथ माया को भी विदाई दे दो। वह भी थक गई है। विदाई और बधाई दोनों साथ-साथ।

नया वर्ष 2003 का शुभारम्भ – 31 दिसम्बर 2002, रात्रि 12 बजे के बाद बापदादा ने सभी बच्चों को नये वर्ष की बधाई दी।

चारों ओर के बहुत मीठे, बहुत प्यारे बच्चों को पदम-पदम गुणा न्यु ईयर की मुबारक हो। यह जो घड़ी बीत गई, यह है विदाई और बधाई की घड़ी। एक तरफ विदाई देनी है, जो अपने में सम्पन्न बनने में कमी अनुभव करते हो, उसको विदाई, सदा के लिए विदाई देना और आगे उड़ने के लिए बधाई। बधाई हो, बधाई हो, बधाई हो। अच्छा - ओम् शान्ति।

